चाहे कुछ न कहे, लेकिन मुझे बहुत सारे राज्यों का दौरा करने का मौका मिला है, वहां के लोग गरीब लोग इस बात को जानते हैं। वे यह भी जानते हैं कि कांग्रेस की सरकार ने गांव-गांव में झोंपड़ियों और कुओं का निर्माण कराया। और भी बहुत सारी योजनायें चला रखी हैं। हमारी सरकार ने गाँवों के, किसानों के, हरिजनों के, आदिवासियों के विकास के लिए जो कार्यक्रम चालू कर रखे हैं वे बहुत स्वागत योग्य हैं। मैं इतना ही कहता हुआ इस बिल का समर्थन करता हूं और आपका समय देने के लिए धन्यवाद करता हूं।

15.59 hrs.

MOTION FOR ADJOURNMENT

Failure of Government to ensure that religious places like Golden Temple, Amritsar etc. are not used in a manner to aggravate law and order situation

MR. SPEAKER : I think it is now nearly 4 O'clock. We will take up the adjournment motion.

Shri B.D. Singh.

16 hrs.

SHRI B.D. SINGH (Phulpur) : Sir, I beg to move :

"That the House do now adjourn".

अध्यक्ष महोदय, जो स्थगनप्रस्ताव आपने स्वीकार किया है इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूं। आज पंजाब में जो स्थिति उत्पन्न हो गई है वह हिन्दुस्तान के प्रत्येक व्यक्ति के मस्तिष्क को आंदोलित कर रही है। सरकार जिस तरह से समस्या को हैण्डल कर रही है उससे भी लोगों में क्षोभ व्याप्त है। मंत्री महोदय इस बात को मानते हैं कि नानक निवास में अपराधी रह रहे हैं। ऐसे अपराधी हैं जिनके खिलाफ बहुत सीरियस केसेस हैं। हम उनसे कह रहे हैं कि इन अपराधियों को हमारे हवाले कर दीजिए। यह बात समझ में नहीं आती कि कोई व्यक्ति, जिसके खिलाफ 302 का केस हो, क्या वह अपने आप को खुशी से हवाले कर देगा कि मुझे फांसी दे दीजिए। इस मामले में सरकार फेल हो रही है।

मैं ज्यादा समय नहीं लेना चाहता। माननीय चौधरी चरणसिंह जी अपने और दल के विचार पंजाब की स्थिति के बारे में रखेंगे। मैं सिर्फ इतना ही कहना चाहता हूं कि भिण्डरावाला को आपने ही क्रिएट किया है। वे अकालियों के हाथ में चले गए हैं और अब अकालियों के हाथ में भी वे नहीं हैं। वहां भी स्थिति दूसरी हो गई है। अकालियों की बात भी उग्रवादी मानने को तैयार नहीं है। आपके कहने से भी वे सरेण्डर करने वाले नहीं हैं। इसके लिए आपको कड़ी से कड़ी कार्यवाही करनी पड़ेगी और इन अपराधियों के खिलाफ एक्शन लेना पड़ेगा।

श्री चरण सिंह (बागपत) : जैसा कि मेरे साथी ने कहा कि आज जिस प्रस्ताव पर चर्चा कर रहे हैं, यह एक ऐतिहासिक मसला कहा जा सकता है। इससे जुड़ा हुआ देश के भविष्य का सवाल है। यह कोई मामूली बात नहीं है। इसका प्रभाव कोई मामूली पड़ने वाला नहीं है। देश के भविष्य के लिए यह बहुत बड़ी बात है।

खालिस्तान की मांग या सिक्खिस्तान या सिक्ख स्टेट, कुछ भी कहिए, यह काफी समय से चली आ रही है। हिन्दुओं ने हिन्दुस्तान ले लिया, मुसलमानों ने पाकिस्तान ले लिया और हमारी डिमांड खालिस्तान के लिए है। इन अल्फाजों में नहीं तो दूसरे अल्फाजों में यह आवाज पहले से उठती रही है। सरदार पटेल के सामने मास्टर तारा सिंह जी ने करीब-करीब यही बात कही थी। अल्फाजों में फर्क हो सकता है। सरदार पटेल ने उनको बुलाया और उनसे कहा कि यह मुमकिन नहीं है। यह आपके लिए और देश के किसी नागरिक के लिए मुनासिब नहीं है। उन्होंने जो कहा,

मास्टर तारा सिंह उसको समझ गए। जो कुछ कहते हैं—ही मीन्जहवाट ही सेज़। जो कुछ वे कह रहे हैं उसको वे राजसत्ता के बल पर करने के लिए तैयार रहेंगे। मास्टर साहब जिस एक्स्ट्रीम भाषा में आवाज उठा रहे थे उसको उन्होंने बंद किया और देश शांति से चलने लगा। देश भर में किसी व्यक्ति के जहन में यह बात नहीं रही कि हमारे सिक्ख भाई हम से अलग होने की बात सोच रहे हैं।

उसके बाद बहुत अरसे तक पं० गोविन्द वल्लभ पंत यू० पी० के चीफ मिनिस्टर रहे, वे होम मिनिस्टर थे। 12 जून 1960 को पंजाबी सूबा या पंजाबी स्टेट या जो कुछ भी कहा जाए, वहाँ की डिमान्ड को लेकर हमारे सिक्ख भाइयों ने एक जुलूस निकालना चाहा। वह जुलूस शीशगंज से रकाबगंज गुरुद्वारे तक निकालना चाहते थे। पंडित जी ने कहा कि यह बात गलत होगी क्योंकि यह डिमान्ड भी गलत है, लिहाज़ा वह जुलूस शीशगंज से निकलकर रकाबगंज तक नहीं आया और जो प्रोसेसनिस्ट थे, वे डिसपर्स हो गए। देश में कोई अवांछनीय घटना नहीं हुई और यथा-पूर्ण शाँति से देश चलता रहा। इसके बाद सबसे पहले 10 जून 1968 को दिल्ली में सिख होम-लैंड की आवाज़ उठती है। बाकायदा मेरे पास एक प्रेस रिपोर्ट है और जो बात आज तफ़सील से कही जा रही है, करीब-करीब वही डिमान्ड थी। इस पर गवर्नमेंट ने कुछ किया या नहीं, यह मुझको नहीं मालूम।

लेकिन, बाज़-ता यह आवाज़ उठी। मैं यह अर्ज़ कर देना चाहता हूं कि इससे पहले सन् 1966 में पंजाब और हरियाणा के दो टुकड़े हो गए। रोहतक में प्रैक्टिस करने वाले एक प्रोमीनेंट वकील थे, उन्होंने मुझको एक चिट्ठी में यह लिखा कि हरियाणा एक छोटा सूबा रह जाएगा और पंजाब भी छोटा सूबा होगा। लेकिन, मुगलों के ज़माने से दिल्ली सूबा एक था। मेरठ और आगरा डिवीज़न तथा हरियाणा का इलाका, यह एक ही सूबा था। अंग्रेजों के जमाने से एक सिवि-लियन आफिसर कारबेट ने यह स्कीम रखी थी। सन् 1928 में हिन्दू-मुस्लिम यूनिटी का सवाल उठा। उस समय पं० मोतीलाल नेहरू हमारी काँग्रेस के प्रेजीडेंट थे।

मुस्लिम भाई माइनारिटी में थे लेकिन उनको वेटेज था। हमारे सिख भाईयों ने कहा कि पंजाब में हमको वेटेज मिलना चाहिए जैसा कि मुस्लिम माइनारिटीज को और सूबों में मिलता है। मुसलमानों का यह जवाब था कि हमारी कुल 52-53 परसेंट आबादी है इसलिए हमें पंजाब में वेटेज मिलना चाहिए। आरग्युमेंट दोनों के ठीक थे। इस मसले को हल करने के लिए ब्रिटिश सिविलियन ने एक स्कीम रखी थी जिसमें राउन्ड टेबल कांफ्रेंस पर विचार हुआ। जहाँ तक मुझे याद है, महात्मा गांधी और जिन्ना साहब ने उसको माना। लेकिन, डा० गोकल चंद नारँग जो हिन्दू महासभा के लीडर थे, उन्होंने स्वीकार नहीं किया। स्कीम यह थी कि हिन्दी स्पीकिंग एरिया पंजाब में घग्गर नदी तक है। वह कभी पंजाब का अंग नहीं था लेकिन सन् 57 में शामिल कर दिया गया। वह एरिया, मेरठ और आगरा डिवीजन का एरिया, दिल्ली सूबे का एरिया एक साथ 1803 में लार्ड लेक की विक्टरी के बाद अंग्रेजों के हाथ में आया। हरियाणा, पंजाब में जोड़ दिया और मेरठ तथा आगरा डिवीजन लखनऊ में शामिल कर दिया गया। एक साहब ने मुझे चिट्ठी लिखी, उनका नाम मेरे पास मौजूद है। उन्होंने कहा कि, आप यू० पी० से आवाज उठाइए। यू० पी० से आवाज पहले उठ चुकी थी। मैंने उस आवाज में पहले कभी हिस्सा नहीं लिया था कि यू० पी० का री आरगेना-इजेशन होना चाहिए। मैंने उसमें एक्टिव हिस्सा नहीं लिया क्योंकि पंडित जी इस चीज को नहीं चाहते थे। जब जनता पार्टी बनी तो मेरी राय थी कि बिहार, मध्य प्रदेश और यू० पी० का री-आरगेनाइजेशन होना चाहिए।

हमारे उस वक्त के जो प्रधान मंत्री थे वह उसके लिये शुरू में राजी नहीं हुए, बाद में राजी

हो गये। तो मैं अर्ज कर रहा हूं कि मुझ से कहा गया कि उधर से यह आवाज उठायें कि मेरठ, आगरा डिवीजन हरियाणा के साथ मिला कर दिल्ली सूबा हो जाए। तो जो मैंने चिट्ठी लिखी उस वक्त वह सुनाता हूं। मेरी राय यह थी कि पंजाब का डिवीजन होना गलती हुई, नहीं होना चाहिये था क्योंकि इसके नतीजे आगे को गलत निकलने वाले हैं। मैंने उनको लिखा, यह चिट्ठी है नवम्बर 24, 1965 की।

He was a leading advocate in Agra.

"My dear Choudhuri Sahib, received your letter of 18th November. So many thanks. Frankly-speaking I do not think formation of a Punjabi-speaking State will be in the ultimate interest of the country. Its implications will be far-reaching."

और अब उसके इमप्लीकेशन्स हमारे सब के सामने हैं। 1966 में तकसीम हुआ और दो साल बाद आवाज खालिस्तान की उठनी शुरू हो गई, यह मैं बता रहा हूं। मेरे पास बाकायदा रिजील्यूशन की कापी मौजूद है 1968 की। 1976 में आनन्दपुर साहब में उस रिजील्यूशन को फिर दोहराया गया और साफ बात कही गई, जो उसका शुरू में अर्थ लगाया गया, हमारा मतलब यह नहीं था कि सिख स्टेट अलग बने, सिख कन्ट्री या खालिस्तान बने। लेकिन जो अल्फाज उसमें इस्तेमाल किये हैं उससे अगर यह नतीजा निकाला जाय कि सिख कम्युनिटी एक सिख नेशन होगी और एक अलाहिदा कन्ट्री या हिस्सा चाहते हैं, मुल्क से अलाहिदा होना चाहते हैं तो हम बजानिब होंगे। क्योंकि रिजील्यूशन के अल्फाज यह हैं :

"BASIC POSTULATES OF THE HIROMANI AKALI DAL.

(a) Postulates :

The Shiromani Akali Dal is the very embodiment of the hopes and aspirations of the Sikh nation and as such is fully entitled to its representation."

सिख कम्युनिटी नहीं, सिख नेशना फिर अगले पृष्ठ 20 पर वह कहते हैं : "Political Goal :

The political goal of the Panth without doubt is enshrined in the Commandments of the 10th lord in the pages of the Sikh history and in the very heart of the Khalsa Pant, the ultimate objective of which is the preeminence of the Khalsa."

अब प्रीएमीनेंस आफ दी खालसा का मतलब है, आज भाषा में यही हुआ कि, और लोगों से ज्यादा राइट्स खालसा पंथ के मेम्बरान को होंगे। प्रीएमीनेंस खालसा पंथ की होगी, और लोगों की नहीं होगी। 1973 में यह रिजोल्यूशन पास हुआ। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी दरअसल कायम हुई रिलीजस मामलों को तय करने के लिए। ननकाना साहब में जो उस वक्त मैनेजर थे वह मिसमैनेजमेंट कर रहे थे, जिसके लिए सत्याग्रह हुआ, केवल रिलीजस और कल्चरल मामले में जहाँ तक मेरा अंदाज है उनका उद्देश्य सीमित था। धीरे-धीरे उसने पौलिटिकल रूप धारण किया, और हमारी गलती की वजह से, हमारी लीडरशिप की गलती की वजह से आज हम पहुंच गए हैं जहां कि अब सब पर यह बात जाहिर है।

इन्दिरा जी ने मुझको बुलाया अक्तूबर के आखिरी हफ्ते में पंजाब के सिलसिले में बात करने के लिए।

मेरी उनकी कोई 40,45 मिनट तक बातचीत हुई। मैंने बहुत साफगोई से उनसे बातें कीं। मैंने इन्दिरा जी से कहा कि मैं चाहता था कि वह यहां होतीं, लेकिन वह यहां नहीं है। मैंने कहा कि जो कुछ हुआ है, यह आपकी गलती के कारण हुआ है। कौमुनल, कास्ट, लिंग्विस्टिक डिफरेन्सेज, यह सब कांग्रेस लीडरशिप, जो कि थ्रू-आउट रूलिंग पार्टी रही है, उनकी गलत नीतियों के कारण हैं। उन्होंने एक पैटर्न सैट कर

दिया जिसका नतीजा यह हुआ कि सारी पोलिटिकल पार्टीज़ ने भी वही नीति अपनानी शुरू कर दी जो आपने अपनायी। सबको वोट की फिक्र थी। वोट मिल जायें किसी सूरत में और किसी शर्त पर और हम पावर में आ जायें। पूरी पावर में न आ पायें तो कुछ में आ जायें। लेकिन जिस ढंग से वोट मांगे जाएं, जिस तरीके से लोगों से अपील की जाये चाहे उसके नतीजों के तौर पर देश का डिस-इन्टैग्रेशन क्यों न हो जाये, मसलन रिलीजन की बात, कौमुनलिज़्म की बात।

पंडित जी कहा करते थे और हम सब लोग कहा करते थे कि कौमुनलिज़्म, कास्टिज़्म और लिंग्विस्टिकिज़्म, ये तीन बड़े सोर्स आफ डिस-इन्टैग्रेशन काज़ेज आफ डिस-इन्टैग्रेशन हो सकते हैं लेकिन हमने क्या किया कौमुनलिज़्म के बारे में?

मैंने इन्दिरा जी से यह कहा कि होना यह चाहिए था कि मदरलैंड की जब तकसीम हो गई, जिसके लिए न मालूम कितने लोगों ने तकलीफ उठाई, जो हम स्वप्न देखते थे, जो हमारी पुरानी कल्चरल हैरिटेज थी, जिसके कारण हम प्राउड थे, उस देश के दो टुकड़े हो गये तो 16 अगस्त को पंडित नेहरू को यह आडिनेन्स करना चाहिये था कि हर रिलीजन के मेम्बर को अपने रिलीजन के प्रचार के लिए, अपनी कल्चर को बढ़ाने के लिए एजूकेशनल इंस्टीट्यूशन खोलने के लिए फ्रीडम होगी, आर्गिनाइजेशन बनाने का अख्त्यार होगा लेकिन कोई आर्गिनाइजेशन एक सम्प्रदाय या एक धर्मावलम्बी लोगों तक जिसकी मेम्बरशिप सीमित होगी, लिमिटेड होगी—

It will not be allowed to function in the political sphere.

सबके लिए कर देते। मुस्लिम लीग ने तक्सीम कराई। लेकिन मुस्लिम लीग ही नहीं, चाहे अकाली दल हो, हिन्दू महासभा हो या हिन्दुओं का कोई और आर्गिनाइजेशन हो, या ईसाइयों का हो, एक ही मज़हब के मानने वाले लोगों तक जिनकी मेम्बरशिप महदूद होगी, सब को फ्रीडम होगी। एक्सैप्ट कि वह पोलिटिकल स्फीयर में काम न करती हों। करना चाहिये था, लेकिन नहीं हुआ।

देश आज़ाद हुआ और 5 महीने के बाद एक हिन्दू फेनेटिक ने महात्मा गांधी की हत्या कर दी। उसके दो महीने के बाद 3 मई, 1948 को कंस्टिट्यूएंट असेम्बली एक रैज्यूलूशन पास करती है अपनी लैजिस्लेटिव कैपेसिटी में। उसकी दोनों कैपेसिटी थीं—संविधान बनाने की भी और जो पार्लियामेंट के अधिकार थे लैजिस्लेचर के वह भी। वह रैज्यूलूशन पास करते हैं। उसी पर अगर अमल कर लिया जाता तो आज देश की दुर्गति न होती।

वह रैज्यूलूशन इस प्रकार है जो 3 मई को पास किया गया—

"Whereas it is essential for the proper functioning of democracy and the growth of national unity and solidarity that communalism should be eliminated from Indian life, this Assembly is of the opinion that no communal organization which by its constitution or by exercise of its discretion vested in any of its officers or organs attempts to, or excludes from membership persons on grounds of religion, race and caste or any of them, should be permitted to engage in any activities other than those essential for the *bona fide* religious, cultural, social and educational needs of the community, and that all steps, legislative and administrative, necessary to prevent such activities should be taken."

कांस्टीट्एन्ट असेम्बली ने यह रेज़ोल्यूशन पास किया था। मैंने इन्दिरा जी से कहा कि बहनजी अगर खुद पंडित जी ने यह काम नहीं किया तो आपको ही करना चाहिए। मुझे डेट तो याद नहीं है, मैंने अखबारों में पढ़ा था, इसी हाउस में जब यह पूछा गया कि मुस्लिम लीग साउथ में काम कर रही है उसको क्यों फंग्शन करने दिया

जाता है तो पंडित जी ने यह जबाव दिया था कि वह कम्युनल नहीं है, दूसरी मुस्लिम लीग है। खैर, मैंने इन्दिरा जी से कहा कि आप 1959 में कांग्रेस प्रेसीडेन्ट बनीं और 1960 में पं० नेहरू प्राइम मिनिस्टर थे। आप दोनों की रज़ामन्दी से यह हुआ होगा—यह नहीं हो सकता कि आपने विरोध किया हो और वे चाहते हों या आप चाहती हों और उन्होंने विरोध किया हो फिर भी यह हो गया हो। आप मुस्लिम लीग से मिलकर केरल में कोयलीशन गवर्नमेंट बना लेते हैं।

1959 में रबात में मुस्लिम नेशन्स और मुस्लिम मेजारिटी नेशन्स की कांफ्रेन्स हुई। गवर्नमेंट आफ इंडिया ने श्री फखरुद्दीन अली अहमद को, जोकि उस वक्त इण्डस्ट्रियल डेवलपमेंट के मिनिस्टर थे, अपना रेप्रेजेन्टेटिव बनाकर वहाँ पर भेजा। जो उनकी प्रिपरेटरी कमेटी थी उसने कहा कि आप एंटाइटिल्ड नहीं हैं क्योंकि इंडिया न तो मुस्लिम नेशन है और न ही मुस्लिम मेजारिटी नेशन है। टर्की ने कहा था कि हम मुस्लिम नेशन जरूर हैं लेकिन हम सेक्युलर नेशन हैं। उन्होंने अपना रिप्रेजेन्टेटिव नहीं भेजा। इंडोनेशिया ने भी अपना रेप्रेजेन्टेटिव नहीं भेजा और यह कहा कि हम सेक्युलेरिज्म में विश्वास करते हैं इसलिए वहां पर जाना ठीक नहीं समझते हैं। यह तो दो मुस्लिम कन्ट्रीज़ का एटीट्यूड था लेकिन हमारी पोलिटिकल लीडरशिप का यह एटीट्यूड था कि हमारा रिप्रेजेन्टेटिव वहां पर ज़ाकर बैठे। जब पाकिस्तान ने एतराज़ किया तो उनको मीटिंग छोड़नी पड़ी और हिन्दुस्तान की नाक एक तरह से सारी दुनिया के सामने कट गई। इसके बारे में उस वक्त बहुत सारे नेशनलिस्ट मुसलमानों ने भी एतराज़ किया था। मेरे पास उनके नाम मौजूद हैं। चावला साहब ने तो बहुत सख्त स्टेटमेंट दिया था कि वहां पर हमारा नुमाइन्दा क्यों भेजा गया। लेकिन इन्दिरा जी की मर्जी से वे वहां पर गए। इरादा इसके पाछे यह था कि मुस्लिम वोट्स को हासिल किया जाए। मौजूदा प्राइम मिनिस्टर ने ऐसा किया। हमारी तरफ से तो ऐसे कदम उठने चाहिए जिससे लोग भूल जायें कि कौन हिन्दू है और कौन मुसलमान है।

1970 में केरल में कांग्रेस (आई) की लीडरशिप मुस्लिम लीग के साथ इलैक्शन लड़ने का फैसला करती है। प्रेस कान्फरेंस होती है, उस में लोग ऐतराज़ करते हैं कि आपकी पार्टी तो सैकुलर पार्टी है, आपने मुस्लिम लीग के साथ इलैक्शन लड़ने का फैसला क्यों किया? कहा जाता है कि हमने उनके साथ इलैक्शन नहीं लड़ा, लेकिन हमारे और इनके प्रोग्राम एक हैं, इसलिए उनके साथ गवर्नमेंट बना रहे हैं। इसका क्या मतलब है? हमारे इनके प्रोग्राम एक हैं—यह क्या दलील है?

उसके बाद जनवरी या फरवरी, 1971 में बम्बई कारपोरेशन में कांग्रेस (आई) मुस्लिम लीग के साथ मिलकर इलैक्शन लड़ती है। केरल के मामले को इनकी नेता यह कहकर डिस्टिंगुइश करती हैं कि हमने इलैक्शन साथ नहीं लड़ा, ये चुनकर आ गये, हमारे इनके व्यूज़ एक हैं, प्रोग्राम एक हैं, इसलिए मिलकर गवर्नमेंट बनाने में कोई हर्ज नहीं है। लेकिन पांच-छः महीने के बाद ही वह सब दलील खत्म हो जाती है और कांग्रेस (आई) मुस्लिम लीग के साथ मिलकर चुनाव लड़ती है। यह इनका एटीचूड रहा है, जिसकी वजह से हिन्दुस्तान में आज जो हो रहा है सब उसी का नतीजा है।

डा० कृपासिन्धु भोई (सम्बलपुर) : मुस्लिम मजलिस के बारे में भी थोड़ा बहुत बतला दीजिये।

श्री चरण सिंह : वह भी एक कम्यूनल पार्टी थी और मेरी पार्टी और कुछ दूसरी पार्टीज़ ने मिल कर इलैक्शन लड़ा—यह बात ठीक है। ऐसा नहीं होता तो ज़्यादा ठीक होता, मैं इस बात को एडमिट करता हूं। लेकिन नक़ल हमने आपके लीडर की की···(**व्यवधान**)···उसमें मेरी पार्टी थी और चार-पांच पार्टियाँ थीं, सबने मिलकर इलैक्शन लड़ा। मैं पहले ही इस बात को कह चुका हूं—

रूलिंग पार्टी सबसे बड़ी पार्टी है जिसकी लीडरशिप सबसे पुरानी है, उसने सबसे पहले ऐसा पैटर्न सेट किया। दूसरी पौलिटीकल पार्टीज़ ने भी उसी तरीके पर कोशिश की, जो मैं समझता हूं कि गलती की है। लिहाज़ा इस पर खुश होने का कोई मौका नहीं है। पैटर्न रूलिंग पार्टी ने सेट किया और करीब-करीब सभी अपोज़ीशन पार्टीज ने उस पर अमल किया। इसलिये बजाय इसके कि आप यह एडमिट करें कि गलती की है, आप कहते हैं कि हमने भी गलती की है। हम तो कह चुके हैं—जो बड़े भाई ने गलती की, वही गलती हमने भी की, लेकिन पैटर्न आपने सैट किया।···(**व्यवधान**)···ठीक है, तब फिर खालिस्तान दीजिए, हंसने से काम नहीं चलेगा, मैं सीरियस बात कर रहा हूं।

अब कास्ट की बात को लीजिये। मैंने पंडित जवाहर लाल नेहरू का नाम नहीं लिया, लेकिन यह बात सच है कि पंडित जी भी काश्मीरी पंडितों की कान्फरेंस में जाया करते थे, उन्होंने एक बार नहीं अनेक बार उनकी कान्फरेंस को एटेण्ड किया। मैंने अपनी किताब में इसका हवाला दिया है, आप चाहें तो मैं उसको सुना देता हूं। समय कम है इसलिए नहीं पढ़ूंगा लेकिन एक बार मैंने इन्दिरा जी के सामने भी कहा था कि ऐसे बहुत से सम्मानित कांग्रेस मैन हैं, जिनका मैं बहुत आदर करता हूं, वे इस तरह की कास्ट कान्फरेंस में हिस्सा लेते हैं। एक बार पी०सी०सी० की एक्ज़ीक्यूटिव में यह सवाल पैदा हुआ कि क्या एक्ज़ीक्यूटिव के सदस्य को कास्ट कान्फरेंस में जाना चाहिए। कुछ मुखालिफत के बाद यह तय हुआ कि नहीं जाना चाहिए। लेकिन मेरे एक बुज़ुर्ग नेता थे, जिनकी मेरे मन में सबसे ज़्यादा इज्ज़त थी—मैंने कहा—बाबू जी, आप खत्री समाज की कान्फरेंस में कानपुर गये थे। मैं टंडन जी की तरफ इशारा कर रहा हूं।

आचार्य भगवान देव (अजमेर) : अध्यक्ष जी, मेरा प्वाइन्ट आफ़ आर्डर है यह पंजाब की समस्या है और उन अकालियों के साथ इन्होंने सांठ-गांठ करके हुकूमत चलाई थी, उस समय इन्होंने कुछ नहीं किया···(**व्यवधान**) अब यह बयान दे रहे हैं और सदन को गुमराह कर रहे हैं बाबा-आदम के जमाने की बातें करके।

अध्यक्ष महोदय : आप बैठिये।

आचार्य भगवान देव : पंजाब की समस्या पर ये बात क्यों नहीं करते हैं।···(**व्यवधान**)

अध्यक्ष महोदय : आप बैठिये। चौधरी साहब, आप बोलिये।

श्री चरण सिंह : मैं उम्मीद करता हूं अपने साथियों से।···(**व्यवधान**)···मैं कोई ऐसी बात नहीं कह रहा हूं जो इरेलेवेन्ट हो। मैं कह रहा हूं कि हमारी पालिटीकल लीडरशिप ने शुरू में ग़लती की है और उसकी ज़्यादा जिम्मेवारी रूलिंग पार्टी की है, जिसमें हमारे करीब-करीब सारे लीडर शामिल थे। दूसरे लोगों ने भी नकल की, यह मैं शुरू में ही कह चुका हूं।···(**व्यवधान**)···पंजाब की जो बात है, वहां तो आग लगी हुई है।

अध्यक्ष महोदय : आप अपने प्वाइन्ट्स कहिये।

श्री चरणसिंह : अब इन्दिरा जी जोर दे रही हैं, मेरे पास उनकी स्पीचें हैं, रोज उनकी स्पीच हो रही है कि यूनीटी की जरूरत है, कम्युनलइज्म बढ़ रहा है, कास्टइज्म बढ़ रहा है। मैं जानना चाहता हूं कि कम्युनलइज्म जो बढ़ाया है, तो किसने बढ़ाया है? सबसे ज़्यादा इन्होंने बढ़ाया है। कास्टइज्म भी इन्होंने बढ़ाया है। आप एडमिनिस्ट्रेशन को अगर देखेंगे···(**व्यवधान**)··· चिल्लाने से काम नहीं चलेगा। अगर आप कहते हैं कि मैंने बढ़ाया है, तो कोई यह बात बतला नहीं सकता कि मैं कभी कास्ट्स कान्फ्रेंस में गया हूं। शुरू से ही, जबसे मैंने होश संभाला, मैंने कहा है कि कास्ट्स को मैं हिन्दुस्तान की अनडूइंग्स का

सबसे बड़ा कारण समझता हूं, जिसकी वजह से देश बर्बाद हुआ है। पंडित नेहरू को यह मालूम होना चाहिए था कि देश गुलाम हुआ···

श्री राम स्वरूप राम (गया) : मेरा प्वाइन्ट आफ़ आर्डर है।

अध्यक्ष महोदय : आप बीच में क्यों बोलते हैं। आप बाद में बोलिए।

श्री राम स्वरूप राम : मैं प्वाइन्ट आफ़ आर्डर पर खड़ा हूं।

अध्यक्ष महोदय : नो प्वाइन्ट आफ आर्डर। आफ बैठिये।

श्री राम स्वरूप राम**

Mr. Speaker : Nothing goes on record whatever he says.

आपका टाइम आयेगा, तो आप बोलिये। आपको भी मौका दिया जाएगा। सबको मौका दिया जाएगा। जो प्वाइन्ट्स हो, उनको नोट कर लीजिए और उनका उत्तर दे दीजिए। चौधरी साहब, आप बोलिए।

श्री चरण सिंह : मैं कभी जाट कान्फ्रेंस में नहीं गया और न किसी तरीके से इस चीज़ को बढ़ाया है। आप अपने डिपार्टमेंट में जाकर देखिए, जो मैंने काम किया है। कभी कास्ट्स के बारे में किसी को कोई शिकायत नहीं हुई। कास्ट्स में मेरा विश्वास नहीं है।···(व्यवधान)···मेरा हक कहने का है और मेरी बात सुनने की आपकी जिम्मेवारी है।

अध्यक्ष महोदय, मैं यह कह रहा था कि आजकल इन्दिरा जी बहुत कुछ कह रही हैं कि डिवाइसिव फार्सेज देश में मजबूत हो रही हैं और यह हो रहा है और वह हो रहा है। बिल्कुल ठीक है लेकिन मैं अर्ज करना चाहता हूं कि इन डिवाइसिव फार्सेज को किसने मजबूत किया है? सारे देश में जहां भी कांग्रेस (आई) की गवर्नमेंट है, चाहे आप कैबिनेट का कांस्टीट्यूशन देख लीजिए, आल इन्डिया का देख लें और यू० पी० के अन्दर एडमिनिस्ट्रेशन को देख लें कि किस तरह से वहां पर एपाइन्टमेंट्स होते हैं, किस तरह से वहां पर प्रोमोशन्स होते हैं। मैं इसकी तफ़सील में नहीं जाना चाहता। मेरे कहने का मतलब यह है कि कम्युनलइज्म को कांग्रेस लीडरशिप ने बढ़ाया है और कास्टइज्म को कांग्रेसमैन लाए हैं और जहां तक लिंगुअलइज्म की बात है, हिन्दी को पूह-पूह करके खत्म कर दिया और कहा **नो, नो वी आर वन नेशन**। 31 वर्ष पहले 1963 में इन्होंने कहा था कि हिन्दी को किसी पर फोर्स नहीं करना है लेकिन हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनना है। मानो, हिन्दी को फोर्स नहीं करना है और कांस्टीट्यूशन में फोर्स करने की कोई बात भी नहीं है। सिवाय तमिलनाडु के रेप्रेजेन्टेटिव्ज के सारे देश के रेप्रेजेन्टेटिव्ज ने इस बात को माना था कि हिन्दी रखनी है। हिन्दी नहीं रखनी है, चलिए हिन्दी न सही। तो जिन दोस्तों ने एतराज किया है, उनको बुलाकर पूछा जाए कि किस लैंगुएज को रखना है। संस्कृत कर लीजिए और कुछ लोगों का जो यह ख्याल है कि यह बहुत कठिन भाषा है, तो ऐसी बात नहीं है। 3-6 महीने में इसे आसानी से सीखी जा सकती है और मेरा कहना तो यह है कि अगर मुल्क को एक नेशन रहना है, तो एक लैंगुएज होनी चाहिए, एक जबान होनी चाहिए। अभी आपका एक डलीगेशन चाइना गया था।

जब सब अंग्रेजी में बोले। चाइना के लोगों ने पूछताछ की कि आपकी कोई भाषा नहीं है। जो लोग वहां गये थे, किसी के पास कोई जवाब नहीं था। इस बात का मजाक हुआ और बराबर मजाक उड़ता रहा। यह लीडरशिप की गलती की वजह से सिचुएशन हुई।

**Not recorded.

अब सवाल यह है कि आज जो कुछ हो रहा है इसके पीछे भी पोलिटिक्स है। मुझे पोलिटिक्स वालों के नाम लेने पड़ रहे हैं जो कि मैं नहीं लेना चाहता था। क्योंकि हाउस में जब इस चीज़ पर गौर हो रहा है तो मुझे नाम लेना पड़ेगा और उनका नाम लेना पड़ेगा जो हिन्दुस्तान के पोलिटिकल सिस्टम के सबसे बड़े पद पर आसीन हैं। 1977 तक पंजाब में कांग्रेस की हुकूमत थी। उसके बाद 1977 में जब सब जगह दूसरी गवर्नमेंट आयी तो पंजाब में श्री प्रकाश सिंह बादल की गवर्नमेंट आ गयी। उस वक्त यह कोशिश की गई कि अकाली दल के खिलाफ कोई भी शुगूफा खड़ा किया जाए और कोई एक्शन लेने की बात शुरू की गई। उसकी तफसील में मैं नहीं जाऊंगा। मेरे पास आर्टिकल है। आप उसे पढ़ कर के मुझ से बात कर लेना। अगर आप सच्चाई जानना चाहते हो तो उसे पढ़ना।

यह सण्डे मेगजीन है—25 अप्रैल से 1 मई तक का और यह कलकत्ता से निकलता है। यह आनन्द बाजार पत्रिका का पब्लिकेशन है। उसके जो सैंटेंश हैं उन्हें मैं पढ़ कर बता देना चाहता हूं।

"Thus the Dal Khalsa, the extremist Sikh organisation which is advocating a separate Khalistan and was behind the hijacking of an Indian Airlines Boeing 737 to Pakistan last September enjoys the patronage of Union Home Minister Giani Zail Singh."

यह एवीडेंस उसका है जो कि हाइजैकिंग करने वाले लोग थे, उनका जो लीडर था। वह गिरफ्तार हो गए। पुलिस के सामने उसने कंफेशन किया और कहा कि हमारे 17 बहुत बड़े बड़े एक्टिव सिम्पेथाइजर्स हैं, 17 आफिसर्स हैं जिनमें लीडिंग पब्लिक लाइफ के लोग हैं। वह उनके नाम बताता है। इस आर्टिकल में उन लोगों के नाम लिखे हुए हैं जो कि ज्ञानी जैलसिंह के दोस्त हैं, उनके अजीज हैं, उनके अपोइन्टी हैं।

THE MINISTER OF PARLIAMENTARY AFFAIRS, SPORTS AND WORKS AND HOUSING (SHRI BUTA SINGH) : Sir, I am afraid, under the Rules of Procedure of the House and under the Constitutional provisions, no hon. Member can mention the name of the Rashtrapati....

(*Interruption*)

श्री चरण सिंह : कल को आप राष्ट्रपति हो जाएं और आज यहां अगर आप कुछ गलती करते हैं तो उसके बारे में हम नहीं कह सकते हैं ? मैं आज ज्ञानी जैल सिंह जी की एज राष्ट्रपति उनके काम की भर्त्सना नहीं कर रहा हूं। मैं होम मिनिस्टर के मुतल्लिक बात कहता हूं। उसने पुलिस में इस बात का एडमिट किया है। पुलिस में उनके नाम मौजूद हैं जिनको मैं वक्त की कमी की वजह से नहीं बता रहा हूं।

SHRI R.L. BHATIA (Amritsar) : It is only a statement before a police officer, so, it has no evidence.

श्री बूटा सिंह : यह साजिश भी हो सकती है, होम मिनिस्टर के खिलाफ।

श्री चरण सिंह : उन्होंने इसको कन्ट्राडिक्ट क्यों नहीं किया।

आचार्य भगवान देव : अध्यक्ष जी, चौधरी साहब ने ये रजुआत क्या आपके सामने पेश की हैं ? ये इन रजुआत को हाउस में पेश नहीं कर सकते, इस पर मुझे आपत्ति है।

श्री चरण सिंह : इस आर्टिकल में जो एलीगेशंस लगाये गये हैं और उनके खिलाफ लगाये गये हैं, उनका कंट्राडिक्शन आज तक नहीं हुआ है। उनको यह चाहिए था कि वे इनका कन्ट्राडिक्शन करते। अगर वे इस तरह के एलीगेशंस का कन्ट्राडिक्शन नहीं करते···

अध्यक्ष महोदय : इसमें ऐसा है कि कन्ट्राडिक्शन किसी का हो या नहीं हो, उससे वह चीज़ साबित नहीं हो जाती है, अथान्टिक नहीं हो जाती है। कुछ चीजें अखबारों में ऐसी भी निकलती हैं

और रोज निकलती हैं जिनका कुछ पता नहीं होता। So, we should not base our conclusions on that.

श्री चरण सिंह : अध्यक्ष महोदय, मैं क्या आप से पूछ सकता हूं ? यह एक इम्पार्टेन्ट पोलिटिकल इन्ट्रेस्ट की बात थी, उनको क्या खुद को यह नहीं चाहिए था कि वे इसका कन्ट्राडिक्शन करते ?

अध्यक्ष महोदय, खालिस्तान की मांग के पीछे बाहरी हाथ होने की बात भी की जाती है। एक दो देशों के नाम भी लिए गए हैं। कुछ मुल्क हमारे देश को डिसइंटीग्रेट हुआ देखना चाहते हैं। अगर बदकिस्मती से देश डिसइंटीग्रेट होता है तो यह इस देश की लीडरशिप की गल्तियों के कारण होगा। वैसे डिसइंटीग्रेशन नहीं होगी। आज हम देख रहे हैं कि यू० एस० ए० का क्या एटीट्यूड है, कनेडियंस का क्या एटीट्यूड है। ब्रिटिश हाई कोर्ट के चीफ जस्टिस लेविंगटन ने जिस तरीके का फैसला दिया है उससे बाहर के देशों के इन्टरेस्ट का पता लगता है।

गुरुद्वारों में, रिलीजस प्लेसेस आफ वर्शिप में कोई क्रिमनल आदमी या पुलिस जिस पर शक करती हो कि उसने क्राइम किया है, जा सकता है? इस सिलसिले में मैंने इन्दिरा जी को पत्र लिखा है। मैंने उसमें यह भी लिखा है कि संत भिण्डरावाला पर लाला जगतनारायण के कत्ल का चार्ज था। चार्ज गलत होगा, लेकिन पुलिस ने उनको गिरफ्तार नहीं किया। उल्टे रेडियो पर एनाउंस किया जाता है कि उनका वारंट जारी हुआ है। रेडियो पर यह बात एनाउंस की जाती है। इसके बाद संत भिण्डरावाला यह कहते हैं कि फलां जगह फलां वक्त और फलां तारीख को मैं अपने आपको पेश करूंगा। लाख दो लाख लोग इकट्ठे हुए और गवर्नमेंट चुपचाप देखती रही। उस वक्त भी मैंने इन्दिरा जी को लिखा था कि इस तरह से उनका सिर ऊंचा हो जाता है। क्यों हुआ ऐसा ? यह किसकी गल्ती है ? यह गल्ती गवर्नमेंट आफ इन्डिया की है। उस गल्ती को बताने का हक हमको होना चाहिए क्योंकि हम भी इस मुल्क के रहने वाले हैं।

यही नहीं, चीफ मिनिस्टर दरबारा सिंह पत्र लिखते हैं ज्ञानी ज़ैल सिंह जी को कि दो सौ आदमियों के साथ भिण्डरावाला अनलाइसेंस्ड आर्म्स लेकर दिल्ली में आ रहे हैं। वे तीन हफ्ते यहां पर रहते हैं। अनलाइसेंस्ड आर्म्स को बस की छत पर रख कर राउंड लेते हैं। मैंने इन्दिराजी को लिखा कि इतने राजनीतिक महत्व की बात आपकी इत्तिला में न हो, यह नहीं हो सकता। बाकायदा अखबारों में खबरें छपती हैं, लेकिन कोई गिरफ्तारी नहीं होती। इससे यह नतीजा निकालें—

That he is above the law, he has been treated as beyond the pale of law.

इससे दूसरे लोगों पर क्या असर पड़ेगा ? आज 100 आदमियों का मर्डर हो चुका है। 101वां मर्डर पुलिस के डी०आई०जी० का हुआ। 102वां मर्डर आज पटियाला में या किसी अन्य जगह पर हुआ है। वहां पर इससे जो टेंशन हो रहा है उससे जाहिर है कि वह पोलिटिकल मर्डर है। एक आदमी पर भी मुकदमा नहीं चल रहा है। मेरा इम्प्रेशन यह है कि सरदार दरबारा सिंह ला एण्ड आर्डर के मामले में कुछ करने के लिए फ्री नहीं है। वे यहां से गवर्न होते हैं। मैंने इन्दिराजी को लिख दिया है कि आपने संत भिण्डरावाला को हीरो बनाया है। गुरुनानक निवास के क्या मायने हैं ? ठीक है वह मन्दिर है। क्या दुनिया के किसी मंदिर, मस्जिद या गिरजाघर में क्रिमनल चला जाए तो उसको गिरफ्तार नहीं किया जा सकता ?

इतना बड़ा पुलिस अफसर मारा गया और पुलिस कहती है कि गोली यहां से आई है। गोली वहां से आई है या नहीं, इस मामले की तहकीकात पुलिस नहीं कर सकती। क्यों नहीं कर सकती ? मैंने इन्दिरा जी को पत्र लिखा है और उन्होंने 25 मार्च को जवाब दिया है—

"We do not have to prove our *bona fides* in our desire to deal firmly with communal elements...

अपने लिए कम्युनल एलीमेंट के खिलाफ कुछ भी कह लीजिए। लेकिन, आपने ठीक तरह से डील नहीं किया है।

"We are certainly concerned about santuary being provided to anti-social elements in Gurudwaras. But your suggestion of policemen entering the place of worship is likely to have repercussions which cannot be...."

इसका क्या मतलब है? ... (**व्यवधान**)

Then you should resign if you cannot govern the country.

आपकी हंसी रिकार्ड हो जाती तो लोगों को पता लग जाता। आप हाइएस्ट आदमी को गिरफ्तार नहीं कर सकते हैं? क्यों? जो मर्डर, जुल्म और डकैती करता है और स्टैन-गन लेकर चलता है और मैं तो भिंडरावाले के बारे में कहूंगा कि 10-20 आदमी उसके साथ चलते हैं। वहां सैकड़ों आदमी मौजूद हैं। पुलिस अन्दर नहीं जा सकती क्योंकि उसके रिपरकशन्स खराब होने वाले हैं। यह कोई व्याख्यान देने वाली जगह नहीं है। यह कोई धर्म स्थान नहीं है जहां गुरु ग्रंथ साहब या पुराण का पाठ किया जाए। कहीं पर तो यह इम्प्रेशन दिया कि अमुक कम्युनिटी और अमुक किस्म के लोग अबाव दी लॉ हैं। कैसे काम चलेगा? कैसे हंसने का मौका मिलेगा। एक खबर है कि यूनिवरसिटी में कोई आदमी या पुलिस नहीं जा सकती है जब तक वाइस-चांसलर की इजाजत न हो। मैं जब होम मिनिस्टर हुआ तो मैंने सबसे पहले यह आर्डर किया कि

Every inch of U.P is under the jurisdiction of police. They will not seek the permission of the Vice Chancellor. Not a single dog barked because all the dogs knew that the man is not going to reconsider his views.

अब सवाल यह है कि इस मामले से कैसे निपटा जाए? जब तक लॉ को एन्फोर्स नहीं किया जाएगा तब तक यह बात बढ़ती ही रहेगी। लिहाज़ा, लॉ को एन्फोर्स करना चाहिए तब जाकर काम चलेगा। ग्रिवांसेज, ग्रिवांसेज के तरीके से ही हल होंगे। मैंने एक बार प्रेस कांफ्रेंस में और इन्दिरा जी से भी कहा कि सिख और हिन्दू, दो नहीं हैं। ये एक हैं। हिन्दू का फ्लैश और ब्लड सिख का है और सिख का ब्लड और बोन्स हिन्दू के हैं। गुरू लोगों ने मेरी हिस्ट्री की रीडिंग के हिसाब से हिन्दुओं की खातिर कुर्बानी दी। अंग्रेजों के ज़माने में जुल्म हो रहे थे तो उन्होंने लीडरशिप प्रोवाइड की। अब जो सूरत पैदा हो गई है, उसको छोड़ दीजिए। लेकिन, मेरे ख्याल में सिखों से ज्यादा हिन्दू गुरुद्वारे में पूजा करने के लिए जाते थे। माइनारिटीज कमीशन हमारे यहां जनता पार्टी में कायम हो गया था। मैं उस समय वर्किंग कमेटी में मौजूद नहीं था। मैं उसी समय आया लेकिन कुछ समझ नहीं पाया। मैंने, मोरारजी भाई से कहा, वे भी देर से आए थे—

Minority Commission will create problems

मैंने केबीनेट से तय करा लिया कि माइनारिटीज़ कमीशन होगा। मेरे सामने सवाल उठा था कि सिखों को माइनारिटीज में माना जाए या नहीं। मैंने कहा कि मैं नहीं मानूंगा। मैं कोई गलत बात नहीं कह रहा हूं। बहुत खुलकर और सीधी बात कह रहा हूं। प्रकाश सिंह बादल और जगदेव सिंह तलवंडी से मेरे कुछ ज्ञाती ताल्लुक भी हैं क्योंकि प्रकाश सिंह बादल और मैं एक ही जेल में रहे थे।

तो मैंने कहा यह बताइये कि माइनारिटी की डैफ़ीनीशन क्या है? किसी गुरू ने कहा है कि आप हिन्दू नहीं हैं? गुरु ग्रन्थ साहब में कहीं लिखा है? आखिरी गुरु गोविन्द सिंह ने उल्टी देवी की पूजा की, उन्होंने मन्त्र लिखे हैं, श्लोक लिखे हैं, गाने गाये हैं, किसी ने कभी कहा कि

हिन्दू नहीं हैं? हिन्दू फिर क्यों जाते हैं गुरु ग्रन्थ साहब के पाठ में और क्यों मत्था टेकते हैं गुरुद्वारे में? जहां तक फिलासफ़ी का ताल्लुक है, जो बेसिक फिलासफ़ी है ट्रांसमाइग्रेशन आफ़ सोल, कर्म की थ्यौरी, उसको मैं मानता हूं। हर मज़हब में थोड़े-थोड़े फ़र्क होते हैं। मैं इत्तफ़ाक से आर्य समाजी हूं, आइडल वर्शिप में विश्वास नहीं करता हूं, अवतार, कास्ट सिस्टम और त्राद्ध में विश्वास नहीं करता हूं, तो क्या यह क्लेम कर सकता हूं कि हम भी एक माइनारिटी हैं? मुसलमानों में भी अलग फिरके है। तो इस तरह से मैं माइनारिटी मानने के लिए तैयार नहीं हूं। उसके पास इसका कोई जवाव नहीं था और वह चले गए? उसके बाद उन्होंने कोई लैटर नाराज़गी का नहीं भेजा, कोई बयान नहीं दिया, कोई नाखुशी जाहिर नहीं की और उन्होंने रीकन्साइल कर लिया और माइनारिटीज़ कमीशन में फंक्शन करना शुरू कर दिया। धीरे-धीरे लोगों की एम्बीशन्स बढ़ाइये, गलत चीज़ें करके लोगों को गलत रास्ते पर ले जाइये, वोटें जरूर मिल जायेंगी जो वोट का इरादा है कि हिन्दू को डराया जाय, और हिन्दू डरा हुआ है मैं जानता हूं, हिन्दू मेरे पास आये हैं और मुझसे कहा चलने के लिए। मैंने कहा नहीं, यह ठीक नहीं है, तुम लोग अपने को आर्गिनाइज़ करो। और गुरुओं का जहां तक ताल्लुक है, गुरुद्वारा या गुरु ग्रन्थ का जहां तक ताल्लुक है कभी कोई ऐसी बात न कहो जो किसी को कड़वी लगे, या बुरी लगे। और अगर मौडरेट सिख हैडड बाई प्रकाश सिंह बादल अगर यह हिम्मत करते तो यह नौबत न आती जो कि आज आ रही है। लिहाज़ा यह मामूली बात नहीं है। अगर खालिस्तान बन जाता है तो कल को और स्तान बनेगा। नौर्थ ईस्ट इंडिया के अन्दर मुझे डर है 2, 3 साल के अन्दर क्रिश्चयन स्टेट की मांग उठने वाली है। हम लोग रिलीजन, कास्ट, लैंगुएज सब में बंट गए हैं और लीडरशिप जो हमारी असली बड़ी लीडरशिप थी, जिसने देश को आज़ाद कराया था उसकी गलती रही। जितनी और पार्टियां हैं करीब करीब सबने वही रास्ता अपनाया।

इन शब्दों के साथ इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

SHRI R.S. SPARROW (Jullundur) : Hon. Mr. Speaker, Sir, I will come down to brass tacks and not ramble. My first observation before you and before the august House is that no political Party should politicalise the serious situation that has arisen lately in Punjab. The homogeneity and the integration of this country is our prime responsibility and we all have to work to achieve that end.

Chaudhari Charan Singh with all his long experience of political life has brought out certain facts and some of his own ideas, if I may say so. He has brought in the old case also and certain reference to 1966, Khalistan for Sikhs and so on and so forth. May I point out to him that in so far as the Sikhs are concerned, there is no such question which is going to be of any consequence. I state this with some knowledge and personal experience.

I know the pulse of the people who now are rated as Sikhs and who are Sikhs. You have made a reference to that and I would like to amplify on that.

Sikhs, Akalis, Hindus, historically, regionally, geographically, philologically, physiologically, from every point of view, in so far as history stands, are just made of one brick, one bone and flesh. May I tell you where I stay in Punjab ? I know the whole of Punjab, 12,982 villages, each of them has been visited by me at one time or the other during the course of my political duty or otherwise. For instance, take the centre of Punjab, Jullundur. 4 or 5 districts on one side and 4 or 5 districts on the other, total about 12 only. This mini-State, how it came to be, is not my concern here today. But, may I tell you that on my right I see one of the famous, old, Sikh '*misals*' of Aluwalia. That is, you know the area full well, Kapurthala district area of Aluwalias, half of them Sikhs and half of them Hindus who get intermarried and whose everything is common. On my left I see Saini Jats extended right up to Gurdaspur district, extended up to Hoshiarpur district from Jullundur. Half

of them are Sikhs and half of them Hindus. Here in Delhi, in Ludhiana, in Patiala and in Amritsar itself, you go and see any house. You want to see Puris, you want to see Sabrawals, you want to see any other Gotra for that matter, half of them are Sikhs and half of them Hindus. It used to be the custom amongst Punjabis on the other side of the Ravi river ; as a family formula, that they should be 50:50 Sikh and Hindu and all working together as groups of families. When we think about the homogeneity of this particular nationality or nation, call it what you may, in virtue of facts, it is just made of one bone and flesh. That fact has to be understood by the whole of the House.

Now I come to one of the observations that has been made by Chaudhary Charan Singh. You have said Khalistan. I have already said there is no question of Khalistan. Do you know that even amongst the Sikhs as to who and what they are and how many are they ? Sikhs are there in the Akali party. Akali party is a political and communal party. But, they cannot take charge of the total Sikhs. I might caution them and I might challenge them and I might challenge anybody who puts any kind of big score on that head, that they are the over-all masters of Sikhs. They are not. I will tell you how. There are other Sikhs. There are nationalist Sikhs, Congress Sikhs, there are various other types of Sikh clan. You can call them Namdhari Sikhs. You can call them Sehajdhari Sikhs. Even Udasis, Nirmalas and many others, for that matter. Overall Sikhs and even Akalis, if I might point out, very fairly speaking, inclusive of the Akali High Command, has not at any time said that they want Khalistan. Let us be very fair where it is so. When there is an ultimate aim or any kind of feelings to get political power back and that way to frighten you with some kind of a bludgeon, well, that is a separate case altogether. And in that way it becomes a political case. But you are not to mix it up with the homogeneity of the country as a whole. Otherwise, there is no Sikh whatsoever who is keen on separating. I know where the aberrations come up. I understand where the difficulties come up. I understand where some of these hot heads are. I know all these extremists, terrorists and some of the foreign agents, people working to create chaos. Chaudhary Charan Singh, I might point out, it is not a question of having to have Khalistan. It is a question to create chaos and terrorism on the frontiers of India, so that it can be dismembered, with certain influences working inside and outside India. It is not a question of Khalistan, etc. that you have been professing to say.

17 hrs.

Now you have given certain instances and examples. May I also be given the privilege of giving an example or two ? Do you recall at the time you were in the centre and one of the moving figures in the Janata Party, commanding and controlling whole of India and later on also as Prime Minister for some time ? May I recall some incident of that time ? I recall one particular instance. There was one person who is now calling himself as the President of Khalistan in absentia, that is, working now in a house in London. Dr. Jagjit Singh. I have no compunction in having to call his name out because it is out already so many times. Dr. Jagjit Singh is the person who flew down all the way to Lahore. When ? When India was fighting a bitter war—the 1971 Indo-Pak war and our children, the Sikhs, Hindus, Harijans and Christians, all were fighting in the battles of that war. There it happened like this. Dr. Jagjit Singh gets a big plane costing lakhs of rupees. With whose money ? It is very difficult now to tell you whose money it was. But he did fly down to Lahore and there he stands. He stands before the television camera monitored by all the countries of the world with his picture there and seen moving a bunch of keys there like this and exhorting the Sikhs of Punjab saying, 'My dear brethren, you should fight on the side of Pakistan and not on the side of Hindu-run Hindustan. And here are the keys for Nankanasahib Gurudwara. Here are the keys of such and such Gurudwara', so on and so forth, exhorting them. That is one part of the story. Lo and behold, the same gentleman who was a person who could be called a traitor or a fifth columnist as he spoke against a country involved in the war

And what happens ? Here he comes again to India. When ? When the Janata Party was in power. .. (*Interruptions*). He comes here. He was entertained here—by your friends who were there in the Akali Party which was in power in Punjab. He goes there and I met him and I saw him there masquerading as a friend of India. Lo and behold, you did not raise your little finger to point out ... (*Interruptions*) I am very sorry. Kindly don't take it amiss, but this I have to say. ..

SHRI CHARAN SINGH : How can I prosecute him for a speech that he made ten years ago ? .. (*Interruptions*).

THE MINISTER OF CHEMICALS AND FERTILISERS (SHRI VASANT SATHE) : He is not talking about prosecution. He is talking about your *bona fides*. You called him a traitor, received him and allowed him to enter into India and now you are preaching sermons here. That is what he says.

SHRI R.S. SPARROW : That is a different story altogether and this is yet another different story. Kindly don't take any umbrage on that. I am just stating the facts. I can prove it categorically, how the whole thing has happened. This is just the point. It might not have come to your notice or you might have thought it not necessary to go into this type of a tiny problem. ..

SHRI CHARAN SINGH : Is it that you wanted me to prosecute him for a speech that he made in 1971 ? .. (*Interruptions*)

SHRI R.S. SPARROW : If I may point out through you... the question of Khalistan is entirely a dead question. I can numerically prove it in so far as the Sikhs are concerned.

Sir, where did the Sikhs live ? I may point to you that Sikhs and my Gurus—take any Guru you like—you have pointed out about the Gurus who were kind enough to come and sacrifice themselves for the sake of motherland. They sacrificed everything to save this country and to save the integrity as also our civilisation. In Guru Granth Sahib in every word you find

"राम नाम उच्चारण"

Then it goes the whole way. Their holy shrines are spread all over India. You go anywhere. Let me start with U.P. There is Gobind Ghat, Hemkund, etc. You go to any other place you will find our Sikh Gurus' imprint over there.

Sir, Sikhs as a whole are doing very well. From Madras, Calcutta and then backward in Uttar Pradesh. They have been working under Shri Charan Singh ji in Uttar Pradesh. You were then the Chief Minister of Uttar Pradesh and they were busy doing very well in Tarai by putting up their own sheds and ploughing their own little land. In so far as Sikhs are concerned India belongs to the Sikhs as a whole. There is no question about it. I speak as an Indian first and Indian last. So, the question of Khalistan is out. It is dead. Let us talk about other things. Even the Motion that has been brought before the House is about the law and order difficulty in Amritsar. That is what the problem is and on that you did not say much to clarify that point. You have given us some historical points. Now, I would like to say one or two things about the Motion before the House. My Akali brethren have certain responsibilites which they do not wish to understand or carry out in its correct perspective. They must understand how and why they should be giving the perpetrators and the murderers, terrorists and some such extremists haven inside the Gurudwara precincts. This is something which is not correct. This is outside the teachings of our Gurus. This holy shrine, Golden Temple, as I have pointed out previously also is common to all—Hindus, Sikhs, Harijans, Christians and everybody.

नानक नाम चढ़दी कलां,
तेरे भाणें सबदा भला ।

That is what is in 'Ardasa' they say everyday. It is for everybody. Now, the late actions have shown and the kind of heinous crimes have shown that they do not want to follow the great edicts of the Sikh Gurus.

The Akalis are the guardians of Golden

Temple, that is, there is the President, Shiromani Akali Dal and there is President of Shri Shiromani Gurudwara Prabhandhak Committee and there used to be Singh Sabhas. Now, it is beyond any shadow of doubt that these perpetrators who stay in 'Nanak Niwas' or anywhere else are *law breakers*. And are law-breakers to be given protection ? As I said the other day, supposing all mosques, temples and holy shrines in India give haven to any kind of murderers, I do not know what chaos will come about. I would appeal to them to see sense and give up this type of ideas whatsoever. They should, in fact, help the authorities to take away anyone who is a murderer, or a law-breaker and this is what they have not done so far.

Even day-to-day announcements seem to be very contradictory. For instance, President, Shiromani Akali Dal, Sant Harchand Singh Longowal one day says that any kind of morcha that will be taken in hand will be non-violent. But I would like to ask him, if he has got the capacity to control violence. No, he is not able to do that. They came here, as you remember for a morcha in Delhi. On the 4th of this month, they had the *rasta roko* morcha and then they became violent, and then there had to be certain deaths and casualties and so on and so forth. This is what has happened in whatever morcha they indulge in. On the one hand he says that it will be non-violent, but then he does not have the capacity to control them. Not only that, on the second day they change the version. He says, 'everything may go beyond my control, and youth will take charge, and then they may start using weapons and so on and so forth'. Not only that, one day the Akal Takhat head priest declares that from the next day, or from such and such date, no weapons will be allowed within the precincts of Darbar Sahib. All right, but on the second day, it is reversed. Somebody else says, 'No, they can bring arms inside.' Arms were never taken into Darbar Sahib premises. I lived there for 14 years while studying in school and college, and on every second day, I used to visit Darbar Sahib, and all Hindus and Sikhs used to sit together and pray together, and clean the Parikarma with all the reverence due to the holy place, and no weapons were ever seen being taken inside. Now, they go armed with unlicensed arms. What is this fun ? All that I want to request our Government is to look into this cogently. All that I would request the opposition leaders is to work on it as a national issue and think of what is to be done.

SHRI INDRAJIT GUPTA (Basirhat) : You please tell us what is to be done.

SHRI R.S. SPARROW : This is one thing where you have to put your heads together as to how to deal with this problem which may become something very wrong, in so far as the vivisection of our country is concerned.

I have just one more word to tell you and that is this. I have given you as to what is the aim of these people. I, through you, Sir, wish to pose a problem. Now is the time for the Akali High Command to prove categorically as to their loyalty to the nation of the Gurus. I call loyalty to the nation of the Gurus. The nation of the Gurus extended from Kanyakumari right upto Himalayas and on the right side from Lido Road on Burma side to Nagar Parkar in Saurashtra. This was where the Gurus moved about and preached at their will. And now, it should be for the Akali Dal to give proof of it. They should immediately come to the table and discuss the problem.

I admire the forebearance and the patience with which the Prime Minister, Mrs. Indira Gandhi, and the Home Minister worked from here. Shri Charan Singh Ji, I do not agree with you when you say that you should have caught somebody from the gullet and done this and that. Incidentally, you have not put up a single recommendation worth the name. Well, you may mean everything well. I accept that. But what has been done by you ? The forebearance, the steadiness and so and so forth with which the whole thing has been handled by the present Government is highly commendable. You cannot march right into the Golden Temple with your boots on and so on and so forth, with your power loaded machine-guns and so on and so forth and then expect that things will be very cool. I would advise against it. You

may have to do something else. You have to promote and devise something very different. Methods and measures are various with which our Government is controlling the issue and they are highly commendable and I stand for that. Whatever is to be done as a collective measure, this is for the House, this is for the Opposition leaders and our leaders to put their heads together across the table. If you have some kind of say and you have worked together with the Akalis, they were here with you, they were with you in Punjab and if you have some influence, and if you could very kindly bring them round on the table and discuss the things properly, if you could do that, I think I will be taking my hats off to you very very happily. With that I close my observations and I thank you very much, Sir, for giving me some time to speak on this.

SHRI SATYASADHAN CHAKRABORTY (Calcutta South) : Mr. Speaker, Sir, at the very outset I vehemently protest against the absence of the Prime Minister in the House. Sir, we are seriously debating an issue, where our treasury bench Members want that the Opposition and the ruling party should work together. But I ask where is the leader of the House ? Where is the dynamic leader ? What is she doing ? This is a national issue ; this is a very important issue and you will agree with us that this question is concerned about the unity and integrity of the nation. But what is your response to it ? Do you preach all these things to us, not to be practised by you ? That is why I register my protest.

Sir, my second point is this. I expected something from my predecessor, who spoke just now. Well, it was almost a Sunday-school lecture preaching sermons and all that. You have never touched the issues.

Now, Sir, I want to know what is the opinion of the ruling Party regarding the demands of the Akalis ? Can you say something on it ? Do you agree or do you not agree ? Before asking us to do something, I ask you what is the opinion of the Congress (I) both in Punjab and in Delhi regarding the demands of the Akalis ? Are you all unified on it ? Can you speak with one voice ? You cannot. Sir, what is the view of the Punjab Congress (I) regarding the Akali demands and on this movement ? Are they not hopelessly divided ? And when Punjab is facing danger, is it not a fact that some of them are here in Delhi to oust the Chief Minister ? They are not concerned about the interest of the country, but are more interested in Office, chairs and loaves and fishes.

(*Interruptions*)

So, I would like to ask you a pointed question. It is not a sermon ; it is not preaching. Sir, it is a matter of question and I ask the question as to what is the opinion of the Punjab Congress (I) ? Are your leaders united ? My second question is where are the Congress (I) supporters in Punjab ?

(*Interruptions*)

Don't be agitated. I have evidence. Now, when in Amritsar...

AN HON. MEMBER : Come to the main issue.

SHRI SATYASADHAN CHAKRABORTY : Why are you worried ?

The main issue is, unfortunately you are in power. That is the main issue. You are the creator of all this.

When in Amritsar, one procession was led by the RSS leader and they were shouting 'Hindi-Hindu-Hindustan', they were speaking for Tobacco smoking.

And there was another procession led by the Akali extremists : 'No smoking ; no tabacco smoking in Amritsar'. Both these processions were led by the communalists ; and where were the Congress (I) people ? They were found in both the processions. (*Interruptions*) Yes, Sir ; I would like to say : 'We condemn the murder of the DIG of Police', though I must say that the way the Police brutally dealt with the agitationists and killed 19 people—the House should have condemned it. But still no one has the right to kill the Police ; but I would like to put a question to Mr. Sethi. Yesterday, your statement.....

DR. KRUPASINDHU BHOI : Sir, he is provoking the extremists.

(*Interruptions*)

SHRI SATYASADHAN CHAKRABORTHY : Mr. Sethi, I would like to ask you one question..(*Interruptions*)

DR. KRUPASINDHU BHOI : He, was provoking the extremists.

SHRI SATYASADHAN CHAKRABORTY : Mr. Sethi yesterday said that the assailant, i.e. the culprit was in the Golden Temple. How did he come to this conclusion ? I would ask him—what is the description of the culprit ; have you interviewed the four escorts who were with the DIG ? Why did you alert the Police all over Punjab, if you knew that he was in the Golden Temple ? The question is that you promptly tried to link it only with Akalis to discredit them with a political purpose. If he was in the temple, you take action. But without interviewing the escorts, without giving any description about the criminal, you have said it.

The Chief Minister of Punjab—I do not know who is the astrologer whom he consulted, came to the conclusion that he was there. I would again like to emphasize this : we do not want religious institutions to be used by extremists, armed desperadoes and criminals. Religious institutions are for religious purposes. And the hand of law will definitely reach there, if necessary ; but why do you want the Opposition to say this ? Why can't you say this ? Mr. Sparrow, what do you want ?

Mr. Sparrow says that they do not want to go into the temple. The Police, with military boots, will not go.

It is very good to appease the people of Punjab ; but are you really honest to your purpose ? Do you want this to be told by the Opposition—and then you will enter the premises and say : 'We are holy people ; and the unholy Opposition people asked us to do this!. You want to kill two birds with one arrow. But this is dishonest and wrong politics. If you feel that way, you go. Don't depend on us.

But you cannot do that. The reason is simple : your sympathies are with the extremists.

AN HON. MEMBER : So also with you.

SHRI SATYASADHAN CHAKRABORTY : Unfortunately, we are not involved ; and that is proved by the fact that you created the extremists to discredit the Akali leadership, because in Punjab you are facing a united movement, where the Akalis were also there. And just as in Assam and other places, you channelized the movement along communal lines. And Bhindranwale is your Frankenstein ; and now you are unable to control him. (*Interruptions*) They say India is a secular State. Yes ; the Constitution declares it so ; but are you secular ? There are people who say that Gurbani should be relayed from Jullundur.

Well, we do not support all the religious demands of the Akalis. But what about you ? Already, in India, you have been relaying on religious things. Well, in this House, Mr. Dhandapani will corraborate, in Andhra and Tamilnadu, every morning, the richest and the most powerful God is awakened by, you can say, *Suprabhatam.*

AN HON. MEMBER : What is wrong in it ?

SHRI SATYASADHAN CHAKRABORTY : I do not say right or wrong. When the Sikhs demand that this should be relayed from Jullundur Radio....(*Interruptions*) What is God ? Every morning, He has to be offered sweets and songs so that he can rise from His sleep. I do not mind it. But the question is that you have been doing it and how can you do it in a secular State ? This is your understanding of secularism. They say, what is wrong in it ? There is someting wrong in it. Tomorrow, the Muslims will say, "Every morning you are to relay something from Kuran." How will you resist it ? (*Interruptions*) Now the Sikhs are demanding that Gurubani should be relayed. So secular is the ruling party that they have accepted all the religious demands of the Sikhs. Why, What is your purpose ? Why have you done it ? But, so far as other democratic and political demands are concerned, you do not agree ;

and again, there were tripartite talks with the opposition parties which took place. All the differences were narrowed down regarding Ravi-Beas water, regarding territorial claims and the Chandigarh. It was the responsibility of the ruling party, particularly the Prime Minister to declare it. You did not do it. How do you treat the opposition ? You invite them. You want that we should use our good offices and we did ; and you know even the opposition parties of Haryana were consulted and they agreed regarding Ravi-Beas water and territorial claims. When this agreement was reached, you took a different course ; you wanted to consult your own Chief Minister ; and since he was undergoing an operation. . . (*Interruptions*).

AN HON. MEMBER : What is wrong in it ?

SHRI SATYASADHAN CHAKRABORTY : I say, nothing wrong. You just handle this situation. Do you take things seriously ? Once you reached an agreement with national leaders. When opposition parties in Haryana agreed, you waited because the Chief Minister had gone outside for an operation ; and that is why, Punjab burnt until and unless the operation was completed successfully.

PROF. K.K. TEWARY (Buxar) : That was the propaganda done by your party in the State. (*Interruptions*)

DR. KRUPASINDHU BHOI :**

SHRI SOMNATH CHATTERJEE (Jadavpur) : This is objectionable. I am on a point of order. He called him.**

AN HON. MEMBER :**

SHRI SOMNATH CHATTERJEE : It should be deleted.

MR. SPEAKER : It will be expunged from the proceedings.

SHRI SATYASADHAN CHAKRABORTY : Some of the people are demanding Khalistan and all that. The main issue is not Khalistan. There are some people who are demanding Khalistan. That is also Dal Khalsa. There are people who are operating from outside—Shri Jagjit Singh Dhillon—American based.

AN HON. MEMBER : Mr. Chauhan.

SHRI SATYASADHAN CHAKRABORTY : No, no ; he is also Mr. Dhillon-American based. Shri Ganga Singh Dhillon is American based. Shri Jagjit Singh is also U.K. based. They are operating undoubtedly. I agree with Mr. Charan Singh that foreign forces are interested in de-stabilising our country ; and also all these things show that they are also interested in balkanisation of our country. They don't conceal their aim. You only go through the Press reports.

That is true. But it is not true that most of the mjority of the Sikhs are extremists. It is not true, but decidedly, the Punjab people have certain democratic demands regarding Chandigarh. It was agreed upon that Chandigarh should go to Punjab and adequate financial assistance would be given to Haryana to build a capital of their own in any place in Haryana. Why has this not been implemented ? Why is it that just before the Haryana Assembly election, the Prime Minister unilaterally declared her verdict regarding the use of waters ? Why ? Why is it that when this was referred to the Supreme Court, this was not done ? I would draw your attention to one thing. How was this question of using of river waters in the South solved ? Why is the same process not being applied in the case of Punjab, Haryana and Rajasthan ?

SHRI SOMNATH CHATTERJEE : There, Congress Chief Ministers are there.

SHRI SATYASADHAN CHAKRABORTY : I would ask you this question. There are certain methods in the Constitution—Mr. Tewary, you should read it—there are certain methods in the Constitution,—for the resolution of the disputes regarding river waters, running through different States.

PROF. K.K. TEWARY : I am so happy to learn that you believe in the Constitution.

**Expunged as ordered by the Chair.

SHRI SATYASADHAN CHAKRABORTY : It is not a question of believing ; it is a question of practising.

SHRI SOMNATH CHATTERJEE : It is not your Constitution ; it is the Indian Constitution.

SHRI SATYASADHAN CHAKRABORTY : The difference is that they believe, they do not practise ; we believe and we practise.

There are certain laws as to how the riparian States or the basin States can use the river waters. In the case of the Punjab you are not doing it. Who is responsible for all these things ? I would like to ask this. Why is it that the question of Chandigarh is not settled ? Why is it that the question of 114 villages of Fazilka and Abohar are not settled ? Why are they not being settled on the basis of language and contiguity ? Who is preventing you from settling all these problems ? The Akalis are not demanding Khalistan. They are only demanding more powers to the State Government. Well, we all support them. And exactly for that the Sarkaria Commission has been appointed. But I would like to draw your attention to the fact that the terms of reference have not been announced and that the other persons who will be on the Commission, their names have not been announced. You are killing time. Why are you killing time ? Is it only to hoodwink people ? There should be honesty of purpose. What is this ? What are actually the demands of the Akalis ? I have the Anandpur Sahib Resolution before me and also the 1977 resolution of the Akalis. They demanded that the monopoly houses should come under the public sector. They demanded that the industrial units whose assets are more than Rs. 1 crore should come under the public sector ; they demanded that the consumer goods industry should come under the public sector. We support their demands. These are democratic demands. We support them.

Now, you picture the whole of their demands, and you do not demarcate the extremists and the other demands. There are demands which concern all the Punjabi people not only the Sikhs.

I would even at this late stage appeal to the Government that they should invite the Akali leaders for talks. The more you delay, the more the extremists will gain control. The more you kill time, the more dangerous the extremists will become. Why is it that you are not inviting Mr. Longowal ? He has issued a statement that he was waiting for an invitation. Why are you not talking ? You are issuing statements that you are ready to talk. But you are not ready to talk. Why ? I have a suspicion that you are not interested in solving the problem.

PROF. N.G. RANGA (Guntur) : No.

SHRI SATYASADHAN CHAKRABORTY : They are not interested in solving this problem.

PROF. N.G. RANGA : No, Mr. Chakraborty, no. You are mistaken.

SHRI SATYASADHAN CHAKRABORTY : I have a suspicion that they are against the solving this problem ; they want to utilise it for their purposes.

PROF. N.G. RANGA : You are wrong.

SHRI SATYASADHAN CHAKRABORTY : Just as in Assam, you want to keep the issue burning.

PROF. N.G. RANGA : You are totally wrong.

SHRI SATYASADHAN CHAKRABORTY : Now, unfortunately, under compelling circumstances we also supported the demand for elections. You have utilised the situation to your advantage.

In Punjab also the main aim of the ruling party is to crush the Akalis, their political rivals. That is why, they are using the extremists. That is why, in the name of negotiation, they kill time and do not implement...

PROF. K.K. TEWARY : On a point of order. He has been repeating that we are using extremists. This is absolutely wrong.

MR. SPEAKER : No point of order. You deny it.

SHRI SATYASADHAN CHAKRABORTY : Even at this late stage, I would appeal to the ruling party—let wisdom dawn upon you—to invite the Akali leaders, have talks with them and if the differences are narrowed down, accept the just demands of the Punjabi people, not of the Sikhs or Hindus, because the danger is that because of the poison of communal propaganda the whole of Punjab is getting polarised on communal lines. And the way to treat it is not with bullets but to invite the sober sections, the saner elements, the democratic elements, understand their problems, arrive at a conclusion and implement it honestly. That is what this country demands of you. If you fail to fulfil it, you will be responsible for the shape of things to come.

SHRI ERA ANBARASU (Chengalpattu) : Before I come to the subject, I would like to express my heartfelt condolences and sympathies to the members of the bereaved family of Sardar A.S. Atwal, Deputy Inspector of Police, Jullundur Range.

It is a very tragic incident that a police officer has been shot dead by a Sikh young extremist. It is more than a tragedy because the victim has been shot dead in the holy place and the assailant took refuge in the same Golden Temple. It is unfortunate that the holy place is used for harbouring murderers and anti-social elements. The demand of Akali Dal that Amritsar should be made as a Vetican city loses its credibility by the act of violence. If anti-social activities are allowed to be carried on there and if people like the DIG of Police are being killed, then it cannot be a holy city but an unholy city.

I listened to the speeches of Chaudhari Charan Singh, a senior leader in the opposition and others, very patiently. They were accusing the leadership for each and everything. Here I am reminded of a small story. It is a very interesting story. There were two kings—King Mahendra and King Rajendra. King Mahendra was a very good man. He was interested in solving the problem of the people. He was interested in the welfare of the people. But his neighbour king was more worried about grabing the territory of King Mahendra. So, for every happening, he used to blame King Mahendra. One day when he was very busy reading something, he received a telephone call from a lady doctor breaking the news to him that his wife became pregnant. Then, immediately he said that that was because of King Mahendra. That is the fear complex in the minds of the leaders of all the political parties here. They want to accuse our leader and Congress Party for everything. At the same time, they are not prepared to appreciate the genuine steps taken by this Government to solve the problem.

I would like to point out here that the demands of the Akalis are not the Popular demands. Having failed in the Assembly elections, they have resorted to this criminal activity. I would like to point out how many seats they were able to capture in the Assembly elections :

Congress (I)	.....	66
Akalis	....	37
CPI	....	7
CPM	....	4
BJP	....	1

So, the demands of Akalis are not popular demands. Having failed in the ballot, they have resorted to bullet. Therefore, the Government should be very vigilant and they should take serious action against any violence resorted to by the Akalis or by any other extremist.

17.41 hrs.

[MR. DEPUTY-SPEAKER *in the Chair*]

52 per cent of the Sikhs cannot demand a separate State, a separate country. 48 per cent of the Hindus are also there. I would like to recall the preachings of ten Gurus. Each and every Sikh family has a Hindu. I understand, one of the ten Gurus of Sikhs has preached that each Hindu should donate a Hindu boy or a girl to a Sikh family and the Sikhs should adopt a Hindu as their own son or daughter. That is the brotherhood the Gurus preached, that is the unity they wanted. I can assure you, there

is not even a single family who can claim themselves as 100 per cent Sikh. Hindus and Sikhs are combined, they are part and parcel of that particular State and, therefore, if you take any lenient step in considering the demands of the Akalis, then my AIDMK brothers and DMK brothers are waiting for an opportunity in Tamil Nadu to ask for Dravidstan, Telangana affair will creep in.... (*Interruption*).

MR. DEPUTY-SPEAKER : Mr. Anbarasu, they have already given up the demand for Dravidstan.

SHRI ERA ANBARASU : Thanks a lot. My apprehension is that they should not be reviving it, they should not have an opportunity to do like this. Therefore, whatever may be the case, after committing so many offences, they should not be allowed to hide themselves in the religious places. Tomorrow I can also commit an offence and I can take assylum in my own constituency in the temple of Kanchi Kamakshi. Therefore, the Government should come forward with strong measures to raid the religious homes, however sacred they may be. Maybe a Sikh temple, maybe a mosque or may be a Hindu temple, the Government should not hesitate.

One of the demands of Akalis is about Indian Gurdwara Act. If this demand is also conceded, then it is nothing but opening the Pandora's Box. The Hindus will also then ask for their own Act, Muslims will come forward, Christians will also demand. Therefore, in the interest of national integration, you should not consider even this demand also.

I really appreciate the steps taken by the Home Minister in having a continuous dialogue with the Akali leaders and the genuine efforts to solve the problem. I know many of the religious demands have been accepted and even about the sharing of waters, the Prime Minister was very kind enough to recently make an announcement that 58 per cent of the water will go to Punjab and 42 per cent to Haryana. After knowing all this, I do not know how our Opposition friends come forward to accuse the leadership, to accuse the Government of not taking interest in solving the problems of this nature.

Therefore, this problem is a very delicate one and I really appreciate the attitude taken by the Government, but my appeal would be that you should be very strong to deal with specially the criminals. Our Prime Minister has shown monumental patience. Even in Assam we have seen the genocide, mass killings, arson, looting and what not. Even when a very unhappy incident took place, our Prime Minister stood like a rock, she never got excited or emotional, but she only wept, and she was really interested in solving the problem rather than controlling it. Therefore, to solve such a sensational issue you should be very courteous and without injuring any section of the society, their problem should be solved.

I would like to appeal to the Sikh people. They are known for their heroic deeds. They have created history by defending our borders, by taking part in the political struggle, by fighting during our freedom struggle and they are known for their valour and wisdom. They are flourishing throughout the country and we cannot confine them to a particular place. We know that our honourable President, Giani Zail Singh, is occupying the highest position in India and here, we can say that our own Lok Sabha Secretary, Mr. Rikhy, is also occupying a good position. (*Interruptions*). There is nothing to be laughed at. That is how they are occupying very good positions. (*Interruptions*). Our Minister, Mr. Buta Singh, is also there.

(*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER : You can say, 'many are there' instead of giving their names.

SHRI ERA ANBARASU : I can mention a number of Sikhs who are occupying good positions.

MR. DEPUTY-SPEAKER : You should have taken permission to mention the names.

SHRI ERA ANBARASU : Therefore, I

appeal to my Sikh friends to search their hearts. Let them come to realities. Let them not confine themselves to a particular area. They should come forward to solve the problem giving a good impression in the interests of the nation and in the interests of national integration.

AN HON. MEMBER : Thanks to Indira Gandhi.

SHRI ERA ANBARASU : Mrs. Indira Gandhi is very correct. (*Interruptions*). Here I would like to point out that she had very successfully conducted the NAM Conference and the prestige of our country has gone very high in the eyes of the world. But our Akali friends have chosen to demonstrate near the UNO. After all, this is the problem which can be solved within our country. There are different forums for this and the problem can be solved very easily. But unfortunately they have taken this problem outside and they have demonstrated before the UNO. Therefore, I would appeal to those friends to resume negotiations. Our honourable Home Minister has already said that the doors are open and therefore, at any time they can resume negotiations and the problem can be solved very easily.

Sir, I would like to point out here—this is the second time I am pointing out—that our Prime Minister has rightly said :

> "The hood of the cobra is spread and the humankind is watching with frozen fear with hope against hope that it will not strike."

She said this referring to the nuclear war in her Key Note Address at the NAM Conference.

I would like to remind our Prime Minister that the cobra outside is not so dangerous as the cobras inside our country,** we should be more careful about these cobras. Let us join together, work together.

AN HON. MEMBER : **may be deleted.

MR. DEPUTY SPEAKER : I will go through the record. Mr. Anbarasu, please restrict yourself. You must use words in a dignified manner. Your name is Anbarasu which means a kind man.

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF HOME AFFAIRS (SHRI P. VENKATASUBBAIAH) : Is cobra unparliamentary ?

MR. DEPUTY-SPEAKER : He said, something else. That is why I have said that I will go through the record. I never said it is unparliamentary. In what context it has been used, I must go through the record. And then I will do the needful. Chair will always be impartial. You need not worry.

SHRI A.K. ROY (Dhanbad) : You must investigate whether cobra is there or not.

SHRI ERA ANBARASU : I would like to make sincere appeal to my friends—let us work together, to take out the teeth of the cobra if not the venom.

श्री धनिक लाल मंडल (झंझारपुर) : उपाध्यक्ष महोदय, 25 अप्रैल के दिन 11 बजे पुलिस के एक डी० आई० जी०, श्री अवतार सिंह अटवाल, की स्वर्ण मंदिर के दरवाजे पर अमृतसर में किसी अज्ञात व्यक्ति, जैसा कि बताया जाता है कि वे सिख थे, द्वारा हत्या कर दी गई। इसके पहले भी इस तरह की अनेक घटनायें घटी हैं। लाल जगतनारायण की हत्या से लेकर निरंकारी बाबा की हत्या के बाद और अब श्री अवतार सिंह अटवाल की हत्या को लेकर काफी घटनायें घट चुकी हैं, जो कि सौ के लगभग हैं। इसके संग-संग बम विस्फोट की भी घटनायें घटी हैं। ऐसा लगता है कि पंजाब में विधि-व्यवस्था की स्थिति लगातार बिगड़ती जा रही है। विधि-व्यवस्था पंजाब की सरकार के काबू के बाहर हो गई है। पंजाब में इस तरह की स्थिति पैदा होने के कारण क्या हैं, इसमें हम लोगों को जाना चाहिए।

MR. DEPUTY-SPEAKER : Hon. Members, Members from each party and the

**Expunged as ordered by the Chair.

ruling party are speaking. I want to know the sense of the House, how much time each Member should take ?

AN HON. MEMBER : Ten minutes.

SHRI DHANIK LAL MANDAL : Fifteen minutes.

MR. DEPUTY SPEAKER : All right. Let it be between ten and fifteen minutes. We fix it at twelve minutes.

SHRI RAM JETHMALANI (Bombay North West) : You gave fifty minutes to Choudhary Charan Singh.

MR. DEPUTY SPEAKER : All right, it will not be fair on my part to restrict the time now, when we have allowed other speakers to speak for more time. You may leave it to the Chair. We have got to restrict the time. We must be lenient as we have been lenient to other speakers. Therefore, I do not want to restrict the time. I would request, as fifteen minutes is quite reasonable, therefore, each speaker will hereafter, not speak for more than fifteen minutes.

SHRI CHITTA BASU (Barasat) : Even the time of 15 minutes should not be restricted, in any case.

MR. DEPUTY-SPEAKER : Even if the time is restricted to 15 minutes for every speaker, it will go up to 9 O'clock. We have got to restrict the time. Even our life is restricted. At least after 100 years of life, we have to die. We have got to restrict the time. Then, the Minister will have to reply.

SHRI CHITTA BASU : At least, the time of 15 minutes should not be restricted, in any case.

MR. DEPUTY-SPEAKER : No hon. Member will take more than 15 minutes.

SHRI DHANIK LAL MANDAL : Sir, 5-minutes time is already lost. You please see the watch. My time should be counted afresh.

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF HOME AFFAIRS (SHRI P. VENKATASUBBAIAH) : You may kindly give an indication as to when the Home Minister will be able to reply.

MR. DEPUTY-SPEAKER : One request is that the hon. Members must be present when the Minister replies. I am prepared to sit even up to 12 O'clock mid-night. But when the Home Minister replies to the debate, it is very horrible.

DR. SUBRAMANIAM SWAMY (Bombay North East) : Then, the Prime Minister should also be present at that time. Why are Members only present ?

MR. DEPUTY-SPEAKER : Please listen to me. We are going to give 15 minutes maximum to every speaker. According to the schedule, I think, the Home Minister will have to reply at 8.30 p.m. or 9.00 p.m. Even if I allow all those speakers, it will go up to 9 O'clock and if by that time hon. Members do not conclude, I will call the Home Minister.

SHRI HARIKESH BAHADUR (Gorakhpur) : No, Sir. That is not the point.**

MR. DEPUTY-SPEAKER : You cannot question my ruling.

SHRI HARIKESH BAHADUR :**

MR. DEPUTY-SPEAKER : You are spoiling the situation. I am only helping you.

SHRI HARIKESH BAHADUR : I had already suggested that the motion should be taken up at 12 Noon. Everybody feels that this is a very wrong time—4 O'clock.

SHRI P. VENKATASUBBAIAH : This is the decision of all the Parties. It has been decided in the Business Advisory Committee meeting.

SHRI HARIKESH BAHADUR : I am a member of that Committee. But I was

**Expunged as ordered by the Chair.

never called for the meeting of the BAC. He was also a Member. He was also not called.

MR. DEPUTY SPEAKER : This is the position. Mr. Mandal, your time starts just now. You have got to finish by 6-15 p.m.

श्री धनिक लाल मंडल : उपाध्यक्ष महोदय मैं यह कह रहा था कि 25 अप्रैल के 11 बजे स्वर्ण मन्दिर के दरवाजे पर पुलिस के एक वरिष्ठ अधिकारी की हत्या हुई। उसके पहले बलबीर सिंह संधु का एक बयान या यह कहना चाहिए कि एक इन्टरव्यू आया, उसके पहले इस तरह की कितनी घटनायें हुई, लाला जगतनारायण की हत्या हुई, दूसरी घटनायें हुई, यह जो बिगाड़ विधि-व्यवस्था में पंजाब में लगातार पैदा हो रहा है और सरकार उस पर काबू पाने में लगातार विफल होती जा रही है---इस पर हमें गम्भीरता से विचार करना होगा।

18 hrs.

महोदय, इससे बड़ी चीज़ और क्या हो सकती है—अपने को नेशनल कान्सिल आफ़ खालिस्तान का जैनरल सैक्रेटरी कहने वाला बलबीर सिंह संधु बयान देता है, अखबार वालों को इण्टरव्यू देता है, देसी और विदेशी पत्रकारों से मिलता है, अपना सारा कामकाज वहां से चलाता है, आफिस चलाता है और यह सरकार उसको रोकने में सर्वथा विफल रही है, विफल हो चुकी है।

इससे बड़ी घटना संसार में और क्या हो सकती है। दुनिया के इतिहास में कोई ऐसी घटना बता दें मंत्री जी अपना ज़बाव देते वक्त कि देश का एक राष्ट्रद्रोही और उस संगठन का आदमी जो अनलाफुल करार कर दिया गया है, वह आदमी आपरेट करे उसी देश की धरती से और लगातार आपरेट करता चला जाए और उसको गिरफ्तार नहीं किया जाता। ऐसी कोई नजीर मन्त्री जी बताएं। इसी तरह से मैंने बतलाया है कि यह सारी घटना जो पंजाब में हो रही है, तो पंजाब की स्थिति के बारे में अब कोई शक व शुबाह नहीं है कि सरकार बिलकुल विफल हो चुकी है। क्या कारण हैं इसके ? यहां बहुत सारे कारण गिनाए गए हैं और सरकार की ओर से और उस पक्ष की ओर से कुछ कारण गिनाए जाएंगे, जिनमें यह कहा जाएगा कि वहां जो उग्रवादी, आतंकवादी और अतिवादी तत्व हैं, ताकतें हैं, उनकी वजह से ये सारी घटनायें होती हैं और स कार इसलिए विफल हो रही है काबू पाने में क्योंकि उनको सेंक्चुएरी मिलती है, शरणस्थल मिलता है धार्मिक स्थानों में। इस तरह से सरकार कह सकती है और शायद गृह मंत्री जी यही कहेंगे लेकिन क्या इस तरह का तर्क दिया जा सकता है और यदि सरकार ऐसा तर्क देती है तो जैसा माननीय चरणसिंह जी ने कहा है कि सरकार को इस्तीफ़ा दे देना चाहिए। सरकार को सत्ता में रहने का कोई अधिकार नहीं है यदि सरकार का तर्क यह है कि कुछ लोग इस तरह की कार्यवाही कर रहे हैं और सरकार उनको काबू में करने के लिए इसलिए विफल है क्योंकि उनको धार्मिक स्थानों में शरण मिलती है। तो फिर सरकार के रहने की कोई जरूरत नहीं है।

यह भी कहा जाएगा कि अकाली आन्दोलन की वजह से इस तरह की स्थिति पैदा हो गई है। महोदय, इस देश में आन्दोलन करने का राजनीतिक दलों को अधिकार है। यह हमारा संवैधानिक अधिकार है लेकिन इसमें शर्त सिर्फ यह है कि यह जनतांत्रिक होना चाहिए और शांतिपूर्ण होना चाहिए। आंदोलन जनतांत्रिक और शांतिपूर्ण हो, यही एक शर्त है और आन्दोलन करने पर कोई प्रतिबन्ध नहीं है। यदि हिंसा की वात कही जाती है, तो सरकार की ओर से जो हिंसा होती है, उसका जबाव क्या है मंत्री जी के पास। मैं गृह मन्त्री जी को एक उदाहरण देना चाहता हूं। जब अकालियों का आन्दोलन शुरू हुआ और उन्होंने मार्च किया तो मैं भी उसे देखने के लिए गया था। जो सत्या-

ग्रही थे, उनको बहादुरगढ़ की पुरानी जेल में रखा गया और वहां पर अकाली सत्याग्रहियों की क्या दुर्गति हुई, इसके बारे में नाडार साहब ने इस सदन में बताया था। उनके साथ जो व्यवहार हो रहा था, उसकी चर्चा उन्होंने यहां की थी। क्या सत्याग्रही क्रिमिनल्स हैं? उनके साथ क्रिमिनल्स जैसा व्यवहार क्यों किया गया। अगर सरकार चाहती है कि हिंसा की, कत्ल की और खून की राजनीति न हो, तो यह आवश्यक है कि जो शांतिपूर्ण ढंग से आन्दोलन कर रहे हैं, उनके साथ सद्व्यवहार हो। जो रास्ता-रोको आन्दोलन हुआ था, उसके साथ सरकार का क्या रुख रहा। यही सरकार रास्ता-रोको आन्दोलन दूसरी जगहों पर चलाती है। अगरतला में रूलिंग पार्टी के लोग, इस सरकार के लोग रास्ता-रोको आंदोलन करते हैं और अगर यहां रास्ता-रोको आंदोलन का ऐलान होता है, तो उसके पहले हम लोगों को खबर है, सूचना है कि श्री दरबारा सिंह, जो वहां के मुख्यमंत्री हैं, उन्होंने ऐलान किया शूट एट साइट का। क्या यह प्रोवोकेशन नहीं है और यदि यह प्रोवोकेशन नहीं है, तो गोलीबारी हुई नहीं, हत्याकांड हुआ नहीं, उसके पहले से बचाव की तैयारी इसे नहीं कहा जाएगा। इस तरह से ये लगातार घटनाएं हो रही हैं कि जो शांतिपूर्ण ढंग से, कान्सटीट्यूशन मेथड्स से, डेमोक्रेटिक मेथड से जो आन्दोलन करना चाहते हैं, उनके साथ कड़े से कड़ा व्यवहार हो। सरकारी हिंसा क्या हिंसा नहीं है और क्या इस तरह के कामों से सरकार हिंसा को बढ़ावा नहीं देना चाहती है। यह सरकार कहती है कि शरण-स्थलों में ऐसे लोग हैं। गृह मन्त्री जी ने कहा है और दरबारा सिंह जी ने भी कहा है कि वे इस बात को पहले से जानते हैं। अपने बयानों में उन्होंने यह कहा है।

मुख्य मंत्री पंजाब तो जानते थे। वे पहले से कहते थे कि क्रिमिनल्स का वह गुरुद्वारा शरण स्थल बना हुआ है। अब ये कहते हैं कि कत्ल करने वाला आदमी टेम्बल से निकल कर आया और उसी की ओर भागा जिसको कि मंत्री जी इसका शरण स्थल बताते हैं। महोदय, क्या गृह मंत्री जी यह बतायेंगे कि क्या उस आदमी को पुलिस आइडेन्टिफाई करती है? क्या वह उसका पूरा हुलिया देने को तैयार हैं?

महोदय, दोनों ही बातें कही जाती हैं। जो अकाली दल के लोग हैं, एस० जी० पी० सी० के लोग हैं वे इस बात से इन्कार करते हैं। मैं यह भी नहीं कहता कि गृह मंत्री जी का कहना सही नहीं है और एस० जी० पी० सी० के लोगों का कहना सही है या गलत है। लेकिन बिना तहकीकात किये गृह मंत्री जी ने जो वक्तव्य दिया है, उसका क्या कारण है? गृह मंत्री जी इस बात को पहले से जानते थे फिर क्या कारण है कि उस पुलिस अफसर को प्रोटेक्शन नहीं मिली? अगर गृह मंत्री जी के पास कोई लिस्ट है जिसमें कि यह लिखा है कि किन किन लोगों को मारना है तो फिर गृह मंत्री जी को मालूम होने पर भी उन्होंने अपने वरिष्ठ पुलिस अधिकारी को बचाने के लिए क्या किया? यह मेरा प्रश्न गृह मंत्री जी से है। यदि ऐसी कोई सूची है जो आपकी जानकारी में है और आप कहते हैं कि उसी के अनुसार उनकी हत्या हुई तो आप उस पुलिस आफिसर को प्रोटेक्शन देने में क्यों विफल रहे?

महोदय, माना कि यह गुरुद्वारा है, इसमें पुलिस नहीं जाती। लेकिन क्या इनकी इन्टेलिजेंस के लोग भी वहां नहीं जाते होंगे? इनकी इन्टेलिजेंस के लोग जाते होंगे। फिर इनको इस बात की जानकारी क्यों नहीं है कि वहां कौन-कौन लोग हैं जो कि क्रिमिनल्स हैं, एन्टी सोशल एनीमेंट्स हैं? अगर इनको यह भी मालूम नहीं है तो इसका मतलब यह है कि इनका इन्टेलिजेंस भी फेल हो गया है। अगर यह फेल हो गया है तो सरकार को अपनी विफलता को भी बताना चाहिए।

एस० जी० पी० सी० के अधिकारियों ने इनको कई बार कहा कि अगर आप यह कहते हैं कि हमारे यहां क्रिमिनल्स हैं तो उनकी हमें सूची दीजिए। आपने उनकी सूची उनको क्यों नहीं दी?

एक माननीय सदस्य : कई बार उनको लिख चुके हैं।

श्री धनिक लाल मंडल : यह नहीं दे रहे हैं। लेकिन फिर भी, इन सब बातों के बावजूद ये यह बात कहते हैं। इससे क्या पता चलता है? इसमें दो राय नहीं हैं कि सरकार पूर्ण रूप से विधि-व्यवस्था कायम करने में विफल रही है। इसका कारण यह है कि, जैसा कि श्री चक्रवर्ती साहब ने कहा, यदि यह सत्य है कि यह एक्सट्रीमिस्ट्स लोगों का काम है तो इन एक्सट्रीमिस्ट्स लोगों को संरक्षण कौन दे रहा है। क्या लोंगोवाल और एस० जी० पी० सी० के लोग संरक्षण दे रहे हैं? यह आप लोग हैं, रूलिंग पार्टी के लोग हैं जो कि संरक्षण दे रहे हैं। इसका कारण मैं आपको बता रहा हूं। अभी तक उन्हीं को महत्व दिया जा रहा है जो कि एक्सट्रीमिस्ट्स बताये जाते हैं। जितनी भी घटनाएं हुई हैं, उनके लिए जो भी अधिकारी मिलने गये हैं, वे उतनी देर लोंगोवाल से बात नहीं करते जितनी देर या उस से भी अधिक देर भिंडरावाला से बात करते हैं। कौन महत्व दे रहा है? यह बहुत ही गम्भीर बात है और गृह मंत्री जी को इसका जवाब देना चाहिए कि इसका क्या कारण है?

महोदय, जो स्थिति पंजाब की हो गई है, उसका जो सबसे बड़ा कारण है वह है विधि-व्यवस्था के बिगाड़ का। मुख्य प्रश्न यही है कि विधि-व्यवस्था बिगड़ गई है।

विधि-व्यवस्था बिगड़ने का सबसे बड़ा कारण कांग्रेस आई के अंदर का द्वंद्व है। इस लिए यह ठीक है जैसा कि चौधरी साहब कह रहे थे कि मुख्य मंत्री कुछ भी करने में अक्षम हैं। मुख्यमंत्री विधि व्यवस्था कायम रखने में स्वतंत्र नहीं हैं। दिल्ली वाले वहां हुक्म चला रहे हैं, मुख्यमंत्री नहीं चला रहे हैं। मुख्यमंत्री में अब विधि व्यवस्था कायम रखने का दम नहीं रह गया है। दरबारा सिंह का कोई नियंत्रण नहीं रह गया है। आप देख लीजिए। तीन चार दिन पहले जो घटना घटी है। राजीव गांधी वहां गए और वहां के लोग यहां आए, उसको देख लीजिए। यह पंजाब की बात नहीं है, पूरे देश की बात है। पूरी जगह अस्थिरता और अनिश्चितता पैदा की जा रही है। इस बात का जवाब दीजिए। आज जो पंजाब की स्थिति है उसमें रूलिंग पार्टी का क्या यही फर्ज रह गया है कि आपस में मार करे। इस बात का जवाब दीजिए। दरबारा सिंह स्थिति को नहीं संभाल पाएंगे।

दरबारा सिंह जी ने कई बार बयान दिए और कहा कि हम स्थिति पर काबू पा लेंगे। इन लोगों को हम समाप्त कर देंगे। लेकिन क्या हुआ? इसके पहले भी उन्होंने कई कदम उठाये थे। उन्होंने कदम उठाया कि हम सबसे हथियार ले लेंगे। फिर गोल्डन टैंपल के चारों तरफ नाके बंदी कर दी। लेकिन उनका कोई भी आदेश 24 घंटे से ज्यादा नहीं चला। आदेश उठा लिया गया। मंत्री जी बतायें कि क्या कारण है? मुख्य-मंत्री के बस की बात नहीं रह गई है। इसलिए मैं सरकार से कहना चाहता हूं कि इस ओर विशेष ध्यान दें।

विधि व्यवस्था के बिगड़ने में सारी चीजें कंट्रीब्यूट कर रही हैं और सरकार तमाशबीन बनी हुई है। इस स्थिति को संभालने का क्या उपाय है। यह सबसे बड़ा प्रश्न है। इसका क्या निदान है? मेरी समझ से सबसे पहला निदान यह है कि रूलिंग पार्टी के लोग अपने ऊपर जाप्त करें। दूसरों को उपदेश देते हैं कि राजनीतिक लाभ न उठायें लेकिन स्वयं हर बात में राजनीतिक लाभ उठाना चाहते हैं। इस तरह से वे किसी नतीजे पर नहीं पहुंच सकेंगे।

श्री एम० रामगोपाल रेड्डी (निज़ामाबाद) : यह बिलकुल गलत है।

श्री धनिकलाल मंडल : मैं उदाहरण देता हूं। जब अकाली दल के लोग राजनीतिक

और धार्मिक मांगों को साथ-साथ उठा रहे थे— उस वक्त विरोधी पक्ष के लोग अपील कर रहे थे कि इन दोनों मांगों को एक साथ मत लीजिए। लेकिन इन्दिरा सरकार ने क्या किया ? सरकार ने यह कहा कि पैकेज डील होगा। आज से तीन महीने पहले गृह मंत्री जी ने कहा कि धार्मिक मांगों से हमारा कोई झगड़ा नहीं है। हम उनके साथ हैं। फिर उस वक्त क्यों नहीं माना गया। उस वक्त इसलिए नहीं माना गया कि हम सारी मांगों को एक साथ हल करेंगे। जब फरवरी महीने में इनकी वार्ता टूट गई तो शीशगंज गुरुद्वारे में जाकर धार्मिक मांगें मानने का ऐलान कर दिया। पार्लियामेंट में नहीं किया।

पार्लियामेंट की बजाय रकाबगंज गुरुद्वारे में एलान हुआ। सबसे जरूरी बात यह है कि इस पंजाब की घटना से खिलवाड़ न किया जाए क्योंकि यह स्थिति बहुत ही विस्फोटक है। यह अलगाव-वाद और संप्रदायवाद की प्रवृत्ति है। यह देश के लिए खतरनाक है इसलिए इसको राजनीति से दूर रखा जाए। सरकार से मांग करूंगा कि एक तरफ तो मजबूती से ऐसे अराजक तत्वों से निपटे जो अराजकता फैला रहे है और दूसरी तरफ बातचीत के दरवाजे बंद नहीं करने चाहिए। सभी से इसमें मदद लेनी चाहिए। एक बात और कह देना चाहता हूं। बातचीत तो करीब-करीब हो चुकी थी। कोई बहुत ज्यादा फर्क नहीं रह गया था। लेकिन, पता नहीं सरकार ने क्यों बातचीत तोड़ दी ? यह सरकार ही बता सकती है। अगर सरकार लोंगोवाल से या अकालियों से पंजाब की स्थिति पर बातचीत नहीं करती है तो सुधार होना बहुत ही मुश्किल है। इसलिए, मैं सरकार से जोरदार मांग करता हूं कि कोई लाभ उठाने की नीयत न रखें। इस मामले को हल करने के लिए विरोध पक्ष के और अकाली पक्ष के लोगों को बुलाया जाए। चंडीगढ़ के मामले में अवार्ड हो चुका है। उसका ऑनर किया जाए। हरियाणा को उसके एवज में पैसे दिए जाएं। जहां तक अबोहर, फ़ाजिलका और दूसरे गांवों का सवाल है, उनके लिए एक कमीशन बनाया जाए। वह एक निश्चित अवधि के अन्दर अपना फैसला दे। इसी तरह पानी का मसला, जिसके बारे में एग्रीमेंट रह गया था उसको भी इस कमीशन को रेफर किया जा सकता है। इन्टरीम अवार्ड देने के लिए उसे कहा जा सकता है। इसमें कोई हिच नहीं होगी।

मैं सरकार को चेतावनी देना चाहता हूं कि समय बहुत कम है। समय को यदि इसी तरह हाथ से निकलने दिया और कोई समझौता नहीं किया तो जो स्थिति होगी उसके लिए आप और हम सभी मिलकर पछतायेंगे।

SHRI F.H. MOHSIN (Dharwad South) : Mr. Deputy-Speaker, Sir, I rise here to oppose the adjournment motion moved by the opposition Member to discuss failure of the Government in meeting the situation in Punjab State.

At the outset, I would like to mention that I am of the view that the Government have been taking steps to pacify the agitating people of Punjab and to restore normalcy in the whole of the State, but unfortunately, they have not been successful so far.

The killing of police officer of the status of a DIG may not be a surprise to the Punjabis there, because some reports had appeared in the Press a week back that a decision was taken in the Akali meet to punish those Police Officers who arrested some people, who killed some people in the *Rasta Roko* Programme.

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE (New Delhi) : It was not in the Akali meeting.

SHRI F.H. MOHSIN : That is my information. I am subject to correction.

And, Sir, the meeting was held on the Baisakhi day.

SHRI RAM GOPAL REDDY : An auspicious day.

SHRI F.H. MOHSIN : Yes, an auspicious

day. Volunteers amounting to 30 thousand people gathered in the Amritsar temple and took a vow to sacrifice anything, even their lives, to secure independence for Punjab and to kill and those persons who came in their way. That was in the press also. I will just quote extracts of what appeared in the Press :

> "In Punjab, some Police Officers are marked for killing. According to Akali sources, the policemen responsible for the death of volunteers who participated in the Rasta Roko Agitation on April 4, would be killed in future confrontations. And with Shahid Jatha, the future course indicates, it would be a blood for blood. Volunteers of its 'Hit Squad' are sure to precipitate violence.
>
> "On April 14, Baisakhi Day, thousands of Armed Akali volunteers took a solemn vow to remain in constant preparedness for doing anything for the Akali Dal, including an armed struggle, if necessary.
>
> Thirty thousand volunteers took pledge administered by the Akali Dal Chief, Sant Harcharan Singh Longowal. And all other branches of the Akali Dal and the youth wings participated in it. Pamphlets were distributed by Babbar Khalsa Dal, in which it was stated that nothing less than Khalistan would satisfy the agitation of the Sikhs. The Sikhs were exhorted to take up arms against the Government to get their object fulfilled."

This has appeared in the Press and this has taken place in Punjab.

AN HON. MEMBER : Which paper is this ?

SHRI F.H. MOHSIN : It is an extract from the WEEKEND magazine. It must have appeared in other magazines also.

Sir, with this information, I don't think Punjabis are shocked at the killing of the Police Officer there and many others may follow. Such is the situation in Punjab now.

Sir, I expected all the people, irrespective of the Parties, would find a solution for this. This is not a party question. This is a national question. This is a question of the integrity of the nation. But I am sorry that even a leader like Choudhary Charan Singh sought only to find out loopholes or the defects in our Party leaders rather than to put forth a viable solution or giving a practical suggestion. He went on stating about the history of the Indian National Congress and how our people acted before Independence and after Independence, how the All India Congress organisation colluded with other communal organisations to win some elections and all those things. Well, some of us are not happy over certain matters. But this is not an occasion for all this. Now Punjab is burning and we are pointing out the defects of the All India Congress Committee and the Government leaders and those who did commit mistakes. Sir, mistakes might have been committed. Mistakes have been committed by all. Even Choudhary Charan Singh is no exception. What did he do in the election campaign in 1977 ? They colluded with all communal elements, both Muslim and Hindu communal elements. They won the elections at that time with the help of communal elements. They also ruled for two years. People have not forgotten it. We are not to learn this lesson from them.

Instead of talking on these lines, I would like to appeal to people on that side to cut across party lines, to stand united and suggest concrete measures i.e. as to how to meet the situation, how to improve the situation in Punjab and how to persuade these 30,000 youths who have taken this oath. I do not say that all Punjabis are like these youths. Some youths may be of that view. And some foreign elements may be encouraging these elements. Some foreign countries are out to do such a kind of mischief. But such young elements may be few in number. I do not think the whole of Punjabis are like that, or are asking for Khalistan. I would request all the Opposition leaders also to find a solution.

The former State Home Minister, Mr. Dhaniklal Mondal has also suggested that the Opposition will cooperate in solving this problem. I would request the Home Minister to take the good offices of all the political parties and find out a solution. I also agree, with regard to the religious demands which were unilaterally accepted, that it should not have been done. There should have been a package deal relating to all demands. And they could have tried for a compromise. Instead of doing that, we have committed some mistake, which should be corrected, and I would request the Home Minister, Prime Minister and other leaders here to take the Opposition leaders into confidence—because this is a national problem—and try to bring about a solution and understanding, so that they would give up this Khalistan movement and live like brothers, as before. It is not a question of Khalistan alone. There will be many more later, and it will start the process of disintegration of the country. I would appeal to the people here not to talk on party lines, but to find out a viable solution to the problem.

SHRI RAM JETHMALANI : Mr Deputy Speaker, Sir : Though a Motion of Adjournment is not the best way of discussing a national tragedy, yet through you, Sir, I must thank the hon. Speaker for having at last for the first time during his tenure, strained the rules to accommodate an Opposition demand.

MR. DEPUTY SPEAKER : May I correct you ? This is the second time.

SHRI RAM JETHMALANI : My gratitude is, therefore, greater.

Speaking for myself and for this my friends in the Opposition, my own colleagues will pardon me as I propose to strike a somewhat different note. If the purpose of this Motion is to suggest that there has been a failure of the Government of India to ensure that religious places like Golden Temple, Amritsar etc. are not used in a manner to aggravate the law and order situation, in all conscience, I cannot convict this Government of the charge.

I am not here to suggest that the tragedy which we are discussing, viz. the unfortunate murder, is the direct result of any failure, constitutional or legal, on the part of this Government.

Sir, I go further. Adjournment Motions, when passed, have two implications : one is the implication that it is a censure of the Government.

I do not propose to censure the government because I believe that there is no case to censure the government as government. But there is another implication of passing the adjournment motion : that is it is evidence of the serious view which the majority of the Floor takes regarding the matter. It is in this sense that I propose to support this adjournment motion; and I appeal to hon. Members on the Treasury Benches in this spirit to pass a unanimous resolution, because there is no doubt that the Punjab tragedy requires to be very seriously considered by every section of the House.

Gen. Sparrow stated that speeches are being delivered by members of the opposition without suggesting any solution of the problem. I wish to start my address by suggesting five principles which must be applied before any solution of this tragedy can be found. In my opinion, it will be the blackest day for India, it will be the blackest day for Hindus as well as Sikhs if this spirit of hostility which has already come about accentuates itself and Hindus and Sikhs become enemies or there is a parting of ways. This problem can neither be solved by surrender to anarchy nor it can be solved, as Shri Charan Singh suggested, by literal, vigorous and ruthless enforcement of the law. Love, more love and still more love is the solution of the Punjab problem. The thrid principle is that there is an urgent necessity of solving the issues which have brought about this situation in Punjab. I am not one of those who believe that the Sikhs' demands, whether religious or political are demands which can be poohed-poohed or dimissed out of hand. These demands must be seriously investigated and an attempt must be made to deal with them squarely. But one thing I must concede that the demand for a Sikh State is not a demand of the Sikh community ;

those who have, time and again, talked about a Sikh State do not represent the Sikh community; they are not even a minority of the Sikh community; they are not even an insignificant minority of the Sikh community; they are insignificant individuals whom we have converted into heroes by publicity and other unfortunate acts of commission and omission which I do not wish to refer to because I believe that this problem can be solved not by harsh words but by compassion and love.

SHRI M. SATYANARAYAN RAO (Karimnagar) : I am happy about it.

SHRI RAM JETHMALANI : The fourth principle which must be borne in mind is that a strong and united Punjab is a must for the security and defence of India; and no sacrifice is too great to achieve this end. I am prepared to go further and say that when a dispute arises between a big brother and a young brother, perhaps some sacrifice will have to be made by the big brother to satisfy even playful demands of the young brother. I want to remind the House and my Sikh friends of a Sikh prescription which must be applied to this Sikh problem. When the great Guru of the Sikhs was faced with the problem of survival of the very *Panth*, the solution that he forged was that the purest Sikh must sacrifice himself and the purest Sikh can only be the Guru of the Sikhs and the Guru sacrificed himself. We need a few people in this country; maybe one, maybe two, maybe three who are prepared to sacrifice themselves for love and affection. Go to Punjab.

Sit there, Sir, and apply the soothing honey of love and affection on the smarting wounds which the people of Punjab have started inflicting upon one another.

A cold blooded murder, of any one, the humblest, the meanest is at all times and in all circumstances a crime, grave as well as foul. In this case the victim of this crime was a high officer of the Police. He represented the authority of the State and majesty of the law. And, the bullet that shot down Mr. Atwal was not a bullet that merely ended the mortal life of a human being; it brought down the whole edifice of law and order and brought down the very structure of civilised existence in this country. The gentleman who was killed offered no provocation to anyone. He was doing his duty; he was doing his duty under the law. The gentleman seemed to have an extraordinary character considering that he was a Police officer; he showed compassion, he showed piety, he showed religious fervour and he showed respect and reverence not only for his own religion but the religion of one who finally shot him down. He emerged from a temple and was carrying the *Karaprasad* in his hand, which is supposed to be the blessings of the Gurus, and which is supposed to be a sign of protection by the 'Wahaguru' and I say that he who gunned him down attacked the sanctity of the Sikh faiths. He offered affront to all the eleven Gurus of the Sikhs and defiled the holiest spot in all Sikhdom.

Sir, I am a Sikh, though I do not look one, but I am a Sikh.

PROF. N.G. RANGA : Is that so ?

SHRI RAM JETHMALANI : But I am a Hindu at the same time and I do not see any moral, philosophical, intellectual or religious contradiction in my being both a Sikh and a Hindu at the same time, and—pardon my striking a personal note—my morning prayer every day is the *Japji Sahib*. I am a reverential visitor to the Golden Temple. I enjoy the atmosphere of sanctity that prevails in that wonderful place and I confess, to an emotional upliftment induced by the *Gurbani* which is rendered into devotional soulful music at that wonderful place. Therefore, I cannot believe that my reaction to this foul murder and crime or my sensitivity to this issue can be any different from the reaction and sensitivity of the overwhelming majority practically of my Sikh brothers and Sikh sisters, whether old or young, or other-wise. But I am free to say this, that when I close my eyes and begin to imagine that hideous scene of an innocent Sikh lying at the threshold of the Temple with the Karaprasad strewn on the ground, together with an innocent little child killed in the process, while the evil assassin is strutting about with his hideous bloody weapon, inside the four walls of the Temple, I ask myself a question—that—'Is

it for this that Guru Nanak established this faith so that people misunderstand and misinterpret his faith and indulge in cowardly acts like this, I am sure that Guru Nanak would consider that today his faith has been distorted out of shape. Did Guru Ramdas build this temple to provide a sanctuary and a permanent sanctuary at that for criminals? And Sir, did two Gurus, Guru Arjun Dev and Guru Teg Bahadur, lay down their lives merely to teach their followers not to lay down their own lives but to take the lives of others?

Did not the Guru sacrifice his own children, his own *rajkumars?* Did he do that to teach his followers to take the life of an innocent child of another innocent man, who has been killed in this unfortunate shooting? But, Sir, to me it is a matter of tremendous satisfaction at the same time that the most important Sikh leaders, Sant Harcharan Singh, Shri Gurcharan Singh Tohra, Shri Jagdev Singh Talwandi, Shri Sukhjinder Singh, have all condemned this foul murder and they have condemned it in no uncertain terms as opposed to the teaching of the Sikh religion. This revives my spirit. This gives me a new confidence and a new pride in my being a Sikh and a Hindu at the same time. This convinces me that the heart of the Sikhs is in the right place and that the Sikhs will do nothing which shall blacken either the history of their faith or the glorious history of the sacrifices which they have made from time to time. Sir, I am now asking a pertinent question. The Home Minister said yesterday that every demand of the Sikhs had practically been conceded. The religious demands have already been met. The water dispute was near solution but somehow the talks broke off. For Centre-State relations, there is a Commission presided over by a Sikh ex-Judge. All this is true. But has the Home Minister ever sat in solitude to do introspection as to why is it that the problem still persists in spite of what he says he has done ? The analysis of the problem is Marxist—my Communist friends here will pardon me because Marx is nobody's monopoly—that the Sikhs have legitimate economic grievances which require to be met. It is the dishonest politicians who have converted their economic grievances into political and religious grievances.

First and the foremost, we must ponder over the proud position of the Sikhs which they, once upon a time, enjoyed as members of India's Armed Forces. The position they occupied before the first World War which they continued to occupy, today has gone by the board. Under political pulls and pressures, the Sikh does not find himself any longer in that position of pre-eminence, which he enjoyed in the Indian Army. The Sikh is beginning to feel that he is badly rewarded for his services to the country. He defended Hinduism against the Moghuls and the invading hordes from outside. He contributed the largest number of revolutionaries, who went to the gallows fighting the colonial power. And he bore the brunt of the partition of this country more than anybody did. Does not the Sikh then feel—whether the feeling is right or wrong is not the question; but it is a natural feeling—that he is entitled to some reward for the sacrifices which he has made throughout the course of history? Even Punjab he has built with the sweat of his brow. And the glorious contribution of the Sikh farmer to the green revolution and the prosperity of the country as a whole, cannot be forgotten. And yet the farmer is not adequately paid and naturally, every demand on the water resources of the Punjab by others, he concludes is a threat to his survival. The feeling may not be fully justified because India is one single economic unit and every portion of India will have to make sacrifices when they are called, for the good of the nation as a whole.

But this is a teaching which can only be imbibed and inculcated with love and compassion and not in the atmosphere of hostility and venom which has unfortunately overtaken Punjab. So, I suggest that we ponder over these problems a little more deeply. Let us investigate the demands and remove the grievances but it is also pertinent to note, and that is practically the last observation I wish to make, that there are many who have a vested interest in the continuance of this tragic chaos. The first are enemies of India who would want the bravest and sturdiest amongst us to be weakened by the destruction of our unity and love. This is the first class of enemies which we have to encounter and to neutralise. The second are those politicians within the country

whose creed it is to fish in troubled waters; creation of disorder is their staple diet and total chaos is only a stage in their political evolution. This is the second kind of enemy which has to be combated and neutralised. The third is, my learned friends on the Treasury Benches will pardon me because I must speak truth as I see it, that there are disgruntled, disgrace-to-democracy, power hungry, cheap politicians....

(*Interruptions*)**

who conceal their base political ambitions in the cloak of ideological dissidence. This morning's newspaper reports that while Punjab is burning, some MLAs and others have come to the capital, interviewed Mr. Rajiv Gandhi, and Mr. Rajiv Gandhi gives them a patient hearing. If I were to deal with these dissidents, I would have told them that you get out and get back to your State from where you have come, I refuse to hear this nonsense. Your own party men are destabilising the Government .. (*Interruption*)

श्री रामनगीना मिश्र (मलेमपुर) : जिन शब्दों का इन्होंने प्रयोग किया है, यह अशोभनीय है। आप इनसे कहिए कि ये इन को वापस लें··· (**व्यवधान**)···इन शब्दों को प्रेसीडिंग्स से निकाला जाए। कौन है··· (**व्यवधान**)

MR. DEPUTY-SPEAKER : I will go through the record. You please sit down. I have told you, I will go through the records.

PROF. K.K. TEWARY : Sir, there are limits of decency even for a person like Mr. Jethmalani.... (*Interruptions*)

MR. DEPUTY SPEAKER : I have told you I will go through the records. I will also have to see in what context it was said....

(*Interruptions*)

प्रो० सत्यदेव सिंह (छपरा) : ऐसी भद्दी जबान में ये बोल रहे हैं, यह अशोभनीय है। यह इनकी मर्यादा के प्रतिकूल है।···(**व्यवधान**)···

MR. DEPUTY-SPEAKER : You sit down. I have already said, please sit down. Yes, Mr. Jethmalani, you can conclude now. Prof. you please sit down.

SHRI JAGDISH TYTLER (Delh Sadar) : Sir, we were very happy when Mr. Jethmalani started, I was very much impressed but when he came down to..... (*Interruptions.*)

SHRI RAM JETHMALANI : When I speak the truth, you do not like.

MR. DEPUTY-SPEAKER : When I say I will go through the records, I will definitely go through the records.

SHRI RAM JETHMALANI : You have my full permission to go through the record and substitute a better expression for the words I had used.

PROF. K.K. TEWARY : Sir, we are discussing a very serious matter. This **should be stopped.

SHRI RAM JETHMALANI : May I wind up with two more observations ?

MR. DEPUTY-SPEAKER : Unfortunately, you forget the main thing. Somebody is sitting in the Chair, why cannot you leave these things to the Chair ?

AN HON. MEMBER : Mr. Deputy-Speaker is sitting in the Chair.

MR. DEPUTY-SPEAKER : Therefore, you leave it to me. I will take care of it.

SHRI SATISH AGARWAL (Jaipur) : Yes, somebody is sitting in the Chair.

(*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER : Leave it to

**Not recorded.

**Expunged as ordered by the Chair.

me. I would take care of it. You sit down. Every now and then you are getting up. I will take care of it.

SHRI RAM JETHMALANI : Two more observations, and I have finished. I will take only half a minute for two of them. Firstly, if you want the problem to be solved, please do not weaken your own Government in Punjab. We as Members of the Opposition will be happy at the turbulence within your ranks. But even good advice you would not accept because it comes from the Opposition in national interest.

(*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER : Mr. Jethmalani says even good points with anger. That is the defect in him. When he says even good things, he does it with anger. And I want that he should say everything with a smile.

Now he is going to make this remark with a smile.

SHRI RAM JETHMALANI : And secondly the last thing which I have to say: Those insignificant individuals who constitute the most violent factor in the Punjab scene, the extremists. Kindly ponder. I do not wish to indulge in any polemics : Please sit down and ponder, consult your conscience as to who created them, when did you create them and why did you create them ?

SHRI AJITSINH DABHI (Kaira) : Sir, I am on a point of order. The hon. Member says..

MR. DEPUTY-SPEAKER : Under what rule?

SHRI AJITSINH DABHI : I am on a point of order.

MR. DEPUTY-SPEAKER : Do you want any clarification from him?

SHRI AJITSINH DABHI : I do not want any, that way. I will take only half a minute. The hon. Member says that the Deputy-Speaker..

MR. DEPUTY-SPEAKER : It will not be allowed. I cannot allow you. I have called Mr. R.L. Bhatia.

SHRI AJITSINH DABHI : But I have a point of order.

MR. DEPUTY-SPEAKER : No point of order can be raised now. The Minister will reply.

SHRI AJITSINH DABHI : He said that the Deputy-Speaker has his permission to delete words which are derogatory. My point is whether the Deputy-Speaker has to take his permission to delete the words which are derogatory.

MR. DEPUTY-SPEAKER : You can ask for a clarification from him, but you cannot raise a point of order.

(*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER : There is no point of order. Your Minister will reply.

(*Interruptions*)

श्री रघुनंदन लाल भाटिया (अमृतसर) : डिप्टी स्पीकर साहब, इन वक्ताओं ने जो बातें कही हैं, राव से पहले मैं उनका जवाब देना चाहूंगा।

प्रोफेसर चक्रवर्ती साहब ने यह कहा कि यह सरकार अकालियों से बात नहीं करना चाहती है और लोंगोवाल साहब तैयार हैं। यह बिलकुल गलत बात है। क्योंकि एक बयान लोंगोवाल साहब आज देते हैं, दूसरे दिन वे दूसरा बयान देते हैं। लास्ट बयान उन्होंने दिया है कि हमने जो बातें कहनी थीं वह कह दी गयी हैं, अब गवर्नमेंट का काम है कि उनके ऊपर निर्णय ले। यह बात उनकी ठीक नहीं है। (**व्यवधान**)

हमारे मंडल साहब ने यह कहा कि 'रास्ता रोको' के वक्त सरकार ने कुछ ज्यादतियाँ कीं। यह बिलकुल गलत बात है। क्योंकि अमृतसर में मीटिंग हुई और रास्ता रोकने का प्रोग्राम चाक

आऊट हुआ। वहाँ यह कहा गया, यह किसी और आदमी ने नहीं कहा, बल्कि जिम्मेदार लीडर लोंगोवाल साहब ने यह बात कही कि अगर 'रास्ता रोकने' में सरकार कोई बाधा डालेगी तो हम जिम्मेदार नहीं होंगे और अगर नौजवान कुछ ऐसा कर बैठें तो उसकी जिम्मेदारी सरकार पर होगी। गवर्नमेंट को इस बात की इन्फर्मेशन थी कि जो भी बस चलेगी, उसको जला दिया जाएगा। इसलिए गवर्नमेंट ने यह कार्यवाही की। उनका यह कथन बिल्कुल गलत है।

दूसरी बात उन्होंने यह कही कि अगर मुल्जिम दरबार साहब के अन्दर, गोल्डन टेम्पल के अन्दर रहते हैं तो सरकार को यह चाहिए था कि वह उनसे निबटती। बहुत बार उनको लिखा गया, बहुत बार उनको कहा गया लेकिन वे कहते हैं कि यहाँ नहीं हैं। इस बात का सुबूत इस बात से मिलता है कि जो डी० आई० जी० साहब कत्ल हुए हैं वे दरबारा साहिब की ड्यौढ़ी से कत्ल हुए हैं और मुल्जिम अन्दर गए हैं।

क्या इसका भी कोई सुबूत चाहिए? इनके पास मुल्जिम है तो उसको पेश करना चाहिए। चिट्ठियों का जवाब नहीं देते। कहते हैं कि मुल्जिम नहीं हैं। इससे जाहिर होता है कि वे मुल्जिमों की मदद करते हैं, उनको प्रोटेक्ट करते हैं।

जेठमलानी जी ने आज बड़ी अनयूजुअल स्पीच दी। नार्मली वे ऐसा नहीं करते। उन्होंने यह भी कहा कि इस बारे में सबको साथ मिलकर सोचना चाहिए। यह अच्छी बात है। इस बात की हम सराहना करते हैं। हम हमेशा अच्छी बातों की सराहना करते हैं। जाते-जाते वे कुछ कह गए जिससे मेरे दोस्त खड़े हुए। इससे मुझे एक बात याद आ गई। हमारे मोहल्ले में एक बुढ़िया थी। जब भी वह निकलती थी तो लड़के उसके पीछे लग जाते थे और आवाजें कसते थे। एक दिन इत्तिफाक से वह बुढ़िया निकली और लड़के पीछे नहीं आए। उसने कहा "लड़को क्या मर गए हो"। इसी तरह से आज जेठमलानी जी ने इनवाइट किया और उसका जवाब हमारे दोस्तों ने उनको दिया।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी: लड़कों ने बता दिया कि वे मरे नहीं हैं?

श्री रघुनन्दन लाल भाटिया: हां उसको इंचिंग हुई।

आज जिस पंजाब की हालत का जिक्र हो रहा है वह एक गंभीर बात है। मेरा खयाल था कि चौधरी चरणसिंह जी जो कि नेशनल लीडर हैं और प्रधानमंत्री रहे हैं, वे कुछ अच्छे सुझाव देंगे। उन सुझावों पर हम गौर करेंगे। लेकिन उन्होंने अपनी सारी स्पीच में इधर-उधर की बातें कीं। कुछ अपना गुणवर्णन करते रहे कि जब वे थे तो उन्होंने यह किया—वह किया। एक बात वे कह गए जिसका जवाब यहाँ देना बहुत जरूरी है। उन्होंने कहा कि पहले जो होम मिनिस्टर थे, उनका यह क्रिएशन है। यह सरासर गलत बात है। उन्होंने एक ऐसे आदमी का हवाला दिया है जो थाने में था। इनके पास कोई सुबूत मौजूद नहीं है। कोई कोर्ट का स्टेटमेंट नहीं था। आपको मालूम है कि अक्सर थाने में मुल्जिम कुछ और कहते हैं और कोर्ट में सही बात कहते हैं। इसलिए उनको इस पर विश्वास नहीं करना चाहिए। यह बात बिलकुल गलत है। मैं तो उल्टे यह कहूंगा कि जनता पार्टी के वक्त चौहान को पासपोर्ट दिया गया था। चौहान खालिस्तान की मांग कर रहा है। हमने उसका पासपोर्ट कैंसिल कर दिया था। जनता पार्टी के समय शायद अकालियों के कहने से उसको पासपोर्ट दिया गया और वह हिन्दुस्तान आया। उस वक्त उस सरकार में फारेन मिनिस्टर वाजपेयी जी थे। इससे पता चलता है कि हमारे संबंध उसके साथ हैं या आपके संबंध हैं।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी: 1980 में उसको किसने आने दिया था?

श्री रघुनन्दन लाल भाटिया : आपने दिया था या नहीं दिया था, पहले इसका उत्तर दीजिए। आप अपनी गल्ती दूसरों पर इल्जाम लगाकर नहीं छिपा सकते।

18-59 hrs.

[SHRI CHINTAMANI PANIGRAHI *in the Chair*]

मैं उस पंजाब की बात कर रहा हूं जिसका इस देश की आजादी में इतना बड़ा हिस्सा रहा है। जिस पंजाब के युवक मदन ढींगरा ने अपनी जान दे दी, जिस पंजाब के करतार सिंह सराबा ने अपनी जान दे दी, जिस पंजाब के लाला लाजपत राय ने अपनी जान दे दी, जिस पंजाब का सरदार भगत सिंह फांसी पर चढ़ गया, मैं उस पंजाब का जिक्र कर रहा हूं। मुझे दुख है कि जो पंजाब आजादी की जंग में सबसे आगे था, आज उसका जिक्र मुख्तलिफ लब्जों में, मुख्तलिफ खयालों में किया जाता है। इसका क्या कारण है ? हमारे अपोजीशन के भाई सही मायनों में इसको नहीं जानते। उनकी जानकारी अखबारों की जानकारी तक महदूद है। वहां पर ऐसी हालत क्यों है, मैं बताता हूं।

पंजाब में अकाली यह समझते हैं कि पंजाब एक सिक्ख स्टेट है। इसमें सिक्ख मेजारिटी है। उनको राज मिलना चाहिए। लेकिन बदकिस्मती से पंजाब के लोग उनको चुनकर नहीं भेजते। जब पंजाब में पंजाबी लिंग्विस्टिक प्रोविन्स बना तो पहली बार अकाली पॉवर में आए। पंजाब के लोगों की सेवा करने का बड़ा अच्छा मौका था। लेकिन, उस वक्त जो उन्होंने काम किया, उससे पंजाब के लोग उनसे दूर हट गए। उसके बाद जनसंघ, सी०पी०एम० और दूसरी पार्टियों का आसरा लिया। जितनी बार भी पावर में आए, वे लोगों से दूर हटते चले गए। अकाली पार्टी, कम्युनल और बड़े जमीदारों की पार्टी है। यह पार्टी लोगों को गलतफहमी में डालकर धर्म के नाम पर पालिटिकल पावर गेन करती है। आपको पता है कि वे पावर में आने के लिए क्या-क्या बातें करते हैं। सन 1966 में जब दुबारा पावर में आए तो उन्होंने कुछ ऐसी ज्यादतियां की जिससे माइनारिटीज के लोग और हरिजन सब छूट गए। जो जमीनें हमने हरिजनों में बांटी थी, वह इन लोगों ने जब दुबारा पावर में आए तो डंडे मार-मारकर उनसे छीन ली। नतीजा यह हुआ कि 1980 में 13 पार्लियामेंटरी सीटों में से केवल एक सीट अकाली पार्टी को मिली। इसी प्रकार पंजाब असेम्बली में 117 में से 37 सीटें मिली। 25-30 परसेंट से ज्यादा अकालियों की पार्टी पंजाब के लोगों को रिप्रजेन्ट नहीं करती। यह उनका फ्रस्ट्रेशन है। दूसरा फ्रस्ट्रेशन यह है कि 1970 में सिखों की आबादी 58 परसेंट थी और 1981 के सेंसस में 52 परसेंट ही रह गई। पहले तो वे यह समझते थे कि उनकी गवर्नमेंट बन जाएगी लेकिन अब यह फ्रस्टेशन हो गया है कि उनकी मैजारिटी भी धीरे-धीरे खत्म होती जा रही है। इसका कारण यह है कि जो हमारे पंजाबी भाई स्कील्ड वर्कर्स हैं, वे किसी दूसरे स्थान पर या देश से बाहर बेहतर तनख्वाह मिलने पर चले जाते हैं। इस वक्त टोटल 63 परसेंट सिख हैं जिसमें से 37 परसेंट माइग्रेट कर गए हैं। उनके चले जाने के बाद वहां जो वैक्युम है, उसको यू०पी० और बिहार के लोग पूरा कर रहे हैं। इसलिए, कारखानों में और खेतों में भी वही लोग काम कर रहे हैं। इसलिए, यह जो पापुलेशन का कम होना या बढ़ना है, यह भी उनका सैकन्ड फ्रस्ट्रेशन है। तीसरा फ्रस्ट्रेशन यह है कि उन्होंने जनसंघ भाइयों के साथ काम चालू किया। उन्होंने सोचा था कि इसके साथ मिलने से शायद एक सेक्युलर पार्टी बन जाएगी। लेकिन नतीजा क्या हुआ ? दोनों पार्टी फेल हो गई। दूसरी पार्टियां भी साथ छोड़ गयीं। पहले फ्रस्ट्रेशन था, इसके बाद आइसोलेशन हो गया। इसलिए दोनों में यह एक्सट्रीमिज्म पैदा हो गया। क्योंकि उनको यह मालूम हो गया कि हम पावर में नहीं आ सकते। सेन्टर में भी जो अपोजिशन पार्टीज हैं, उन्होंने भी उनकी मुखालफ्त की। अब उनके लिए कोई रास्ता नहीं था सिवाय इसके कि ऐसी

यह स्थिति पैदा करें। अभी मेरे दोस्त ने ठीक कहा कि उनकी तादाद ज्यादा नहीं है। अकाली पार्टी का एक रूख है कि आपसे तो बातचीत करेंगे।

उधर से हमको डरवा देंगे, प्रेशराइज करेंगे। और यह उनका मैकिन्ड विंग है। यह कहना किसी और ने इसको बताया, यह बिल्कुल गलत बात है। इसलिए यह बात स्पष्ट है कि जिन लोगों ने प्लेन हाइजैक किया या लोगों को मारा पंजाब में क्या उनको संत हरचरण सिंह लोंगोवाल ने सरौपे नहीं दिये, उन्हें आनर नहीं किया? इसलिए यह गलत बात है कि वह सैपरेट हैं। यह असली वाकया है जो मैं कह रहा हूं। लेकिन इसके बावजूद भी मैं इसका हामी हूं, जैसा चन्द दोस्तों ने कहा और माननीय जेठमलानी ने कहा कि उनसे बातचीत करनी चाहिए। वह हम कर रहे हैं, जारी है, और हमने कभी इन्कार नहीं किया, और कांग्रेस पार्टी और हमारी लीडर श्रीमती इन्दिरा गांधी ने कहा है कि हमारे दरवाजे खुले हैं। सेठी साहब ने भी दो बयान दिए हैं कि जब भी वह आना चाहें बातचीत करने के लिए हम तैयार हैं। यही नहीं अपोजीशन वालों को भी हमने इनवाल्व किया कि हमारी मदद कीजिए। हम आपके शुक्रगुजार हैं कि आपने हमें अच्छे सुझाव दिये और साथ बैठे तो एक अच्छा वातावरण पैदा हुआ। हम फिर भी तैयार हैं इस बात के लिए और कुछ अपोजीशन लीडर इस बात को तय भी कर रहे थे, लेकिन माननीय सत्य साधन चक्रवर्ती कहते हैं कि हमने बातचीत तोड़ दी, या बात नहीं करना चाहते हैं। यह बिल्कुल गलत बात है। श्री हरकिशन सिंह सुरजीत बातचीत कर रहे थे लेकिन सडनली उन्हें चाइना जाना पड़ गया। तो हमारी बातचीत खुली हुई है, अगर बाद में भी कोई आकर इस बात को चलाना चाहें तो हम उसको वैलकम करेंगे।

मेरा कहना है कि जो पंजाब की स्थिति है वह बहुत गम्भीर है। कुछ लोगों ने इसको पोलिटिकल आसपेक्ट में लिया है, सरकार को कहा है कि उसने गलती की है। तो यह सिचुएशन पोलिटिकलाइज करने वाली नहीं है। यह निश्चित है कि अगर पंजाब में एक बार आग लग गई तो किसी से बुझाई नहीं जायेगी। इसलिए जरूरी है कि बातचीत की जाय और इस आग को ठंडा किया जाय, और आप जो सहयोग दे सकें वह हम लेंगे। और माननीय सेठी जी उनसे बातचीत कर रहे हैं और हम चाहते हैं कि कोई ऐसा रास्ता निकले, वह टेबिल पर आ जायें और कोई रास्ता निकल सके।

एक बार फिर मैं अपील करता हूं कि सारे हाउस की बजाय एक दूसरे पर कीचड़ उछालने के और यह कहने के कि फलां जिम्मेदार है, इसको बन्द करें क्योंकि इससे ऐक्सट्रीमिस्ट्स को फायदा पहुंचता है, देश को नुकसान है। अगर हम उनके आगे सरेन्डर करते हैं तो देश तबाह हो जाएगा। आज पंजाब में हो रहा है, कल को किसी और दूसरे सूबे में आ जाएगा और यही बातें हमारे लिए मुश्किल हो जायेंगी। इसलिए मैं अपील करता हूं सबसे कि इसको सीरियसली लें, इसमें कोई ऐसी बात न करें जिससे किसीको दुख हो, बल्कि एक रास्ता निकालें जिससे इस समस्या का हल हो। और मैं यकीन दिलाता हूं कि जिस दिन आप और हम इस मसले को लेकर तय करने के लिए बैठ गए तो न कोई ऐक्सट्रीमिज्म रहेगी और न कोई प्रौबलम इस देश में रहेगी, यह मेरा विश्वास है।

(इति)

SHRI C.T. DHANDAPANI (Pollachi) : Sir, the solution has stated the failure of the Government to ensure the sanctity of religious places like the Golden Temple, Amritsar etc and also the killing of the Indian Police Service Officer who has been working in the State of Punjab.

On behalf of my party DMK, I wholeheartedly condemn the killings whether it is the Police Officer or an ordinary citizen.

The brutal action of any person has to be condemned.

The killing which took place in a particular State is a State subject. I do not know how the office of Speaker gave permission for admission of this motion to be discussed in this august House....(*Interruptions*) Now that. It is becoming a precedent. So any law and order problem arising in any State, I hope, the House will permit to be discussed here....

SHRI HARIKESH BAHADUR : He is an IPS officer.

SHRI C.T. DHANDAPANI : Belonging to Punjab cadre. Why I am telling this is that we must see the background....

MR. CHAIRMAN : It is the Speaker who gives permission and not the office.

SHRI C.T. DHANDAPANI : Speaker means office and office means Speaker. Both are the same....

MR. CHAIRMAN : Why to mention that ?

SHRI C.T. DHANDAPANI : Sir, while we are condemning the killing of the DIG, we have to make concrete suggestions to defuse the situation in Punjab. As far as this issue is concerned, all political Parties put forward many suggestions in the tripartite meeting. As a matter of fact, many of the suggestions put forth by the Opposition Parties were agreeable to the Government in a particular point. I do not know the reason why the other side, particularly, from the Akali Dal side have not found it possible to come to an agreement with the Government on this issue or on other issues. How it happened—I do not want to take much time of the House.

How has this agitation started ? As soon as the new Parliament assembled here in 1980, the Central Government had no other option but to replace some of the Governments—I must say—by applying Art 356, particularly, 9 State Governments to enable the people to elect a new government according to their desire. In April 1980 the Punjab Government was dismissed. Soon after the dismissal the Akali Party sent their demands, namely 45 demands in June 1980. Demanding their charter of demands some 25,000 people were arrested. Following that Lala Jagat Narain, an editor of a magazine was murdered. This is the background which aggravated the situation.

The Prime Minister expressed her desire to have dialogues with the leaders of the Akali Dal. Of course, when we read their demands and the preamble to their other grievances, it appears to everybody that they are in a right way and that their demands are genuine. I do not dispute the intention of the Akalis that they are going to launch an agitation or whatever it may be, to achieve their demands. But one important thing we must know. Even after the assurance of the Prime Minister of October 15, 1980, all the leaders of the present agitation and movement had expressed their confidence in the Prime Minister.

Sir, after that somehow the movement passed on into the hands of the extremists and the extremists do not want these demands should be accepted or considered by the Government. Even the Government when accepted some of the demands, particularly religious demands as was stated by my hon. friend, Shri Chakraborty, here agreed that gurbani will be relayed on the radio either daily or periodically. As for Hindus it is being relayed on Saturday and for Muslims and Christians prayers are relayed on Fridays and Sundays. So, the Government gives importance and recognise the religious feelings of all religions. That is why it is being called a secular State. The other demands were also agreed to by the Government.

Sir, as far as Centre-State relationship is concerned, the Akalis wanted that the question of Centre-State relationship should be referred to a commission. Government gladly accepted it though it was delayed. Sarkaria Commission was appointed on 26th March, 1983. Actually Sarkaria Commission should have more wider scope. This was discussed in the tripartite meeting where our Home Minister was present. He also accepted the suggestion made by the Opposition leaders that the Commission should have

wider scope to discuss about the Centre-State relationship. It has also been accepted.

Sir, after accepting all these things I do not know what is the reason for the agitators in Punjab to go in for violent activities. We know the situation which is prevailing in Punjab. Many people say that some foreign elements are behind this agitation. I would like to ask the Home Minister whether the Government has identified those foreign elements ? If so, who are they ? If you are not able to identify the foreign elements behind the agitation then you must find out as to who are they ?

I would request you to isolate the extremists and deal with them firmly. They are playing in the hands of somebody. There are two groups of people, one among the Hindus and the other among the Sikhs, who can lead the agitation on certain occasions. But the masses do understand the real issues. As I said, the situation requires to be tackled firmly and tactfully.

I would once again make an appeal to the hon. Minister, as also support my friends who have given valuable suggestions in finding out a solution for this. The Prime Minister must invite the leaders concerned for a tripartite meeting and settle the issues.

In conclusion, I would like to mention that the Government is no doubt very much interested in settling this issue. In view of this, I do not think there is any necessity for this adjournment motion ; and I hope, our friends will withdraw it and help the Government to come to an agreement in a cordial atmosphere.

MR. CHAIRMAN : I hope, we will be able to conclude this discussion by another one hour. The Minister will reply at about 8 O'clock.

Shri Zainul Basher.

श्री जैनुल बशर (गाजीपुर) : सभापति जी, माननीय सदस्य द्वारा जो काम-रोको प्रस्ताव पेश किया गया है, मैं उसका विरोध करने के लिए खड़ा हुआ हूं।

जैसा कि अभी बताया गया है और सारे देश को इस बात से चिन्ता है कि पंजाब की हालत रोज-बेरोज़ खराब होती जा रही है। अभी जिस पुलिस आफिसर का कत्ल किया गया है, उससे वहां की पुलिस या जो दूसरे अधिकारी हैं, उनके डिमारलाइजेशन का आना स्वाभाविक है। इस स्थिति का सामना करने के लिए सरकार ने जो कदम उठाए हैं, वे तो ठीक ही हैं, लेकिन मेरी राय है कि इस में थोड़ी सख्ती बरती जानी चाहिए।

मैं सिख लोगों का बड़ा आदर करता हूँ। रोज़ाना जिन सिखों से मेरा सम्पर्क होता है, मैं उन्हें बहुत भला आदमी पाता हूं, बहुत शरीफ पाता हूं। सबसे बड़ी बात यह है कि बहुत सैक्युलर पाता हूं। जब इस देश का पार्टिशन हुआ, उससे सबसे अधिक प्रभावित सिख लोग हुए। उनको उस आग का सामना करना पड़ा, लेकिन इसके बावजूद भी सिखों में कटुता नहीं है। सिख और सैक्शन्स से ज्यादा सैक्युलर हैं। यह मेरा अपना तजुर्बा है तथा उम्मीद है सभी लोगों का यही तजुर्बा होगा।

आज पंजाब में जरूर कुछ ऐसे सिख एलीमेंट्स पैदा हो गए हैं, जो वहां की हालत को खराब कर रहे हैं। इसमें किन लोगो का हाथ है ? इसमें बाहर वालों का भी हाथ है और दूसरे लोगों का भी हाथ है—इस बात को हमें देखना चाहिए। पंजाब एक बार्डर स्टेट है और पंजाब का बार्डर पाकिस्तान से लगता है। पाकिस्तान से हमारी भले ही दोस्ती हो जाय, अच्छी बात है, लेकिन यह बात हमें नहीं भूलनी चाहिये कि पाकिस्तान इस बात की कोशिश कर सकता है या वहां के कुछ ऐलीमेंट्स इस बात की कोशिश कर सकते हैं कि पंजाब में ऐसी स्थिति पैदा की जाय जिससे देश की एकता पर बुरा असर पड़े। यह बात भी हो सकती है, इस पर भी हमको नज़र रखनी चाहिये।

एक बात, सभापति जी, मेरी समझ में नहीं आई कि आखिर हमारे सिख भाइयों को शिकायत

कैसे पैदा हो गई ? यहां हाउस में उस तरफ से और इस तरफ से भी यह बात कही गई कि उन की शिकायतों को दूर किया जाना चाहिये। मेरी समझ में आज तक यह नहीं आया कि सिख भाइयों की शिकायतें क्या हैं ? मैं तो आज भी यह देख रहा हूं कि हमारे सिख भाई हमसे या हमारे हिन्दू भाइयों से ज्यादा प्री-एमिनेन्ट पोजीशन इस समय पाये हुए हैं। आज अगर कोई क्रिमनल हमारी मस्जिद में घुस जाय या हिन्दू भाइयों के मन्दिर में घुस जाय तो पुलिस उसका पीछा करते हुए मस्जिद या मन्दिर के अन्दर घुस जाती है। मस्जिदों में हम रोज देखते हैं, देश के किसी भी भाग में पुलिस दनदनाती हुई चली जाती है, लेकिन गोल्डन टेम्पिल में मर्डर करने वाला, लोगों की आँखों के सामने सरेआम मर्डर करने वाला जब घुसा जाता है, तो पुलिस की हिम्मत नहीं पड़ती कि वहाँ जाय और न हमारी सरकार पुलिस को आदेश देती है कि वहां जाय और हमारे इस माननीय सदन में भी इस बात को खुलकर नहीं कहा जा रहा है कि पुलिस गोल्डन टेम्पिल में क्यों नहीं जाती है, वहां क्रिमनल को पकड़ने क्यों नहीं जाती ? क्या इसके लिये कोई ऐसा कानून बना हुआ है ? ऐसा कोई कानून नहीं हैं। कहा यह जाता है कि पंजाब जल जाएगा, पंजाब में आग लग जाएगी, जिस दिन पुलिस गोल्डन टेम्पिल में चली गई। अगर इस धमकी से कानून अपना रास्ता न ले तो मैं समझता हूं कि यह देश के लिए बड़ी दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति होगी।

यह प्री-एमिनेन्ट पोजीशन आज सिख लोगों की है वह सर्वविदित है, नौकरियों में जो उनकी संख्या है, उनकी कुल संख्या के मुकाबले वह कितनी अधिक है, इसके आँकड़े इस समय मेरे पास नहीं हैं, लेकिन मैं समझता हूँ जितनी उनकी आबादी है उसको दृष्टि में रख कर चार-पाँच गुना ज्यादा जरूर नौकरियों में होंगे। फिर किस बात की शिकायत है—मैं यह बात समझ नहीं पा रहा हूं।

बहुत सारे सिख केवल पंजाब में नहीं हैं, सिखों का एक बहुत बड़ा भाग देश के सम्पूर्ण भागों में फैला हुआ है। हर शहर में, हर कस्बे में बड़ी संख्या में सिख मिल जाते हैं और वे काफी खुशहाल हैं। उन्होंने मेहनत की है, किसी का अहसान नहीं है। उन्होंने अपनी मेहनत से कमाया है। इसलिये मेरी समझ में नहीं आता कि पंजाब में जो सिख हैं, अगर वे लड़ाई झगड़े पर अमादा हो गये हैं तो उनको यह ख्याल भी रखना चाहिये कि देश के दूसरे भागों में जो उनके भाई सिख हैं, उनकी क्या हालत हो सकती है। मैं, सभापति जी, इस बात को कतई नहीं मानता कि बड़ी संख्या में सिख इस बात के हामी हैं कि उनको खालिस्तान मिले या उनको आजाद देश मिले। इसमें कुछ एक्स्ट्रीमिस्ट्स हैं जो इस तरह से धमकाते हैं कि जो उनका विरोध करेगा उसको वे गोली मार देंगे। वे लिस्ट बनाते हैं कि इसको गोली मार देंगे, उसको गोली मार देंगे, इस किस्म का रवैया उन्होंने अख्तियार कर रखा है और इसी गोली मार देने की धमकी से, उनके डर से, पंजाब में जो समझदार सिख हैं, वे उनका विरोध नहीं कर पाते हैं।

गोली मार देंगे और गोल्डन टेम्पिल में चले जायेंगे और वहां सरकार की पुलिस जा नहीं सकती, उनको कोई पकड़ नहीं सकता। इसलिए मैं आपके माध्यम से सरकार से यही निवेदन करना चाहता हूं कि उसको थोड़ी सख्ती बरतनी चाहिए। पुलिस कानूनन जैसे देश के सभी भागों में, सभी संस्थाओं में और सभी धार्मिक स्थलों पर जा सकती है, उसी तरह से उनके साथ भी वही बर्ताव होना चाहिए।

दूसरी बात मैं यह कहना चाहता हूं कि सिखों की जो मजहबी मांगें हैं, उन्हें सरकार को सुनना चाहिए और उनको स्वीकार करने में जरा भी हिचकिचाहट नहीं होनी चाहिए क्योंकि जो माइनोरिटीज होती हैं, वे सेंसेटिव होती हैं और उनको अपनी कल्चर की, अपने धर्म की फिक्र और परवाह होती है। इसमें सरकार को फराख-दिली से काम लेना चाहिए और उनकी जितनी

भी मजहबी मांगें हों, उनको स्वीकार करने में कोई भी हिचक नहीं होनी चाहिए लेकिन उनकी बातचीत करने में यह इम्प्रैशन नहीं देना चाहिए जैसाकि आज दिया जा रहा है और जैसा और भी सदस्यों की जबान से सुनने पर पता चलता है कि सरकार उनसे डर रही है और इस बात से डर रही है कि अगर हमने कुछ किया तो उससे पंजाब में आग लग जाएगी और उस आग को कोई बुझा नहीं सकता। इस डर को निकाल कर आपको उनसे बात करनी चाहिए क्योंकि अगर यह डर बना रहता है तो जो एक्सट्रीमिस्ट एलीमेंट है, वह आप पर हावी होता चला जाएगा और फिर आपको बुरे दिन देखने पड़ेंगे।

SHRI INDRAJIT GUPTA (Basirhat) : Mr. Chairman, this Adjournment Motion which we are debating, is restricted to the question of Government giving protection to religious places like the Golden Temple etc ; but the debate, of course, is ranging very wide.

As far as these specific issue in the Motion is concerned, no Member either on this side of the House or on that side, is able to spell out what should be done. Everybody is hinting—from Choudhary Charan Singh to Gen. Sparrow—that law-breakers should not be allowed to take sanctuary inside the Golden Temple or any place of worship. The implication of that is that, if necessary, action should be taken. But nobody is willing to spell that out.

I judge this issue on this : whether we should suggest to the Government that something should be done, which has not been done so far ; and it is not an easy matter. I can understand it ; it may lead to some very calculable consequences, but I judge this issue from the stand-point of whether or not it will help to bring about a solution of the disputes that are there between the Akalis and the Government. If it helps to bring about a solution, then I would be the first man to say : 'Does not matter what happens ; you send the Police into the Golden Temple to apprehend people who, you say, are hiding there'. But I don't think the issues you discussed and those which are pending, justify this type of brutal killing or the type of extreme action which, many people feel, should be taken to stop these killers.

The question of river waters dispute, or the adjustment of some territory on the border of Punjab and Haryana, are the issues, we are told, in dispute. I am thankful rather to the Akali agitators—whether they intended it or not in the beginning, I do not know—that as a result of that agitation, at least this issue of re-structuring the relations between the State and the Centre, and the Centre giving more powers to the States, has acquired bigger dimensions, and has led to the appointment of the Sarkaria Commission. About many things relating to that Commission we are not happy ; but the Akali leaders have publicly welcomed it.

So now, normally when extremist elements of this type who resort to terrorism, individual killing and all that, become active, in any other situation, at any other time, in any other place, sometimes it is a reflection of the fact that some agreement is about to take place.

Therefore, the extremists getting desperated are trying to wreck the possibility of an agreement. Therefore, they sometimes resort to more violent activities. If that was the case here, in spite of people being killed like this, I would have said, well, every cloud has some silver lining. If the two parties concerned, the two principal parties, the government and the Akali leadership, are within sight of an agreement or coming closer to an agreement, I could well understand the desperation of these violent elements. But, Mr. Sethi is not telling us whether we are getting nearer any agreement or not.

Every day, we are reading all sorts of reports which are not consistent with each other. One day, we were told by the government that they had asked them to come for talks again, to resume talks. Mr. Longowal says, we have not received any invitation ; we are waiting for an invitation. Some emissaries are being sent from here now and then, I find. But, nobody can explain why

the talks are not being resumed, because Mr. Longowal does not say that we have refused to have any talks. The government says, we are appealing to them again and again ; but appealing is one thing and actually giving a specific invitation is a different thing. Mr. Sethi should take the opportunity of this discussion to clarify some matters because there is no alternative. Either we are able to resume negotiations and try to come to some agreement or some settlement or these elements are going to get the upper hand. There is no other alternative. You have to decide what you are going to do.

This officer, DIG, who had been murdered, was also a Sikh. Obviously, the target of these assassins has no kind of communal prejudice. I remember some time ago—now we have almost forgotten it—Nirankari Baba was killed here infront of Gurdwara in the Chandni Chowk. Nobody has been apprehend to this day. Nobody has said that the killer of the Nirankari Baba had been hiding inside the Gurdwara. That is why they cannot catch them. It does not automatically follow if the killers are hiding somewhere else, not inside the place of worship, then this government is competent and efficient enough to catch them. They are not able to catch the murderer of the Nirankari Baba. The point is that this killing has come, this particular killing has come on the heels of a statement which was issued by Mr. Balwant Singh Sandhu, who, according to the Minister, has been living inside the Golden Temple since 1981. He issued a statement as usual talking about genocide that is being committed against the Sikhs and all that. Immediately after that comes this murder. The Chief Minister of Punjab has said that the shooting has occurred inside the premises of the Golden Temple, just near the gate, but inside the compound of the Temple, now many people are taking this issue. You must tell us what is the exact position. We do not know.

A distinguished Sikh representative in the other House who is also supposed to be some sort of an intellectual, said that the shooting has taken place outside the Golden Temple and the government should not try to send any police force into Temple ; and then the government says that he is hiding inside. Mr. Longowal and people say, there is no such person inside. How does Mr. Longowal know and how does Mr. Sethi know unless they can identify who was that person. You know him. Have you identified him ? How do you recognise him ? If not, how can you say whether he is inside or outside ? Neither you are entitled to say nor Mr. Longowal is entitled to say unless he also knows who the assassin is ; and the two of you every day are carrying on this debate. One is saying that he is hiding inside ; another one is saying, no, he is not here. Who is "He" ? Nobody knows. And this way, the public certainly is not going to be made a fool very long. But I notice one thing that neither the Akali leadership nor the Sant Bhindranwale nor anybody publicly demands that the killer should be found out and should be punished. Nobody says that. Of course, they have condemned the killing because it took place in circumstances which could not but be condemned. (*Interruptions*). About Bhindranwale, I have read in the paper that he also deplores the killing.

But nobody demands that the Government should take energetic steps to try to apprehend the Killer and to see that he is properly punished ; nobody says that ; as far as the Akalis or Bhindranwale are concerned.

I want to say that the leadership of the Akali Party should not behave in a way which lays them open to the suspicion of some sort of collusion with these extremist elements ; they should be forthright ; they should say that this kind of murder, that this kind of killing cannot be defended in any way, directly or indirectly and these people are criminals and they must be apprehended and they must be punished. Why do not those people say so ? They have, of course, protested very energetically and rightly in my opinion against the Police excesses which were committed. Police excesses will always be committed ; the Police are not *Sadhus* and when the Police are given certain instructions to maintain peace or law and order in a particular area they are always liable to commit

excesses. On this *Rasta Roko* day, as far as I know, they had committed excesses, particularly in Malerkotla and other places. They have killed a number of people. They have with their own hands burnt shops. We had sent a delegation there ; they have come and reported after meeting so many people and hearing from them. But it is not enough in my opinion. Everything I am saying applies to Assam also. It is not enough to go on protesting and condemning only the Police excesses, without saying a word against the felony which is being committed on the other side. This onesided approach is going to be really the bane of the whole situation at present. According to one's face and one's projection and bias, we condemn only one side and not the other side when people are being killed every day.

Then, one day we are told that a ban is being imposed on carrying of arms inside the Golden Temple and the next day Mr. Longowal says that there is no such ban. What is the situation, I do not know. They say that the Akalis do not support Khalistan. And I read a statement by Jagjit Singh Chauhan some weeks ago in which he said that it was a letter written to him by Mr. Longowal. He says, "I have got that letter in my possession. It was he who had advised me or requested me to raise the issue of Khalistan in the United Nations."

I do not understand. Who is a moderate ? Who is an extremist ? Who is what ? It seems to me that keeping in view the next election in the Punjab both the Congress Party and the Akali Party are simply trying to manoeuvre in such a way as to see who can put themselves in a more advantageous position vis-a-vis the coming elections who are taking the credit for any agreement which may be brought about. That is why this whole thing is being prolonged on and on and on and people are being killed. So, I should say that the Government should give up this kind of a quibbling attitude. They have got to take some stand regarding these remaining issues, river disputes and territory and all these things. They should come out clearly and and tell the country what the stand of the Government is. Do they agree with the Akalis or have they got their own solutions ? They are responsible because, after all, the Prime Minister has given an award. But that award was never implemented. So, the Government should make up its mind and tell the country and the people clearly what its stand is on the remaining issues which remain unresolved. We support you fully that this is an issue which should not be politicalised by anybody. But I think it is a disgusting spectacle to see what is going on in the Congress (I) Party in the Punjab. Who is politicalising ? I would like to know. Who are those people who are rushing from Chandigarh to Delhi to lobby against the Chief Minister ? That is the most important issue for them. After all, when they were about to leave, this murder of the DIG took place. The papers had reported it. Messages were sent to them saying 'Do not come now. You remain there now. When the situation cools down we we will see about it." They did not listen to that advice. They rushed to Delhi. Their main concern is how to lobby against the Chief Minister. I have no love for the Chief Minister. But what is the point, on this point and on different issues which are clouded more by political motivations ? We are concerned with the unity and national integrity of the country.

MR. CHAIRMAN : Please conclude, Guptaji.

SHRI INDRAJIT GUPTA : I would say that the inconsistencies in the situation which are there and the issues which remain to be solved, and the type of things which are happening is something which passes my comprehension. This is not a question like Assam.

This whole thing has been narrowed down to two or three specific issues. It is for the Government now to see that the conditions are created immediately for resumption of negotiations. The opposition parties are fully prepared to lend a hand. We were helping, I think, the Government have acknowledged this. Who is responsible for this breakdown ? Who is responsible for resumption of negotiations not taking place again ? Akalis will blame Mr. Sethi and Mr. Sethi will blame the Akalis and meanwhile, Punjab is burning.

I am not in favour of a very brave action just now as far as places of worship are concerned. If it helps you to bring about a solution, I would advocate it and I am not afraid of advocating it. My friend there has said that Police do go into mosques and temples. Are they less sacred than Gurdwaras ? Is sacrilege not committed there ? Is sacrilege not committed when the people are shot down and killed in the compound of a gurdwara ? I would advocate it but I am not advocating it because it will not help to solve the dispute, which is there pending. It may make the things worse for the time being and divert attention from the issues, which are to be solved. Therefore, now, let us hear from Mr. Sethi.

Finally, I say that it is not merely a law and order problem. It is a question of the future of the Punjab and the future of the country. The whole thing is only bringing comfort to Zia ul-Haq, sitting a few miles away across the border. The Pakistani Radio, Television and the Press are making capital out of it. Everyday, they have got nothing else to say except about the so-called revolt taking place in the Punjab by the Sikhs. Who is helping whom ? We can understand certain foreign powers, who are interested in this kind of a thing. Of course, the Government will not name them. I know it. They are afraid to name them. But the Government should try to narrow down the thing and settle it as a political dispute. They should take the initiative in this matter. All the political parties are prepared to help the Government. Do not go on blaming each other all the time for goodness sake, because what Mr. Charan Singh had done in such and such year, you have done now. It came out that now that both of you had some time or other, allowed Mr. Jagjit Singh to come here in spite of his having no passport. You say that Mr. Charan Singh did it once. And then somebody proved that in 1980 you also did the same thing. So, what is the good of this ? Please call a spade a spade and see that the country is saved in good time.

श्री रामनगीना मिश्र (सलेमपुर) : सभापति महोदय, पंजाब के मसले को लेकर जो स्थगन प्रस्ताव रखा गया है, मैं उसके विरोध में खड़ा हुआ हूं। ऐसे महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव पर मेरे जैसा साधारण आदमी सोचता था कि हमारे विरोध पक्ष के भाई राजनीति से ऊपर उठकर राष्ट्र की उन्नति के लिए कुछ ऐसे सजेशंस देंगे जिनसे वास्तव में देश की अखण्डता बनी रहे और पंजाब की समस्या का समाधान हो जाए। हमारे यहां भोजपुरी में एक कहावत है "कहिए सुपद-करिए कुपद"। इसका मतलब बोलने में तो सब ठीक बात कीजिए लेकिन कार्य रूप में उनका उल्टा कीजिए। ठीक यही बात हमारे अपोजिशन के भाइयों और अकालियों पर भी लागू है। जितने भी नेता बोले हैं, उन्होंने शासन को पंजाब की समस्या हल करने के लिए अपनी तरफ से कोई सुझाव नहीं दिया। सभी ने बड़ी गहराई और चतुराई से अपना राजनीतिक लाभ उठाने की कोशिश इस मामले पर की है। मैंने भूतपूर्व प्रधान मंत्री चौ० चरण सिंह जी का भी भाषण सुना। मैंने सोचा कि वह ऐसा सुझाव देंगे जिससे सचमुच में हमारी राष्ट्रीय अखण्डता बनी रहे और पंजाब की समस्या हल हो जाए। किंतु, उन्होंने जातिवाद का नारा दे दिया। मैं भी समाजवादी था। डा० लोहिया पहले वर्ग संघर्ष का झगड़ा करते थे। जब वे इस मामले में सफल नहीं हुए तो उन्होंने कहा कि वर्ण संघर्ष पैदा करो यानी जाति का झगड़ा। छोटी जाति और बड़ी जाति का झगड़ा पैदा करने का श्रेय डाक्टर लोहिया को है और चौधरी चरण सिंह ने यूरिया खाद देकर उसको हराभरा कर दिया है। आज समूचे मुल्क.....

श्री मनीराम बागड़ी (हिसार) : तू कहां डा० लोहिया के साथ रहा है? और कहां उन्होंने लड़ने को कहा था? काहे को बोल रहा है। सभापतिजी, डा० लोहिया और गांधी का यह मुकाबला करेगा ?

श्री रामनगीना मिश्र : छोटी जाति और बड़ी जाति का झगड़ा उन्होंने शुरू किया था।...

श्री मनीराम बागड़ी : गांधी और लोहिया

के बारे में यह क्या कह रहे हैं। खबरदार अगर ऐसी बात कही। सभापति जी, आप इन बातों को देखिये यह क्या कह रहे हैं।

MR. CHAIRMAN : I Will go through the records.

श्री राम नगीना मिश्र : आज देश की हालत यह है कि देश में रहने वाला गांव स्तर तक का आदमी इस बात से दुखी है जो पंजाब में कांड हो रहा है। आज सचमुच में···

सभापति महोदय : आपका टाइम खत्म हो रहा है।

श्री राम नगीना मिश्र : आज देश की पुकार है कि देश की अखंडता कायम करने के लिए अगर कुछ सख्त कार्यवाही भी करनी हो तो जरूर की जाय। यह बात सच है कि अभी अभी हमारे कई दोस्तों ने कहा, हमें याद है कि जिस वक्त में देश की आजादी की लड़ाई लड़ी जा रही थी, आन्दोलन छिड़ा था चोरीचोरी में हिंसात्मक कांड हुआ, हालांकि अंग्रेजों की तरफ से जुल्म हो रहे थे और कुछ लोगों ने उसको बर्दाश्त नहीं किया और चोरीचोरी थाने को फूंक दिया। महात्मा गांधी ने समूचा आन्दोलन बन्द कर दिया और उसके प्रायश्चित के लिए उन्होंने अनसन किया। आज हमारे अकाली नेता कहते हैं कि वह अहिंसा में विश्वास करते हैं, और रोज हिंसायें हो रही हैं। कौन ऐसा नेता है जिसने अनशन करके आत्मशुद्धि की और लोगों को कहे कि हिंसा मत करो ?

श्री मनीराम बागड़ी : 5, 10 कांग्रेस वाले वहां अमृतसर जाओ और अनशन करो, पता लग जाएगा।

श्री राम नगीना मिश्र : अभी अभी जो 25 तारीख को डी० आई० जी० श्री अटवाल की हत्या हुई, इसके पहले भी बहुत सी हत्यायें हुई हैं, और दोनों पक्ष जानते हैं कि देश के टुकड़े करने के लिए जो तथाकथित नेता हैं उसका दफ्तर कई सालों से स्वर्ण मंदिर में चल रहा है। और जिस मन्दिर में वह दफ्तर चल रहा है जिससे देश के टुकड़े होने वाले हैं·····

श्री मनीराम बागड़ी : आप जाओगे मन्दिर में, अनशन करोगे कि नहीं ?

श्री राम नगीना मिश्र : मान्यवर, यह बात सही है, विरोधी दल ने कहा, क्यों नहीं नाम पेश किया जाता है। क्या आपने पढ़ा नहीं कि 25 तारीख को जो हत्या हुई वह मन्दिर के पास हुई और मन्दिर की तरफ से आकर के ही गोली चलायी, और सारे अपराधी उसी मन्दिर में पनाह लेते हैं। इतना ही नहीं, यह ऐलान किया गया है कि एक लाख स्वयं सेवक भर्ती किये जा रहे हैं, विदेशों में भी स्वयं सेवक भेजे जा रहे हैं·····

सभापति महोदय : आप कनक्लूड कीजिए।

श्री राम नगीना मिश्र : मैं भी बाहर से आया हूं इस पर बोलने के लिए। थोड़ा समय दीजिए। मान्यवर, जहां 1 लाख ऐसे स्वयं सेवक भर्ती हो रहे हैं जो देश की अखंडता के लिए नहीं बल्कि खंडन करने के लिए और उनको पनाह स्वर्ण मन्दिर दे रहा है, तो क्या दूसरे धर्म वालों के मन में यह भाव जागृत नहीं होगा···

अगर एक लाख स्वयं सेवक मंदिरों में भर्ती करके रखे जायें तो वहां गिरफ्तारी कर लेंगे और स्वर्ण मंदिर में कदम नहीं रखेंगे, यह वातावरण चल नहीं सकता है। सबके लिए समान व्यवस्था होनी चाहिए। यहां धर्म-निरपेक्ष राज्य है, सब को समान अधिकार हैं। क्या कारण है कि किसी को विशेष सुविधा दी जाये ? क्या घर जलाने के लिए दी जाये ?

सिखों में बहुत कम लोग ऐसे हैं जो देश को खंडित करवाना चाहते हैं और सिख जाति को

बदनाम करना चाहते हैं। आज लाला लाजपत राय जी और शहीद भगत सिंह की आत्माएं इन लोगों के कारनामे देखकर रोती होंगी। आज बहुमत चाहता है कि देश की बहबूदी के लिए हम क्या करें। आज सिख समुदाय के लोग ऊंचे से ऊंचे ओहदे लेकर देश के सब भागों में बैठे हुए हैं सारा सिख समुदाय सब जगह फैला हुआ है।

मैं तो यह समझता था कि देश की बहबूदी के लिए सारा सदन आज ऐसा प्रस्ताव पास करता और सब मिलकर सर्वसम्पति से उन लोगों को वार्निंग देते कि 10, 5 दिन के अन्दर अगर स्वर्ण मंदिर में रह रहे अपराधियों को पुलिस के हवाले नहीं करते हो तो उसके बाद सख्त से सख्त कार्यवाही की जायेगी। मैं चाहता था कि सारा सदन शासन का साथ देता इस प्रस्ताव पर, लेकिन मुझे अफसोस है कि विरोधी दल का कोई भी नेता इस तरह के प्रस्ताव से शासन को ललकारना नहीं चाहता। आज भी यदि विरोधी दल में क्षमता हो तो विरोधी दल के नेताओं का यह फर्ज होता है कि वह शासन से अनुरोध करें कि ऐसे लोगों के खिलाफ सख्त कार्यवाही की जाए।

मैं शासन से अनुरोध करूंगा कि हर विरोधी दल के नेता को बुलाकर ऐसी कार्यवाही की जाए जिससे हमारे देश की एकता बनी रहे और स्वर्ण मंदिर में रहने वाले अपराधी बाहर निकाले जाएं। अगर ऐसा नहीं होगा तो इसके दूसरे गंभीर परिणाम होंगे।

एक तरफ कहा जाता है कि डी० आई० जी० के मरने से लोगों में उत्तेजना फैल रही है अगर इस तरह की घटना की पुनरावृत्ति हुई तो इसके परिणाम भयंकर होंगे।

बिन भय, होय न प्रीति।

मैं कहना चाहूंगा कि वार्निंग देने के बाद शासन को सख्त कदम इसलिए उठाना होगा कि एक आदमी दियासलाई लेकर घर जलाना चाहता हो तो उसका हाथ पकड़ना जरूरी हो जाता है। यह मसला आसान नहीं है। इसमें विदेशियों का हाथ है।

आज जो खालिस्तान बनाने का स्वप्न देखते हैं उनके पास विदेशों से रुपया और हथियार आ रहे हैं। बिना लाइसेंस के राइफल और मशीनगनें इन लोगों के पास कहां से आ रहे हैं, यह देखने की बात है?

इन शब्दों के साथ मैं विरोधी भाइयों से से अनुरोध करूंगा कि देश की एकता के लिए वह मिलकर शासन का हाथ बटायें और इस समस्या के समाधान में सहयोग करें।

SHRI A.K. ROY (Dhanbad): Mr. Chairman, Sir, we are the simple people of the East staring with all bewilderment the happenings in the West.

20 hrs.

Mr. Chairman, Sir, in our part, 'Khalistan' means empty place. I wonder, when the Sikhs have got all the places in India, why they should opt for an empty place. And I remember an old saying that half of Punjab lives on Grand Trunk Road and I do not know what will be the boundary of that newly conceived State. But my point is not that. What I am afraid of is, and what I feel is, that we are afraid to face communalism in a straight way. That is the stark fact. We are afraid to call a spade a spade. The point of discussion in the House is whether the Akali movement is a communal movement or a democratic movement.

Simply saying 'democratic demand' does not make the movement democratic. If they have got any democratic issues—question of sharing river water, question of capital, boundary question, the democratic parties are there to raise it. It is a failure of the ruling party in particular and also of all of us that such an atmosphere prevails. We democratic parties shout from the housetops that we are secular, anti-communal,

democratic and what not. We are retreating on all national fronts.

(*Interruptions*)

AN HON. MEMBER : What about the revolutionaries ?

SHRI A. K. ROY : They are not here. They must be somewhere. Of course, East is red. We are retreating from Assam to Panjab. We are creating division and communal forces are being divided like moderates, extremists, violent and non-violent. Is there any non-violent communalism? Is there any moderate communalism? Moderate communalism is coming to negotiate, extremist communalism is living in the golden temple ! We all believe like this. Nobody has got the guts to say—police has power to go into the golden temple. Everybody says, "Let the Opposition say that." Why are you afraid? I feel either there should be administrative action or there should be political action. Definitely in religious institutions, academic institution, administrative action should be discouraged. But what about the political action ? What about the social action ? Where is that action which would rouse the people against making golden temple a shelter for criminals? Is there any movement ? Is there any procession ? Is there any meeting ? Is there agitation ? Is there an attempt to rouse the consciousness among the great Sikh and other people ?

In my area there are a large number of Sikhs. Once I referred 'you Sikhs are being oppressed, you are being suppressed'. They became angry. They said, "Are we the people who could be suppressed?" I can understand that the tribals are being suppressed, discriminated against, shouting for the autonomy. But people are saying that Sikhs are being suppressed ! Is there any Indian, in any part of India who can suppress Sikhs? They take it as their defamation. We have seen in Calcutta that they are brave people.

MR. CHAIRMAN : Nobody has said about oppression and suppression of the Sikhs so far.

SHRI A.K. ROY : This is their ground that Sikhs are being discriminated. People living in Washington are saying like that.

My friend indicated something. That should have said that clearly. Who is the gainer in this game? the ruling party, Janata, B.J.P. ? Of the factions the Ruling party is the gainer.

SHRI M. SATYANARAYAN RAO : Including CPI, CPIM.

SHRI A.K. ROY : Shri Bhindranwale, who claims to be a Sant in the Golden Temple, when asked, said: "Who is your first enemy?" Communists are nowhere in the picture. They have abdicated.

We have made a very honourable retreat from all the places but still we are not spared. We are not abdicated. We have undergone a self-immolation from the Indian political scene but still we are not spared. Bhindranwale says, "Our first enemy is the Communists." Second enemy is Congress-I." So we became the first enemy. That is the point. In Assam also, AASU and other people say, when you ask them who are their first enemy, they say, not the Congress but the Communists—Left. Why? The forces of disintegration, the forces of communalism and the forces of racism are considering the Left and Communists as their first enemy and you are all rated as second enemy. Can you explain it? All the people and all the hands which you are seeing—not the hands which are used as your symbol for vote—foreign hand—where are those foreign hands living? They are in Washington. They are in London. It means what?

What I feel is that the forces of secularism are most important. The forces of secularism are becoming weaker and weaker. Sir, the people are lamenting about Balkanisation. But I would like to say that the Sermon on the Mount did not save the people from woes in the future. Sermon in the House would not be able to save India. You must analyse it. Secularism is a religion. Secularism is the ideology of socialism and communalism is the ideology of capitalism. Your policy is leading to a belated, deformed and perverted capitalism. You are going to the capitalist way of development. Naturally,

you have to face the consequences. So, Sir, it is connected to the very system.

Sir, you are very kind to me by ringing the bell. I would like to say why is there is a sudden spurt of communalism in the country? I would feel that if you would analyse very deeply, you would see that for the last 10 years, there is a sudden dilution of socialist content in our politics. That is the dilution of socialist content in our politics—whether it is from the Left or Right or Centre or whatever you may call. I am not talking of the socialist form. But there is a definite dilution of the socialist content in our politics. That is why, you are seeing this sort of situation.

Sir, now I am concluding. I read one book entitled "Decline of the West". One of the greatest tragedies and very agonising discovery of India is the decline of the Indians in India. That is the direct result.

श्री हरकेश बहादुर (गोरखपुर) : माननीय सभापति जी, सरकार के विरुद्ध जो निन्दा प्रस्ताव आया है, मैं उसका समर्थन करने के लिए खड़ा हुआ हूं। सरकार की जितनी भी निन्दा की जाए कम है। सरकार की जब हम निन्दा करते हैं, तो उसमें गृह मंत्री जी भी आते हैं और पूरी सरकार आती है। मैं व्यक्तिगत रूप से श्री सेठी जी की निन्दा नहीं करना चाहता, क्योंकि मैं उनको भलामानस मानता हूं। इसलिए मंत्री के रूप में मैं उनकी निन्दा करूंगा।

कई बार इस सदन में इस बात पर बहस हो चुकी हैं कि पंजाब जल रहा है। पंजाब की स्थिति बहुत खराब है। सरकार को इस स्थिति को नियंत्रित करने के लिए चेष्टा करनी चाहिए और प्रभावशाली कदम उठाने चाहिए। आज तक सरकार ने इतनी बार बहस होने के बावजूद क्या कदम उठाए हैं, यह पूरा देश जानता है। दिन-प्रति-दिन वहां की स्थिति खराब होती चली जा रही है और मौजूदा खराब स्थिति के लिए वर्तमान सरकार जिम्मेदार है जो इस स्थिति पर अपना नियंत्रण खो चुकी है।

लगातार यह बात होती है, कभी कहा जाता है कि पंजाब सरकार जिम्मेदार है, कभी किसी को जिम्मेदार बतलाया जाता है। वास्तविकता यह है कि केन्द्रीय सरकार और इस पार्टी के नेता जिम्मेदार हैं। आज जब वहां पर इस तरह की भीषण घटनायें हो रही हैं, हमारे शासक दल के लोग सिर्फ इस बात में लगे हुए हैं कि पंजाब में कौन सरकार रहे या न रहे। अगर आप यह मानते हैं कि पंजाब में जो मौजूदा सरकार है वह ठीक काम नहीं कर रही है तो उसे हटाने के लिए रोकता कौन है? लेकिन इस चीज को इस तरह से कितने दिनों तक लटकाया जाता रहेगा, जिससे वहां की स्थिति बिगड़ती जा रही है। असम में जो कुछ हो रहा है, पंजाब में जो कुछ हो रहा है, सारे देश में जो आग लगी हुई है, जो राष्ट्र व्यापी हिंसा फैली हुई है, उसको फैलाने की जिम्मेदार यह मौजूदा सरकार है।

1980 में, मैं टिकटों के बारे में नहीं जाना चाहता, इस प्रकार के लोगों को मौजूदा शासक दल के लोगों ने विधान सभा में लाने की कोशिश की थी जिनके ऊपर इस प्रकार के आरोप थे कि जिन को लाने से देश के अन्दर अहिंसा का वातावरण स्थापित नहीं हो सकता था। आपको स्मरण होगा—जब पंजाब के कुछ लोगों ने एक हवाई जहाज का अपहरण किया तो उस समय श्री भिण्डरानवाला ने एक वक्तव्य दिया था और कहा था अगर हवाई जहाज का अपहरण करने वाले रूलिंग पार्टी से इनाम पा सकते हैं तो हमारे लोगों ने ऐसा क्या बुरा किया है? इस प्रकार की नसीहत किसने दी है, किसने रास्ता दिखलाया है, कौन इसके लिए जिम्मेदार है? अगर शासक दल अपने दिल को टटोल कर देखे तो पता लगेगा कि देश में जो हो रहा है उसके लिये यह पूरी पार्टी जिम्मेदार है, इस सरकार के नेता जिम्मेदार हैं।

मेरे सामने नवभारत टाइम्ज अखबार है, इस में लिखा है कि यह 101वीं हत्या है। यह डी०

आई०जी जिसकी हत्या हुई है, एक निर्दोष और निरपराध व्यक्ति था, जो अपनी जिम्मेदारी निभा रहा था, लेकिन उसकी हत्या कर दी गई। यह 101वीं हत्या थी, इसके पहले भी न जाने कितनी हत्यायें हुई हैं, लाला जगत नारायण से लेकर, बाबा गुरबचन सिंह से लेकर इस डी०आई०जी० तक यदि हत्याओं की समीक्षा की जाय तो पता चलेगा कि आज पंजाब में कोई भी कानून या व्यवस्था की स्थिति नहीं रह गई है। वहाँ की स्थिति यद्यपि देश की पूरी कानून-व्यवस्था से जुड़ी हुई है, लेकिन उससे कहीं अधिक खराब हो चुकी है। चौधरी चरण सिंह जी को धमकी भरे पत्र मिले हैं, उस मामले को यहाँ पर उठाया गया। वे भारत के प्रधान मंत्री रह चुके हैं। उन्होंने आज तक कोई ऐसी बात नहीं की जिसके आधार पर उनको कोई इस तरह की धमकी दी जाय। लेकिन फिर भी इस प्रकार के पत्र आ रहे हैं। आज उनके पास आये हैं, कल प्रधान मंत्री और गृह मंत्री के पास भी आ सकते हैं, मुझे भी दिये जा सकते हैं, किसी भी माननीय सदस्य को दिये जा सकते हैं। यह वातावरण क्यों बन रहा है, इसकी क्या परिणित होने वाली है? कौन इसके लिए जिम्मेदार है? ऐसा कौन कर रहा है—इसका पता कौन लगायेगा? अगर सरकार को पता है कि कौन लोग इसके पीछे हैं तो सरकार को उनके खिलाफ कार्यवाही करनी चाहिये। यदि सरकार को पता नहीं है तो सरकार का यह निकम्मापन है, उसकी कमजोरी है, इसलिए मैं सरकार की निन्दा करना चाहता हूं।

खालिस्तान के प्रश्न को लें—कुछ लोग स्वर्ण मन्दिर में बैठकर वक्तव्य देते हैं और कहते हैं कि खालिस्तान बनेगा, युद्ध होगा, देश को तोड़ा जायगा। इस प्रकार की बातें वे खुल्लमखुल्ला कर रहे हैं लेकिन उनके विरुद्ध कोई कार्यवाही नहीं हो रही है, जबकि यह देशद्रोह का मामला है। इस तरह की चीजों को हर हालत में रोका जाना चाहिये लेकिन ऐसे लोगों के विरुद्ध सरकार कोई कार्यवाही नहीं कर पा रही है। यूनाइटेड नेशन्ज के सामने प्रदर्शन हुए हैं। हमने इस मामले को यहाँ उठाया है। अमरीका में जो तथाकथित खालिस्तान के नेता हैं—जगजीत सिंह चौहान—ये ऐसे लोग थे जिनका कोई महत्त्व नहीं था, लेकिन भारत को तोड़ने के नाम पर महत्त्व प्राप्त कर रहे हैं और इनको महत्व देने का काम मौजूदा सरकार कर रही है। आज वह अमरीका में बैठे हैं, क्या अमरीकी सरकार से भारत सरकार ने कोई विरोध प्रकट किया? क्या अमरीका सरकार का ध्यान इस ओर दिलाने प्रयास किया गया—यदि जगजीत सिंह चौहान वहाँ रहकर इस प्रकार की हरकत करेगा तो इससे अमरीका और भारत के बीच के सम्बन्ध खराब हो सकते हैं? यदि नहीं किया गया तो सरकार ऐसा क्यों नहीं कर रही है। वहाँ पर पैसा इकट्ठा किया जा रहा है। खालिस्तान बनाने के नाम पर बाहर से पैसा आ रहा है, जिससे इन तमाम लोगों की हिम्मत बढ़ती जा रही है। मुझे दुख है कि यह सरकार चुप बैठी है। मैं जानना चाहता हूं—सरकार वास्तव में चाहती क्या है? यह सबसे महत्त्वपूर्ण प्रश्न है।

लेकिन हम यह कहना चाहते हैं कि कांग्रेस का यह अन्दरूनी संघर्ष है, जिसकी वजह से आज ये सारी बातें हो रही हैं। सरकार ने भी हिंसा करने में कमी नहीं की है। मैं माननीय श्री वाजपेयी जी के साथ और अन्य सदस्यों के साथ मलरकोटला गया था और वहां जाकर हम लोगों ने देखा। इसके बाद माननीय वाजपेयी जी ने सेठी साहब से बात भी की और हम लोग चाहते थे कि वहां पर जो हिंसा हुई है, उसकी न्यायिक जांच हो क्योंकि पुलिस ने एकतरफा हिंसा की थी बिना किसी प्रोवोकशन के। वहाँ पुलिस ने गाड़ियां जलाईं दुकानें जलाईं और इस तरह की सारी हरकतें की और लोगों को गोलियों से भून डाला और पुलिस को बचाने का वहां काम हो रहा था लेकिन जब हम लोगों ने न्यायिक जांच की मांग की, तब इसको करना पड़ा। सेठी जी से बात करने के बाद ही, सरकार ने यह ठीक समझा कि इस की न्यायिक जांच होनी चाहिए। जब इस प्रकार से भड़काने वाली

कार्यवाही सरकार की तरफ से होगी, तब दूसरे इस प्रकार की हरकतें करने वाले लोगों को आप रोक नहीं पाएंगे। अब यह स्थिति वहां पर बन रही है। कम से कम सरकार को अपने अधिकारियों की तरफ ध्यान देना चाहिए कि वे इस प्रकार की भड़काने वाली कार्यवाही न करें। अगर दूसरी तरफ के लोगों द्वारा इस प्रकार की हिंसात्मक घटनाएं होती हैं जैसी कि हो रही हैं, तो सरकार को उनके खिलाफ सख्ती से कार्यवाही करनी चाहिए। यह खुशी की बात है कि अकाली दल के नेताओं ने इस प्रकार की घटनाओं की निन्दा की है लेकिन वहां पर कुछ ऐसे लोग जरूर हैं, जो इस प्रकार की चीजों को बढ़ावा दे रहे हैं।

एक अच्छी बात अखबारों में देखने को यह मिल रही है लेकिन इसकी वास्तविकता का पता सरकार को लगाना चाहिए, आज के हिन्दी अखबार 'हिन्दुस्तान' में यह खबर छपी है कि स्टेनगन से लैस श्री भिंडारावाला का हिंसा में कोई विश्वास नहीं है। वे सन्त हैं और उन्होंने यह कहा भी है, "की सबूत है कि मैं हिंसा किती हैगी ?" सबूत क्या है कि मैंने हिंसा की है।

वे स्टेनगन से लैस हैं। इसके आगे इसी अखबार में यह भी लिखा है, मैं पढ़कर सुना देना चाहता हूं।···व्यवधान···इसको आप समझिये कि आपके राज्य में क्या क्या हो रहा है। इसमें यह लिखा है :

> "लगभग आधा दर्जन स्टेनगनधारी सहायकों से घिरे श्री भिंडरावाले ने, जो स्वयं स्टेनगन लिए हुए थे, कहा कि मैं धर्म प्रचारक हूं, राजनीतिज्ञ नहीं।"

वे धर्म का प्रचार स्टेनगन से लैस होकर कर रहे हैं। वे संत होकर ऐसा कर रहे हैं। इस प्रकार की सारी स्थिति इस देश के अन्दर बन रही है और इसको बढ़ावा कौन दे रहा है ? अगर वे संत हैं और हिंसा नहीं करना चाहता, मैं उनपर कोई इल्जाम नहीं लगाना चाहता, तो यह एक अच्छी बात है लेकिन इसकी वास्तविकता का पता लगाने के लिए हमारे पास कौन सी मशीनरी है। मशीनरी तो सरकार के पास है और वह इसका पता लगा सकती है कि वे क्या रहे हैं और स्वर्ण मन्दिर में इस प्रकार का अपराध करने वाले लोग छिपे हैं, जो माननीय गृहमन्त्री जी श्री भिंडरावाला से बात कर सकते हैं। क्यों नहीं वे उनसे कहते हैं कि हमारी जानकारी है कि अपराध करने वाले लोग स्वर्ण मन्दिर में छिपे हुए हैं और आप उन्हें निकालकर बाहर कीजिए। यह बात सरकार की तरफ से क्यों नहीं की जा रही है ? मैं अच्छी प्रकार से इस बात को समझने के बाद, यह कह रहा हूं कि यह सरकार पूरी तरह से असफल हो चुकी है। देश की तमाम समस्याओं का समाधान करने के लिए और एक भयंकर स्थिति इस देश में पैदा हो गई है। इसलिए मेरी यह मांग है कि क्योंकि सरकार असफल हो चुकी है इस काम को करने के लिए, इसलिए भारत की संसद् को भंग किया जाए और फिर से चुनाव करवाए जाएं ताकि एक नई सरकार बने और वह इन समस्याओं का समाधान करे। मैं इस बात को पूरा जोर देकर कहना चाहता हूं कि इस प्रकार की सरकार की देश को जरूरत नहीं है, जो समस्याओं का समाधान न कर सके। आप संसद् को भंग कीजिए और चुनाव करवाइए।

SHRI CHITTA BASU (Barasat) : I think the entire House would agree that the harsh realities in Punjab cannot but cause great concern to everybody. As a matter of fact, Punjab is to-day burning and violence of unprecedented scale has engulfed the State.

I do not like to give any information because all the Members of this House are quite well aware of those facts. But I want to make it very clear that violence cannot be met by violence. There is no doubt that there has been some violence. There are extremist forces and they are resorting to violence. But this violence cannot be met

by bigger violence. As a matter of fact, Punjab problem is not a problem of law and order. We should be clear in our mind that it is a political problem, and the solution of this political problem should also be political. Now, the responsibility is to work out a political solution of the Punjab tangle. Naturally, the question arises how that political solution can be worked out. Negotiations and dialogues are the only way. There is no other way to bring about a political solution of the problem. Of course, it has to be admitted that there were dialogues and I would say that the solution of the major problems was in sight and, I think, the Government owes an explanation to this House why while the solution of the basic issues was in sight the actual solution was not achieved. To me it appears, Sir, it is because of a partisan policy pursued by the Government that the solution although was within the reach could not be achieved. Now, why do I say so?

I think it is known to you that the Government was playing with the idea that there are differences in approach among the different sections of Akali leaders and they wanted to take advantage of the differences existing within the Akali leadership. There is no doubt that there might have been some difference in the approach of the Akali leadership but a government who is more responsible and on whom lies the responsibility of preserving the unity and integrity of the country and bringing about a solution of a political nature takes a partisan attitude and wants to take advantage of the differences within the Akali leadership. They wanted to reap political gains out of it. My charge is that it is the Government which has politicised the issue and because of the political manoeuvre the solution although was in sight could not be achieved. Even at this late stage may I appeal to the Government to forget for the time being your partisan interest and try to bring about a political solution of the problem?

Sir, the political solution can be achieved if the Government at this stage takes initiative. I heard the Home Minister saying during the Home Ministry's debate that they want first-class representation from the Akali leadership as if the second-class representatives were attending the tripartite or bi-partite meetings. Now, they say they will resume talks if first-class representatives come here to take part in the discussions. Here lies the trouble. Now, they are trying to decide who is first-class representative and who is second-class representative as if they want representatives of their own choice. No respectable political party—what to say of Akali party—can admit this position that they will send representatives as desired by the ruling party. Therefore, Sir, will they now revise their attitude? It is the sole privilege of the Akalis to send their representatives. It is not your choice and option.

Sir, again the question of extremism comes. Although I do not hold the view expressed by Shri A.K. Roy, yet here extremism is manifested by several facets. Bhindranwale is one; Sandhu is another. About Sandhu even today's *Statesman* reports editorially that the gentleman sitting right within the Golden Temple declares his intentions to wage a war of independence of the Sikhs against India.

DR. SUBRAMANIAM SWAMY : And the Government does nothing.

SHRI CHITTA BASU : They will have to think about it seriously. About Bhindranwale, the less said the better. Who created this extremism, or extremists' section? In this connection, I would only read out an extract from an interview given by Shri Gurucharan Singh Tohra, ex-president, SGPC. He says :

> "This Government of Darbara Singh asks us to break our relations with extremists but may I ask Darbara Singh why did he arrange for the marriage with them?"

The marriage between the extremists and the Akalis has been arranged by Darbara Singh. Further :

> "The extremists are Congress (I) products.."

Now, coming from West Bengal, we know what kind of byproduct they can produce in

the form of CONGSAL : Naxalites converted into Congress (I) become CONGSAL. We are, therefore, quite well aware of this phenomenon of CONGSAL and extremists. Then further he says :

> "The extremists are Congress (I) products and everyone knows that the Congress (I) Government is using them to malign us."

Have that got any answer to that? We, the members coming from the eastern side know what CONGSAL means.

Now, I come to certain concrete suggestions. Immediately, the Government should take certain steps to take initiative to resume dialogue with the Akali leaders and stop revengeful repressive measures. That is very much necessary. They should unleash a political campaign, which they ary not capable of doing. They should strengthen the democratic forces with the object of isolating the extremists, elements from the mainstream in Punjab.

Finally, the democratic solution of the Punjab situation can be arrived at, keeping in view the democratic and just demands of the people of Punjab without any bias to religious commitments. Unless this political framework is accepted, merely by resorting to violence to meet violence would create a greater problem and would invite greater difficulties for the people and the Government.

श्री चन्द्रजीत यादव (आजमगढ़) : सभापति जी जिस घटना को लेकर यह प्रस्ताव पेश किया है, वह घटना अपने आप में निंदनीय घटना है। एक पुलिस के डी आई जी, एक 12-13 साल का बच्चा और एक दूसरे नौजवान की जान गई। यह घटना निंदनीय है। यह घटना एक बार फिर इस बात को साबित करती है कि पंजाब में हिंसा का वातावरण छाया हुआ है। मैं समझता हूं कि यह एक चिंता की बात है।

पंजाब ऐसा सूबा है जिसकी मेहनत, शक्ति और बहादुरी की चर्चा देश और विदेशों में होती है। वहां पर अगर इस तरह की घटनाएं होती हैं जो लाजमी तरीके से सारे देश को चिंता होती है।

मैं ऐसा महसूस करता हूं कि आज जो पंजाब की घटना है, इसने राष्ट्रीय गम्भीरता का रूप धारण कर लिया है। इसकी चर्चा इस सदन में ही नहीं हिन्दुस्तान के किसी कोने या गांव में जाइए, हर जगह इसी घटना की चर्चा आपको मिलेगी। मुल्क के एक छोर पर पूर्वी सीमा पर आसाम में सालों से जिस प्रकार का वातावरण था, वहां घटना हुई और फिर पश्चिमी सीमा पर पंजाब की घटनाएं घटी। ये दोनों घटनाएं इस देश के मानस को झकझोर देती है। राजनीतिज्ञ इस बात की चिंता करने लग गए हैं कि यह देश टूटेगा या साथ रहेगा ? इसको हल्के ढंग से नहीं लेना चाहिए कि हमारे देश में बड़ी परम्परायें हैं और इस प्रकार की घटनायें होती रही हैं। इसलिए, इसको हम रोक सकते हैं। इस दृष्टि से काम किया जायेगा तो वह बहुत बड़ी गलतफहमी का शिकार होगा। आज 35 साल की आजादी के बाद ऐसी समस्याएं देश के सामने आ रही हैं, जिनके बारे बारे में गंभीरता से सोचना पड़ेगा। क्यों 25 साल के बाद इस देश से या विदेश से यह आवाज उठती है कि हम यहाँ रहना नहीं चाहते। अगर विदेशी शक्तियां इस काबिल बन रही है कि वे हमारे देश के लोगों को इस्तेमाल करने की शक्ति रखती हैं, तो यह गम्भीरता की बात है। में समझता हूं हमें नए सिरे से यह सोचना पड़ेगा कि कहां प्रशासनिक, राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन करने की जरूरत है। कभी किसी एक भाग में, किसी धर्म के लोगों में, या कुछ वर्गों में में ऐसी भावना पैदा हो रही है कि हमारे साथ न्याय नहीं हो रहा है। आज ऐसी बातें परिलक्षित हो रही है। इसलिए, गंभीरता से इस बात पर सोचना चाहिए कि हम कहां भटक गए हैं ?

मैं समझता हूं, आज केवल सरकार को ही नहीं बल्कि सभी राजनीतिक पार्टियों को और देश के तमाम नेताओं को बैठकर गंभीरता से विचार

करना चाहिए कि हमारे देश की आर्थिक और सामाजिक उन्नति कैसे हो सकती ? यह सवाल हमारी राष्ट्रीय आजादी को कमजोर कम करने का सवाल है। हमारे देश में एक ऐसी असंतोष की आग भड़क रही है, उसको नहीं बुझा पाए, उसका रास्ता नहीं निकाला तो मैं समझता हूं देश के सामने एक बड़ी भारी समस्या पैदा हो सकती है।

पंजाब की समस्या के बारे में विशेष रूप से कहना चाहता हूं। इसको आज कहने का कोई अर्थ नहीं है। अकाली दल जो अपनी मांगें मांग रहा है, उसमें कोई तथ्य नहीं है। अगर तथ्य नहीं है तो सरकार ने मांगों के एक हिस्से को कैसे मान लिया ? मैंने विपक्षीय सम्मेलन में भी इस बात का विरोध किया था। गुरुवाणी का प्रचार रेडियो से करना गलत है, यह मैंने उस समय भी कहा था। दूसरे धर्म के लोग भी इस प्रकार की बातें करेंगे तो आल इन्डिया रेडियो का यही काम हो जाएगा कि दूसरे धर्मों का प्रचार करे। एक सेक्युलर स्टेट को इस प्रकार की बात नहीं माननी चाहिए थी। यह मैंने पहले भी कहा था।

मगर मैं इस बात को समझता था कि कुछ बातों में उनकी सच्चाई है, उस पर गौर करना चाहिये। उदाहरण के लिये 1970 का अवार्ड पड़ा हुआ है जो जमीन के बंटवारे का है चंडीगढ़, अबोहर, फाजिल्का किधर जायेगा। प्रधान मंत्री ने 1970 में अवार्ड दिया, 1977 तक वही प्रधान मंत्री थीं, वही सरकार थी। नहीं समस्या हल हो पायी। कहीं न कहीं फैसला लेने की जरूरत थी किसी दो दोष देने की जरूरत नहीं है। 1977 से 1980 तक जनता पार्टी की सरकार रही, जनता पार्टी ने कुछ नहीं किया, अकाली दल के लोग केन्द्र में भी शामिल थे, राज्य में भी थे सत्ता में। जनता पार्टी ने कोई हल नहीं निकाला इसलिए जनता पार्टी का सारा दोष देने से कोई फायदा नहीं है। आपने क्यों नहीं निकाला उन समस्याओं का हल ? लेकिन नहीं निकल सका उसका हल। आज फिर 3 साल हो गये इस सरकार को और अभी तक इस समस्या का हल नहीं निकला है। इन समस्याओं को टाला जाना ठीक नहीं है, जैसे एक छोटा सा फोड़ा हो और उसका इलाज न किया जाय तो एक दिन वह बड़ा रूप धारण कर लेता है, सारे शरीर के लिये खतरा बन जाता है, इसलिये आज फिर उन समस्याओं को टालने का कोई बहाना नहीं ढूंढा जाना चाहिये। उनको हल करना चाहिये।

मैं कहना चाहता हूं गृह मंत्री जी यहां बैठे हुए हैं, हमारे बहुत से सहयोगी बैठे हुए हैं जो त्रिपक्षीय बैठक में हिस्सा लिये थे। मैं ऐसा मानता हूं कि आखिरी दिन जो बैठक हुई थी उस दिन बहुत सारी समस्याओं पर हल निकल गया था, हम लोग करीब करीब समस्याओं का हल निकालने के करीब पहुंच गए थे, और केवल पानी के ऊपर, एक छोटे से सवाल के ऊपर समझौता नहीं हो पा रहा था। उसमें कुछ नहीं था, पंजाब के प्रतिनिधि मंडल का कहना था, हमारे समझाने बुझाने पर सबके, उन्होंने कहा राजस्थान का मसला हम नहीं छूएंगे, राजस्थान को पूरे का पूरा पानी जो मिलता है उस पर हम क्लेम नहीं करेंगे, उन्होंने इस बात को स्वीकार कर लिया। सबाल पंजाब और हरियाणे का रह गया। हरियाणा की सरकार 20, 22 करोड़ रु० दिये बैठी है, नहर नहीं खुदने दी गई। अकाली दल ने इस बात को स्वीकार कर लिया कि नहीं हरियाणा की नहर खुदनी चाहिए, हम उसमें पूरा सहयोग देने को तैयार हैं। केन्द्रीय सरकार और मदद करे, जल्दी से जल्दी नहर खुद जाए। हरियाणा को अभी एक मिलियन से कम पानी मिल रहा है। उसको 5 मिलियन दे दीजिए जब तक नहर नहीं बन जाती हरियाणा को एक और बूंद भी पानी नहीं मिलने वाला है। तो पहली बात यह है कि हरियाणा की नहर खुदनी चाहिए। इस पर अकाली दल ने स्वीकार कर लिया कि यह नहर खुदनी चाहिए। यह खुद में एक बहुत बड़ा सवाल था। सवाल खाली इतना आ गया कि हरियाणा का कहना था कि नहीं जो 1981 का फैसला है, जो ट्रिब्यूनल अवार्ड है पानी का वह कायम रहेगा तब तक जब

तक कि जो अब ट्रिब्यूनल बन रहा है उसका अवार्ड नहीं आ जाता। पंजाब का कहना था कि जो पानी आज हमको मिल रहा है यह हमें मिलने दिया जाय जब तक अवार्ड नहीं आ जाता है। कोई इसमें झगड़ा नहीं। हरियाणा को एक बूंद पानी नहीं मिल सकता है, चाहे आप 5 मिलियन दे दीजिए, जब तक कि नहर नहीं खुद जाती। पंजाब को पानी मिलता रहेगा जब तक पानी उसका उधर नहीं जाता। एक मामूली सी बात थी, कोई झगड़ा नहीं था। अकाली दोस्त इस पर अड़ गए, मैं समझता हूं जो गलत था। हम लोग उनको समझाने की कोशिश कर रहे थे कि आप हरियाणा को क्यों दुख देना चाहते हैं पानी आपको मिल रहा है, अब भी मिलेगा, हरियाणा के हिस्से का पानी आप ले रहे हैं क्योंकि हरियाणा के पास नहर नहीं है। अकाली प्रतिनिधि मंडल के श्री बलवन्त सिंह ने अकाली दल की तरफ़ से बयान दिया कि अगर पानी का मसला हल हो जाय तो ज़मीन का जहां तक मसला है वह कोई बड़ा सवाल नहीं है, हम उसके लिए मानने को तैयार हैं कोई रास्ता निकल जाएगा चंडीगढ़, अबोहर और फाजिल्का के सम्बन्ध में। हमने कई सुझाव दिए थे और हम आशा करते थे कि अब रास्ता निकल सकता है। सरकार की तरफ़ से इस बात पर जोर था कि पैकेज डील हो जाय, इसको खंड-खंड में नहीं करना चाहिए। यह सरकार की तरफ़ से जोर था। लेकिन जिस दिन वार्ता टूटी, सरकार ने घोषणा एक के बाद दूसरी करनी शुरू कर दी। क्यों? प्रधान मंत्री क्यों नहीं थोड़े दिन तक और प्रतीक्षा कर सकती थीं? क्यों प्रधान मंत्री ने गुरुद्वारे में जाकर उनकी धार्मिक मांगों को स्वीकार कर लिया? थोड़ा इंतजार कर सकती थीं। प्रधान मंत्री आखिर देश की नेता हैं। उससे यह शक होता है कि नहीं राजनीतिक लाभ उठाने की चेष्टा की जा रही थी हमारे साथ समझौता करके नहीं, अलग से मीटिंग करके हमको आइसोलेट करने की क्योंकि मैं जानता हूं व्यक्तिगत रूप से यह सलाह बहुत दिनों से दी गई थी कि अकाली दल सारा मजहब पर बना हुआ है, धार्मिक मांगें स्वीकार कर लीजिए, टूटकर गिर जायेगा और कोई बात नहीं होगी। इसलिए धार्मिक मांगें स्वीकार कर ली गयीं। यह राजनीति है, यह बात गलत हुई है।

मैं समझता हूं कि अकाली दल के लोग इस बात को स्वीकार करने को तैयार थे, हम सब इस बात पर तुले हुए थे। आनन्दपुर साहब की चर्चा नहीं होनी चाहिए, इसलिए कि आनन्दपुर साहब के डिफरैंट इन्टरप्रटेशन्ज़ हैं। उसमें एक बात यह भी आती है कि आप इस देश से अलग जाने की बात करते हैं, सिख नैशनलिज्म की बात करते हैं। उस पर वह राज़ी हो गये थे कि हम इसको इन्कलड नहीं करेंगे। यह एक बड़ी बात थी कि आनन्दपुर की बात उन्होंने छोड़ दी थी, राजी हो गये थे कि इससे नहीं आने देंगे। परन्तु सरकार ने ऐसा मौका देने की कोशिश की। हम सब इस राय के थे कि इस देश में मंदिर, मस्जिद, गुरुदारा, चर्च को हिंसा करने वाले अपराधियों के छिपने का शरणागार नहीं बनाया जा सकता है। मुझे पूरा विश्वास था कि अकाली दल का डैलीगेशन इस बात को मानने के लिए तैयार था, वह आखिर में वक्तव्य देता कि हम इसको गलतो समझते हैं। उन्होंने बार-बार कहा कि हम इसक, नहीं मानेंगे तो हम जो माडरेट समझे जाते हैं एक्सट्रिस्ट्स का हाथ मजबूत करेंगे और हम कह के नहीं होंगे।

मैं समझता हूं कि यह बहुत बड़ा मौका सरकार ने चूका है। आज हमारे देश की अखंडता के लिए खतरा है। जब कि हमारा दुश्मन बाहर बैठा हुआ है। आज चौधरी चरण सिंह ने इस बात को स्वीकार किया कि आज उन्होंने नाम लेकर कहा अमेरिका, इंग्लैंड और कनाडा में क्या हो रहा है। आज हम सब इस बात को जानते हैं, कौन नहीं जानता कि दुनिया की साम्राज्यवादी ताकतें हिन्दुस्तान को मजबूत देखना नहीं चाहतीं। हिन्दुस्तान की बढ़ती हुई प्रतिष्ठा उनको बर्दाश्त नहीं होती। आज हमारे देश के लोगों को पैसा देकर, रेडियो टेलीविज़न देकर, लोगों को भटका-कर, भड़काकर, साहित्य देकर इस तरह की

कोशिश हो रही है। आज इस बात का हल निकालने के लिए हमारी देशभक्ति और राष्ट्रभक्ति का तकाज़ा है कि हम उसका हल निकाल लें, न कि अपने दुश्मन को इस बात का मौका दें। मैं समझता हूं कि यह गलत हो रहा है।

इस बात पर मेरा सरकार को सुझाव है कि प्रधान मन्त्री को श्री लोंगोवाला को पत्र लिखकर बुलाना चाहिए, निमंत्रित करना चाहिये। इस बात की परवाह किये बगैर कि लोंगोवाला की बातचीत से मसला हल होता है या नहीं होता है। बहुत से मसलों पर दुनिया के दूसरे देशों से बातचीत होती रहती है, मसले हल नहीं होते हैं, लेकिन बातचीत करते जाते हैं। अपने ही देश के एक भाग में ऐसी स्थिति है तो मैं समझता हूं कि प्रधानमन्त्री को इनिशियेटिव लेकर उन्हें बुलाना चाहिए और आमने-सामने बैठकर बात करनी चाहिए।

आप एक पार्टी के प्रमुख हैं। गोल्डन टैम्पल में हम सब की श्रद्धा है, हम सबकी इज्जत है, हम आदर करते है, आपकी पार्टी यह कह रही है। लेकिन इसका कोई रास्ता निकला है या नहीं। आज आपको सारी शक्तियां इस्तेमाल करनी चाहिए। हमारे आपस में मतभेद हो सकते हैं, लेकिन आपकी देशभक्ति में हमको सन्देह नहीं है। मैं समझता हूं कि प्रधानमन्त्री को लोंगोवाला को पत्र लिखकर निमंत्रित करना चाहिए। अगर वह नहीं आते हैं प्रधानमंत्री के पत्र लिखने पर भी तो लोंगोवाला को देश समझेगा कि वह प्रधानमन्त्री के निमंत्रित करने पर भी नहीं आते हैं और देश के सामने लोंगोवाला गलत दिशा में होंगे। अकाली दल कटघरे में खड़ा होगा, प्रधानमन्त्री की मर्यादा उससे घटती नहीं है।

मैं समझता हूं कि त्रिपक्षीय सम्मेलन में जहां तक समझौते हो गये थे, सारी चीजें रिकार्ड पर हैं, उस वक्त हम उम्मीद करते थे कि कल इसका कोम्नीक होगा, कल इस पर एग्रीमेंट साइन किया जायेगा, लेकिन दुर्भाग्य से वह नहीं हो सका। उसकी फिर से बुनियाद बनाइये, वापिस जाइये कि त्रिपक्षीय सम्मेलन में जो शर्तें तय की गई हैं, उन्हें फिर से लोंगोवाला के सामने रखिये। खाली पानी की बात रह गई थी, खाली नेशनल झगड़ा था, उसमें बाकी कुछ नहीं है। उसको बेस बनाकर बात कीजिए ताकि सिचुएशन को हम नियंत्रित कर सकें।

मुझे चिन्ता होती है जब मैं देखता हूं कि आज देश में हिंसा का वातावरण बढ़ रहा है। मैं ईमानदारी से कहता हूं कि पदयात्रा को मैं प्रचार के लिए इस्तेमाल करने की बात नहीं करता, लेकिन मैं महसूस करता हूं कि अब किसी वजह से लम्बी-लम्बी स्पीचेज़ देने से कोई फायदा नहीं होगा कि पंजाब के एक ही परिवार में एक सिख और एक हिन्दू सदियों से चले आ रहे हैं। चले आ रहे थे लेकिन आज दुर्भाग्य से उनके दिल टूट गये हैं। आज हिन्दू और सिखों के बीच में ब्रीच आफ ट्रस्ट हो गया है, इसके लिए कोई भी जिम्मेदार हो, लेकिन इस बात से आंखें मूंदी नहीं जा सकती है। इसलिए उस ट्रस्ट को रेस्टोर करना होगा। मैं समझता हूं आप श्रीमान, पंजाब से आए हैं और लोकसभा के अध्यक्ष हैं, आप पर सारा सदन विश्वास रखता है, आप सेशन समाप्त होने पर सारे दलों का एक प्रतिनिधि मण्डल लेकर पंजाब के कुछ इलाकों में चलिए, वहां पर लोगों से बातचीत करिए। हिन्दुओं से, सिखों से, बुद्धिजीवियों से, नौजवानों से, किसानों से बात करिए। इस काम में आपको लीड लेनी चाहिए, यह हमारा आपका फर्ज बनता है। मैं गृह मन्त्री जी के द्वारा भारत सरकार से भी प्रार्थना करना चाहता हूं कि आज सदन में बातें सुनने के बाद तत्परता के साथ इस दिशा में कदम बढ़ाए ताकि इस चिन्ता के विषय का हल निकल सके।

THE MINISTER OF HOME AFFAIRS (SHRI P.C. SETHI) : Before coming to the main topic of the debate, I would like to clarify some of the points which the hon. Members have opened.

As far as Shri B.D. Singh is concerned,

he has only moved the Motion and has not made any substantive speech.

But with regard to Chaudhury Charan Singhji, for whom I have great respect, I would only like to clarify one point ; that the unfortunate attack on Pandit Nehru was rather unfortunate. He was the tallest of the tallest persons who was considered non-communal in this country.

AN HON. MEMBER : What attack did he carry ? (*Interruptions*)

SHRI P.C. SETHI : No ; (*Interruptions*) He said that he also participated in some meetings. By that he meant that that showed communalism.

श्री मनीराम बागड़ी : उन्होंने यह नहीं कहा था। उन्होंने कहा था कि मुस्लिम लीग जैसी जमात पर बैन लगा देना चाहिए था जोकि उन्होंने नहीं किया।

SHRI P.C. SETHI : not only that ; I woul also reiterate that the entire Nehru family including Shrimati Indira Gandhi had been considered to be nationalists and had never shown any communalism. Not only that, this is....(*Interruptions*)

SHRI SATYASADHAN CHAKRABORTY : Considered by whom ?

SHRI P.C. SETHI : By the whole nation.

SHRI SATYASADHAN CHAKRABORTY : How do you know ? How can you speak on behalf of the whole nation ?

SHRI P.C. SETHI : I can. With regard to Shri Chakraborty's..(*Interruptions*)

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : क्या चौधरी साहब के भाषण में यही बात जवाब देने लायक थी ?(**व्यवधान**)

SHRI P.C. SETHI : I have said it. (*Interruptions*)

SHRI SATYASADHAN CHAKRABORTY : She may be your leader. She is not our leader. (*Interruptions*) We do not accept her as a leader of the nation. She may be your Party leader. (*Interruptions*)

A Party leader is not a leader of the country. (*Interruption*)

SHRI P.C. SETHI : I would like to remind Mr. Chakraborty that apart from being the party leader she is the Prime Minister of the country and therefore she is known as the leader of the nation.

I would only like to clarify the opposition registered by Prof. Chakraborty that although PM was not present here physically, she had heard the entire debate and also what Prof. Chakraborty had spoken.

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE : How ?

SHRI P.C. SETHI : There is an arrangement. The hon. Member was at one time a Minister. So, he knows it.

I am thankful to other hon. Members, General R.S. Sparrow, Sarvashri Era Anbarasu, Dhanik Lal Mandal, F.H. Mohsin, Ram Jethmalani, Dhandapani, Zainul Basher, Indrajit Gupta, Ram Nagina Misra, A.K. Roy, Harikesh Bahadur, Chitta Basu and Chandrajit Yadav, for the valuable contribution and suggestions which they have made.

Hon. Members have, time and again, expressed their anguish about actions which compromise the sanctity of religious places. The Government have been receiving information that some wanted criminals including Dal Khalsa activists have taken shelter in religious places. It was with a great sense of sorrow that I had informed this House yesterday about the murder of Shri A.S. Atwal, Deputy Inspector General of Police, Jullundur on 25 April, 1983 while he was visiting Darbar Sahib Amritsar for offering prayers. In the meetings held with the leaders of Shiromani Akali Dal, a request was made to them that there should be unequivocal open condemnation of violence and under any circumstances Gurdwaras should not be made and used as a sanctuary for criminals.

In this connection, a question was also

asked in the other House as to what the Government of Punjab is going to do about the compensation to the family of the deceased. I am glad to inform the hon. House that the Punjab Government have sanctioned *ex-gratia* grant of Rs. 3 lakhs to the wife of the deceased. The widow will continue to get the amount of emoluments which late Shri Atwal would have got till his retirement from Government service. After the date of retirement, the widow will get pension which would have been admissible to Shri Atwal had he been alive. Keeping in view the educational qualification of Shrimati Atwal, she would be given a suitable job in the Government. Therefore, I am thankful to the Punjab Government, who have reacted very promptly in this matter.

SHRI CHANDRAJIT YADAV : What about the young boy• who was killed ? (*Interruptions*)

SHRI P.C. SETHI : We will take up that matter also. (*Interruptions*) I have said that we will take up the question of proper compensation to the family of the boy with the Punjab Government.

The Government of Punjab have respected the religious sentiments of the Sikh community in not permitting the Police to enter places of worship. This gesture of the Government has not been reciprocated by the SGPC authorities so far. The House will agree that restraint exercised by the Government also casts an obligation on the management that in places of worship, any activity which is prejudicial to national security, integrity and peace is neither encouraged nor connived at.

Some hon. Members have referred to various violent incidents resulting in loss of lives of many innocent persons. It is unfortunate that extremist• and other elements have been indulging in violent activities. It will, however, not be correct to say that the State Government has not taken steps to apprehend the culprits.

It is also wrong to allege that the Government and the authority there has encouraged the extremists and that we are in league with the extremists.

DR. SUBRAMANIAM SWAMY : Are you in possession of assassination list ?

SHRI P.C. SETHI : The list of those persons who have been killed is available.

DR. SUBRAMANIAM SWAMY : No, those who are going to be killed ? I am told you are in possession of that list.

SHRI P.C. SETHI : No, I am not in possession of that.

The Punjab Government has taken action against the extremist elements and the Dal Khalsa and another organisation National Council of Khalistan were declared unlawful and since then 833 persons have been arrested in 323 cases registered up to 31st March 1983. 80 persons involved in these cases have been declared as proclaimed offenders. The Police has identified many arms licencees all over the State who are supporters of the extremists. Drives to check arm smuggling and unearth unlicensed and illicit weapons have been launched. The State Government has been keeping close watch on the activities of the Dal Khalsa. 59 cases have been registered against 162 activists of National Council of Khalistan and Dal Khalsa. Balbir Singh Sandhu, the self-styled Secretary General of National Council of Khalistan who is hiding in Guru Nanak Niwas since 1981, according to our information, is involved in five criminal cases and has been declared a proclaimed offender.

The State Government has been making all possible efforts to apprehend the culprits involved in various incidents which occurred in Punjab from time to time.

There has been some criticism that we have not tried to find a solution to the problem. I may make it clear to the Hon'ble House that this is not very correct position. In fact, despite various difficulties we have all along made an honest and sincere effort in this matter. It should be appreciated that the Government, in considering any demands which concern other States and interests, has also to carry with it the other interests and the States.

To arrive at an understanding, the Govern-

ment have held, as this House is aware, a number of rounds of discussions with the Shiromani Akali Dal. Meetings were first held on three occasions with the Prime Minister and later twice with the Minister of External Affairs. After that the team of Central Ministers met the Akali Dal leadership twice at Chandigarh. Finally, several rounds of discussions were held at Delhi in the Tripartite talks. I am highly thankful and grateful to the Leaders of the Opposition for the help they rendered in narrowing down the differences during the talks.

Unfortunately, the reluctance on the part of the Akali Dal to continue discussions, when differences had been narrowed down considerably, left the Government with no other choice but to take certain decisions on its own. The Prime Minister has already made certain announcements with regard to the religious demands of the Dal.

The demand for review of Centre-State relations was not only that of Punjab but from many other States and this is taken care of by the announcement of a Commission headed by Mr. Justice R.S. Sarkaria, to go into the question of Centre-State relations. The terms of reference are under finalisation and will be announced soon. The other members of the Commission will also be announced soon.

Two demands that remain to be sorted out relate to the territorial issues and the sharing of river waters. Shri Chandrajit Yadav has said with regard to river water that we had almost come nearer the solution but there was some dispute with regard to the mention of the words 'usage' and 'allocation'. Even that could be sorted out. We are in a position to sort out that thing but we are awaiting the arrival of the Chief Minister of Haryana. As far as the territorial issues are concerned, I would like to make it clear that there were differences of opinion between the leaders of Haryana and Punjab and, therefore, an amicable solution could not be found, but we are trying to find some amicable solution to this problem also.

As I have stated before, the Government's endeavour has always been to arrive at a peaceful solution and not to do anything which may precipitate the situation. We have appealed to the Shiromani Akali Dal and SGPC that places of worship should not become sanctuaries for criminals and anti-national elements and that assassins of Deputy Inspector General of Police late Shri Atwal and persons like Balbir Singh Sandhu, a proclaimed offender, should be handed over to the administration. I fully appreciate and share the concern of hon. Members in this regard. We have avoided to take any step which may be misconstrued as an affront to the religious sentiments of the Sikh community in the sincere hope that the leadership concerned would respond to this gesture in its proper spirit.

We do not wish to escalate the tension. I am confident that our appeal to the Shiromani Akali Dal and SGPC to ensure that criminals are not given shelter in places of worship and that they are surrendered would be acted upon without any delay. But if the nation's security is in danger, I would like to assure the hon. House that Government will have to take some suitable action in this matter and react to this.

21 hrs.

Terrorism and extremist activity must be unequivocally condemned. Only the other day I had stated in the House that our doors are open for talks. I reiterate that unity and integrity of the country will be preserved at any cost.

As far as the question of invitation is concerned, we are always prepared to invite them, but one day Sant Longowal says, 'I have not received the invitation' and the other day the statement comes that 'we are not prepared to talk with the Centre'. So we are in this situation.

I trust, I echo the feeling of every section of the House when I once more fervently appeal to the Shiromani Akali Dal and SGPC leadership to give up the path of confrontation and extend their cooperation to find a solution of the problems and help in building up an atmosphere of peace and amity in the State for the good of its people which all of us so dearly cherish.

Sir, as far as this motion is concerned, the

attention of the entire country has been drawn through this". And therefore, not only the hon. Members of the Opposition, but we are also grateful to you for having admitted it and I hope, in view of the discussions which have taken place here, it would not be pressed.

SHRI SATYASADHAN CHAKRABORTY : What about inviting them ? You are not specific. All the Opposition Members demanded that you should invite the Akali leaders.

SHRI P.C. SETHI : I replied to this.

SHRI SATYASADHAN CHAKRABORTY : So, you are sending invitation letters to Akali leaders ?

SHRI P.C. SETHI : I have not said so. I have said, there are conflicting statements from them.

SHRI SATYASADHAN CHAKRABORTY : You are avoiding it.

श्री वी० डी० सिंह (फूलपुर) : अध्यक्ष जी, पंजाब की समस्या को ले करके देश के सारे लोगों में बड़ी ही चिन्ता व्याप्त थी और इस संदर्भ में आपने जो यह मोशन मूव करने की इजाजत दी, इसके लिये मैं आपको धन्यवाद देता हूं और आप बधाई के पात्र हैं।

बहुत से माननीय सदस्यों ने जो इस बहस में भाग लेकर अपने विचारों से इस सामान्य सदन को और इस सदन के माध्यम से देश के लोगों को अपने विचारों से लाभान्वित किया है, उन्हें भी मैं धन्यवाद देना चाहूंगा।

मैं ऐसा समझता हूं कि अकाली लोग जो हैं, वे सिख समुदाय के प्रतिनिधि नहीं हैं और जिस तरह की मांग ये लोग करते हैं, वे बहुत संकीर्ण विचारों से प्रेरित होकर करते हैं। जहां तक सिख पंथ का सम्बन्ध है, वे बहुत ही उदार रहा है और मानववादी रहा है और ये सिख पूरे हिन्दुस्तान के हैं और पूरा हिन्दुस्तान सिखों का है। जहां तक मुझे याद पड़ता है, इसमें करीब एक-तिहाई लोग पंजाब के बाहर दूसरे प्रान्तों में रह रहे हैं और गुरु गोविन्द सिंह के पंच-प्यारे भी देश के विभिन्न प्रान्तों से थे। कोई उड़ीसा से था, कोई महाराष्ट्र से, कोई गुजरात से, कोई यू० पी० से और कोई पंजाब से। इस प्रकार से पूरे देश की एकता की बात और अखण्डता की बात, सिख पंथ में है। इसलिए अकाली लोग इस तरह की अलगाववादी और उग्रवादी ताकतों के साथ चलकर अगर यह समझते हैं कि हम सिख धर्म का गौरव बढ़ा रहे हैं, तो मैं ऐसा समझता हूं कि वे सिख धर्म का गौरव बढ़ा नहीं रहे हैं बल्कि उसके गौरव को घटा रहे हैं।

मान्यवर, कुछ बातें ऐसी होती हैं जिनकी एक प्रकार से जिम्मेदारी सरकार की होती है। जब कोई सरकार के द्वारा अच्छी बात की जाती है, जैसे कि 'नाम' की बात हुई, तो उस 'नाम' सम्मेलन की सफलता के लिए वाहवाही ली गई, यहां पर प्रस्ताव लाया गया। लेकिन जब कहीं पर असफलता होगी तो उसकी भी जिम्मेदारी सरकार को लेनी चाहिए। अमृतसर में, स्वर्ण मन्दिर के आसपास और देश के अन्य किसी भी भाग में सुरक्षा की जिम्मेदारी सरकार की है।

जिस प्रकार की घटना 25 अप्रैल को हुई। श्री अवतार सिंह अठवाल गुरु का प्रसाद लेकर के वहां स्वर्ण मन्दिर से आ रहे थे और वहां उनकी हत्या की गई। एक 11 साल का छोटा बालक भी, वह संभवतः पांचवीं क्लास में मेरिट लिस्ट में आया था, उसकी मां ने यह मन्नत की थी कि अगर उसका बच्चा अच्छे नम्बरों से पास होगा तो वह गुरुद्वारे में जा करके दर्शन करेगी और प्रसाद लेगी, जब वह अपनी मां के साथ आ रहा था तो उसकी भी हत्या की गई। यह कितना हृदय विदारक घटना हुई है। अभी माननीय गृह मन्त्री जी ने यह कहा कि श्री अठवाल के परिवार के लिए कुछ धनराशि की व्यवस्था की गई है। मैं इस बात को मानता हूं कि मनुष्य के जीवन की किसी भी धनराशि से तुलना नहीं की जा सकती है, लेकिन फिर भी यह सरकार का कर्त्तव्य होना चाहिए कि

वह परिवार को चलाने के लिए कुछ न कुछ व्यवस्था करे। लेकिन मुझे इस बात से तकलीफ हुई कि जो 11 साल का छोटा बालक मारा गया, उसके लिए सरकार की तरफ से कोई बात नहीं कही गई।

अध्यक्ष महोदय : वह पंजाब सरकार के द्वारा होगी।

श्री बी० डी० सिंह : पंजाब सरकार के द्वारा करनी चाहिए। (**व्यवधान**)

श्री मनीराम बागड़ी : यह गलती है। क्यों बहस में जा रहे हो? (**व्यवधान**)

श्री बी० डी० सिंह : अध्यक्ष जी, मेरे दिमाग में एक ऐसी बात उत्पन्न हो रही है कि उग्रवादी और अतिवादी लोग गुरु नानक निवास में रह रहे हैं। आप लोग अकालियों से बात कर रहे हैं। मैं ऐसा समझता हूं कि वे अतिवादी लोग अकालियों के कहने में नहीं रहे हैं। पिछले 16 या 19 अप्रैल को कालिंग अटैंशन के सिलसिले में जब डिस्कशन चल रहा था तो मन्त्री जी ने बताया था···

PROF. N.G. RANGA : It is not so. They have not till now disassociated themselves from those people and their activity. How difficult it is !

श्री बी० डी० सिंह : संधु के विषय में यह बात है कि वह गुरु नानक निवास में रह रहा है। पंजाब की सरकार इस बात को मानती है। लेकिन लोंगोवाल से जब आपने बात की तो आपका अब बयान यह है कि लोंगोवाल यह कह कहते हैं कि वहाँ पर संधु नहीं रह रहा है। एसोसियेटिड प्रेस को जब उसने इन्टरव्यू दिया तो इस बात को कहा। पाँच मिनट बाद ही लोंगोवाल ने इस बात को नहीं माना। इसके मायने यह हैं कि वे सब आसपास रह रहे हैं और इस बात को छिपा रहे हैं। जब इतना बड़ा अपराधी वहाँ पर रह रहा है और सरकार इस बात को जानती है तो माननीय गृहमंत्री जी को कुछ बात का संकेत देना चाहिए था कि आप इस प्रकार से कब तक उनको छूट देते रहेंगे ?

SHRI P.C. SETHI : I may clarify that I have never had a talk....

(*Interruptions*)

श्री बी० डी० सिंह : लोंगोवाल इस बात को स्वीकार नहीं करते हैं कि वहां पर संधु रह रहा है (**व्यवधान**) इस बात को अब कह रहे हैं।

मान्यवर, वहां पर पुलिस के एक बड़े अधिकारी की हत्या हुई। इससे पुलिस का मनोबल किस प्रकार से गिरेगा, इसके लिए सरकार को कुछ न कुछ प्रयास करना चाहिए। जब हम अधिकारियों की या किसी और की रक्षा करने में असफल रहते हैं तो ऐसा होता है। सरकार को इस बात का उत्तरदायित्व लेना चाहिए कि जब कोई मन्दिर से अधिकारी या कोई और लोग निकलें तो उनकी हो। इसीलिए मैं यह प्रस्ताव रखना चाहता हूं और और माननीय सदस्यों से अनुरोध करता हूं कि वे इस प्रस्ताव को पारित करें।

MR. SPEAKER. The question is :

"That the House do now adjourn".

The motion was negatived.